संस्कृत-मञ्जूषा

सुबोधिनी

(भाग-3)

लेखिका
फूलकांता चावला

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०
नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

प्रकाशक :

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०

दूसरी मंजिल, एम०जी०एम० टॉवर, 19 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 (इंडिया)

दूरभाष : +91-11-43556600

फैक्स : +91-11-43556688

ई-मेल : delhi@saraswatihouse.com

वेबसाइट : www.saraswatihouse.com

सी०आई०एन० : U22110DL2013PTC262320

आयात-निर्यात लाइसेंस नं० 0513086293

शाखाएँ :

• **अहमदाबाद** ✆ (079) 22160722 • **बंगलूरू** ✆ (080) 26619880, 26676396 • **चेन्नई** ✆ (044) 28416531 • **देहरादून** ✆ 09837452852 • **गुवाहाटी** ✆ (0361) 2457198 • **हैदराबाद** ✆ (040) 42615566 • **जयपुर** ✆ (0141) 4006022 • **जालंधर** ✆ (0181) 4642600, 4643600 • **कोचि** ✆ (0484) 4033369 • **कोलकाता** ✆ (033) 40042314 • **लखनऊ** ✆ (0522) 4062517 • **मुंबई** ✆ (022) 28737050, 28737090 • **पटना** ✆ (0612) 2570403 • **रांची** ✆ (0651) 2244654

मुद्रक : विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि०, साहिबाबाद (उत्तर प्रदेश)

प्राक्कथन

'संस्कृत-मञ्जूषा' 'सुबोधिनी' के संशोधित प्रकाशन पर सबको विशेष रूप से **न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्रा०लि०** को हार्दिक बधाई देते हुए, छात्रों से दो शब्द कहना चाहूँगी। सर्वप्रथम यह है कि 'सुबोधिनी' को एक 'गाइड बुक' की भाँति न समझें, अपितु अच्छी प्रकार समझाने वाली एक सहायक-पुस्तिका के रूप में देखें।

यहाँ यह प्रश्न भी आता है कि पाठ्यपुस्तक में सविस्तार शब्दार्थ देने के उपरान्त प्रत्येक पाठ का हिन्दी अनुवाद देने की आवश्यकता क्यों हुई ? वास्तविकता यह है कि वाक्य का प्रत्येक शब्द शेष वाक्य के सन्दर्भ में कैसे समझा जाना चाहिए—यह बात सम्पूर्ण वाक्य के अनुवाद द्वारा ही स्पष्ट की जा सकती है, अन्यथा नहीं। किन्तु छात्रों से अनुरोध है कि वे मात्र अनुवाद पर निर्भर न हों। स्मरण रहे-सम्यक् बोध के लिए मूल पाठ का वाचन महत्त्वपूर्ण है।

पाठ के अन्त में आए अभ्यास-प्रश्नों का पूरा लाभ उठाने के लिए, छात्र स्वयं पाठ में उत्तर ढूँढ़ें। तत्पश्चात् ही 'सुबोधिनी' में देखें। इस सन्दर्भ में वाक्य-प्रयोग के विषय में दी गई व्याकरण-सम्बन्धी जानकारी को ध्यान से पढ़ें। कोई कठिनाई आए तो वाक्य-प्रयोग दोहराएँ। धीरे-धीरे नियम स्पष्ट होते दिखाई देंगे।

संस्कृत-शिक्षण में शब्द रूप तथा धातु रूप को प्रमुख स्थान दिया जाता है, किन्तु मात्र कण्ठस्थ कर लेना पर्याप्त नहीं, प्रयोग समझना आवश्यक है। जब तक रूप कण्ठस्थ हों, तब तक छात्र पुस्तक में दी गई तालिका से सहायता लें, ठीक उसी प्रकार जैसे वर्तनी अथवा शब्दार्थ जानने के लिए शब्द-कोष का प्रयोग किया जाता है। धीरे-धीरे शुद्ध-प्रयोग में अभ्यस्त हो जाएँगे।

पाठ्यपुस्तक 'संस्कृत-मञ्जूषा' में अधिकांश ऐसे शब्दों का प्रयोग करने का प्रयास किया गया है, जो आज प्राय: हिन्दी तथा देश की प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत-शिक्षण को सहज और सरस बनाने के लिए अपनी मातृभाषा की ऐसी शब्दावली का पूरा लाभ उठाएँ।

मंगलकामनाओं सहित।

—लेखिका

विषय-सूची

1 सुगमम् संस्कृतम् (संवादः)

हिंदी अनुवाद (सुगम-संस्कृत)

प्रीति – अरी सुनीता, क्या बात है उदास हो?

सुनीता – क्या करूँ! संस्कृत परीक्षा में मेरे अंक अच्छे नहीं आए।

प्रीति – दुखी मत होओ। परिश्रम करने से और वक्त के साथ सब ठीक हो जाता है।

सुनीता – सखी, तुम्हें सच बताऊँ–मुझे तो संस्कृत अच्छी ही नहीं लगती। क्या, यह कठिन भाषा तुम्हें अच्छी लगती है?

प्रीति – सुनीता, वास्तव में संस्कृत सरल है, कठिन बिल्कुल नहीं।

सुनीता – वह कैसे?

प्रीति – अभ्यास करने से ही निपुणता आती है। शुरू में जो कठिन लगता है, समय के साथ, वह सरल हो जाता है।

सुनीता – पर धातु रूप, शब्द रूप–यह सब कैसे याद होगा?

प्रीति – सुनीता, शब्दरूपों तथा धातुरूपों का प्रयोग समझ लेना चाहिए। क्या तुम घर जाकर पाठ का वाचन नियम से करती हो?

सुनीता – कैसे करूँ? अध्यापिका जी जो कक्षा में पढ़ाती हैं, मैं वह ही नहीं समझ पाती।

प्रीति – चिन्ता मत करो। ध्यानपूर्वक सुनने और बार-बार (पाठ का) वाचन करने (पढ़ने) से सब समझ में आ जाएगा।

सुनीता – शायद तुम ठीक कह रही हो। कक्षा में दत्तचित्त (मन लगाकर) बैठकर और पाठ को दोहरा कर मुझे भाषा का प्रयोग समझ लेना चाहिए।

प्रीति – चिन्ता मत करो। मैं भी तुम्हारी मदद करूँगी।

सुनीता – इस प्रकार संस्कृत की परीक्षा में मेरे भी अच्छे नम्बर हो जाएँगे।

प्रीति – बिल्कुल! सखी, यह समझ/जान लो कि संस्कृत एक भाषा है। सुनने, बोलने और वाचन करने से ही लेखन शुद्ध होता है।

सुनीता – अब मैंने समझा/ जाना (मुझे समझ आया) कि–संस्कृत कैसे पढ़नी चाहिए। आज से मैं कक्षा में सावधान होकर रहूँगी।

उत्तराणि

मौखिकम्

उच्चारण करें। प्रस्तुत अभ्यास में सर्वनाम 'अस्मद्' 'युष्मद्' के रूप एकवचन तथा बहुवचन में दिए गए हैं। उच्चारण करते समय शब्द रूप तुलनात्मक दृष्टिकोण से देखें; यथा–माम्–अस्मान् (अस्मद्–द्वितीया विभक्ति) त्वाम्–युष्मान् (युष्मद्–द्वितीया विभक्ति) प्रत्येक विभक्ति रूप का दो बार उच्चारण करें।

लिखितम्

1. यह अभ्यास पूर्णतः पाठाधारित है। कोष्ठक में तीन विकल्प दिए हैं। पाठ की कथावस्तु के आधार पर उचित विकल्प चुनकर एक पद में उत्तर देना है। उदाहरण देखें व समझें। 'कस्याः' (किसके) के उत्तर में 'सुनीतायाः' (सुनीता के) उचित विकल्प।
प्रत्येक प्रश्न का ध्यानपूर्वक वाचन करें। उचित विकल्प चुनकर उत्तर दें।*

उत्तर– क. संस्कृतपरीक्षायाम् ख. सुनीतायै ग. अभ्यासेन
घ. पाठस्य ङ. सख्याः (मूल शब्द सखी)
च. प्रीतिः छ. प्रयोगः।

निर्देश– ***(i)*** सम्पूर्ण वाक्य के रूप में प्रत्येक उत्तर का मौखिक-अभ्यास करें; यथा–परीक्षायां सुनीतायाः अङ्काः न शोभनाः।

(ii) शब्द रूप व प्रयोग की ओर ध्यान दें; यथा–प्रीतेः, सुनीतायाः, कस्याः–तीनों पद षष्ठी एकवचन; प्रीत्यै, सुनीतायै, कस्यै–तीनों चतुर्थी एकवचन। संस्कृतस्य, पाठस्य, कस्य–तीनों पद षष्ठी एकवचन (पुल्लिग)।*

2. प्रश्न ध्यान से पढ़ें, आशय समझें। सही उत्तर के लिए पाठ में देखें।

उत्तर– क. सुनीता खिन्ना यतः संस्कृतपरीक्षायां तस्याः अङ्काः न अति शोभनाः।

अथवा

संस्कृतपरीक्षायां सुनीतायाः अङ्काः न अति शोभनाः, अतः सा खिन्ना।

---

* कोष्ठक में दिए विकल्पों का ध्यानपूर्वक वाचन भाषा-बोध (शब्द-रूप) की दृष्टि से भी लाभप्रद होगा।
* अकारान्त आकारान्त इकारान्त (स्त्रीलिंग) शब्दरूप तथा किम् के तीनों लिंगों में शब्दरूप की आवृत्ति लाभप्रद होगी। शब्दरूप में समानताओं की ओर ध्यान देने से भाषा शिक्षण सरल और सुगम होगा।

ख. परिश्रमेण कालेन च सर्वं कार्यं सिध्यति।

ग. सावधानं श्रवणेन पुनः पुनः च वाचनेन सर्वं बोधं गमिष्यति।

घ. श्रवणेन, भाषणेन, वाचनेन चैव भाषायाः लेखनं शुद्धं भवति।

3. विशेष्य-पद का विशेषण-पद से मिलान करते समय उच्चारण करें। शब्द की अंतिम ध्वनि/अक्षर की ओर ध्यान दें–एकसमान हैं; यथा–'भाषा – कठिना' में अन्त में 'आ' आया है। इसी प्रकार शेष पदों में देखें।

उत्तर– ख. लेखनम् – शुद्धम्, ग. संस्कृतम् – सुगमम्,
घ. अङ्काः – शोभनाः, ङ. सुनीता – खिन्ना।

4. मञ्जूषा में दिए गए शब्दों का वाचन करें। अर्थ समझें। ये सभी पद पाठ में आ चुके हैं। रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद का वाचन करें। प्रत्येक वाक्य का आशय समझकर, मञ्जूषा से उचित पद लेकर रिक्त स्थान भरें। (अनुच्छेद पाठ की कथावस्तु पर आधारित है। कठिनाई होने पर प्रत्येक वाक्य का वाचन दो बार करें।)

उत्तर– **संस्कृत-परीक्षायाम्** (संस्कृत की परीक्षा में)–वाक्य में 'अङ्काः' का उल्लेख होने के कारण उचित प्रयोग।

सखीम् (सखी को)–'वदति' (कहती है) का कर्म (द्वितीया विभक्ति में)

विषादेन–'अलं' के योग में उचित प्रयोग।

पाठस्य (पाठ की)–'वाचनम्' (वाचन, reading) से सम्बन्ध।

अभ्यासेन (अभ्यास द्वारा)–वाक्य में 'कौशलम्' का उल्लेख होने के कारण उचित।

सरलम्–'संस्कृतम्' का विशेषण-पद (और पूरक, complement), इस संदर्भ में उपयुक्त।

5. पहले सर्वनाम तत् (स्त्रीलिंग) के शब्द रूप की आवृत्ति कर लें। मञ्जूषा में दिए गए सर्वनाम शब्दों को देखें–तत् (स्त्रीलिंग) के रूप हैं।

रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद का वाचन करें। देखें–'सुनीता' के लिए 'सा' का प्रयोग आया है। इसी प्रकार संज्ञापद के स्थान पर उचित सर्वनाम (स्त्रीलिंग) चुनें।*

---

* पूर्व-कक्षा में सीखे गए आकारान्त व ईकारान्त संज्ञा शब्दों की पुनरावृत्ति हितकर होगी।

उत्तर– **तस्याः** (उसके)–सुनीतायाः के लिए–(दोनों पद स्त्रीलिंग, षष्ठी, एकवचन)

तस्याः (उसके) '**सख्याः**' (सखी के) के लिए–(दोनों स्त्रीलिंग षष्ठी, एकवचन)

ताम् (उसे)–'**सखीम्**' (सखी को) के लिए–(दोनों स्त्रीलिंग, द्वितीया, एकवचन में)

तस्यै (उसे/उसके लिए)–'**सख्यै**' (सखी को/के लिए) के स्थान पर; (दा धातु के योग में–दोनों में चतुर्थी)

तया–'सख्या' के स्थान पर–(दोनों में तृतीया (एकवचन) सह के योग में)

वाक्यों का वाचन करते समय प्रयोग (विभक्ति) पर ध्यान दें।

6. **अस्मद्-युष्मद् के शब्द रूप का उच्चारण करें। एकवचन के पदों पर विशेष ध्यान दें।**

मञ्जूषा में दिए शब्दों को देखें। खण्ड (क) में 'अस्मद्' तथा खण्ड (ख) में युष्मद् के एकवचन रूप दिए गए हैं। उन्हें पढ़ें। वाक्यों को पढ़ें, आशय समझकर उचित पद चुनें।

उत्तर– **I.** **क.** **अहम्** (मैं)–'पठामि' का कर्त्ता होने के कारण।

ख. **माम्** (मुझे)–'अवदत्' का 'कर्म' होने के कारण।

ग. **मम** (मेरे)–'अङ्काः' के साथ सम्बन्ध होने के कारण।

घ. **मया**–'सह' के योग में तृतीयान्त पद।

ङ. **मयि** (मुझ पर)–'विश्वसिति' के योग में विश्वासपात्र में सप्तमी, अतः 'मयि'।

च. **मह्यम्** (मेरे लिए)–दा धातु (अयच्छत्) के योग में सम्प्रदान में चतुर्थी प्रयोग, अतः मह्यम्।

II. **क.** **त्वम्** (तुम)–'पठसि' का कर्त्ता होने के कारण।

ख. **त्वाम्** (तुम्हें)–'अवदत्' क्रियापद का कर्म, अतः द्वितीया विभक्ति पद का प्रयोग।

ग. **तव** (तुम्हारे)–'अङ्काः' शब्द से सम्बन्ध, अतः षष्ठी विभक्ति का पद।

घ. **त्वया**–'सह' के योग में तृतीयान्त पद।

ङ. **त्वयि** (तुम पर)–'विश्वसिति' के साथ सप्तमी विभक्ति का पद।

च. **तुभ्यम्** (तुम्हें/तुम्हारे लिए)–'अयच्छत्' (दा धातु) के साथ चतुर्थी विभक्ति का पद (सम्प्रदान होने के कारण)।

7. **उदाहरण देखें–किम् इति**–किमिति (म् + इ = मि)।

उत्तर– ख. ममापि – मम अपि (अ + अ = आ)

ग. चैव – च एव (अ + ए = ऐ)

घ. सर्वमेतत् – सर्वम् एतत् (म् + ए = मे)

ङ. अहमपि – अहम् अपि (म् + अ = म)

नोट– कोष्ठक में विश्लेषण छात्रों की सुविधा हेतु दिए गए हैं ये अपेक्षित उत्तर का अंश नहीं हैं।

8. **उदाहरण देखें और समझें।** वाक्य में रुच् (रोचते) धातु का प्रयोग आया है। 'रुच्' के योग में, जिसको अच्छा/रोचक लगता है उसमें चतुर्थी विभक्ति के प्रयोग का नियम है। अतः प्रस्तुत उदाहरण में 'सर्वेभ्यः'* (चतुर्थी, बहुवचन) उचित प्रयोग है। (सर्वान्=सब को) –द्वितीया, बहुवचन; सर्वेषाम् (सब का)–षष्ठी बहुवचन–अतः ये दोनों उचित नहीं)।

इसी प्रकार प्रत्येक वाक्य को कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर पूरा कीजिए।

उत्तर– क. **कस्मै** (चतुर्थी, एकवचन)–'रोचते' के योग में उचित। (कम्–किस को) (कर्मकारक–द्वितीया विभक्ति), कः = कौन–दोनों में से कोई भी उचित नहीं)।

ख. **तुभ्यम्**–रुच् धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति वाला पद उपयुक्त। (त्वम्–तुम; त्वाम्–तुम्हें–दोनों इस संदर्भ में उचित नहीं।)

ग. **बालेभ्यः**–वाक्य में रुच् धातु का प्रयोग, अतः चतुर्थी विभक्ति पद उचित (बालाः = बालक; बालान् (द्वितीया विभक्ति)–बालकों को (कर्म कारक)।

---

* हिन्दी में सम्पूर्ण वाक्य का आशय–'आजकल **सब को** क्रिकेट का खेल अच्छा लगता है'–यहाँ 'को' परसर्ग से भ्रमित न हों। 'को' लग जाने मात्र से यह कर्मपद नहीं बन जाता। वाक्य में आई 'रुच्' धातु की ओर ध्यान दें। नियम याद रखें। उदाहरणार्थ दिए गए वाक्य का वाचन दो बार कर लेने से नियम स्वतः ही याद रह जाएगा।

घ. **रोचते (अच्छा लगता है)**– 'आम्रम्' वाक्य का कर्त्ता एकवचन में, अतः क्रियापद 'रोचते'–एकवचन उचित। (रोचेते–द्विवचन, रोचन्ते–बहुवचन)

ङ. **रोचन्ते (अच्छे लगते हैं)**–'मोदकाः'–वाक्य का कर्त्ता–बहुवचन, अतः क्रियापद 'रोचन्ते' (बहुवचन) उपयुक्त।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. पाठस्य नियमपूर्वकं वाचनेन पुनर्वाचनेन च अध्ययनं कर्त्तव्यम्। अथवा पाठस्य वाचनं पुनर्वाचनं च नियमेन कृत्वा अध्ययनं कर्त्तव्यम्।
2. कक्षायां समाहितचित्तं/सावधानं तिष्ठेत्।
3. आम्, पठन कार्ये सख्याः/मित्रस्य सहायता कर्त्तव्या।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. **प्रश्न संख्या (6) के दोनों खण्डों के वाक्यों का वाचन साथ-साथ इस प्रकार करें–**

   क. अहम् संस्कृतम् पठामि। त्वम् संस्कृतम् पठसि।

   ख. अध्यापिका माम् अवदत्। अध्यापिका त्वां किम् अवदत्?

   ग. परीक्षायां मम अङ्काः शोभनाः। किं परीक्षायां तव अङ्काः शोभनाः? इत्यादि।

   प्रश्न संख्या (8) के वाक्यों का वाचन करते समय रिक्त स्थान पूर्ति वाले पदों पर विशेष ध्यान दें। स्मरण रहे 'रुच्' धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

2. **अस्मद्/युष्मद् के बहुवचन रूपों के प्रयोग का अभ्यास करें। यथा–**

   क. वयम् संस्कृतम् पठामः। यूयम संस्कृतं पठथ।

   ख. अध्यापिका अस्मान् अवदत्। अध्यापिका युष्मान् किम् अवदत्?

   ग. परीक्षायाम् अस्माकम् अङ्काः शोभनाः। किं परीक्षायां युष्माकम् अङ्काः शोभनाः? इत्यादि।

3. **छात्र स्वयं अभ्यास करें। कक्षा में प्रत्येक छात्र एक-एक विभक्ति रूप का यदि उच्चारण करे, तो सभी लाभान्वित होंगे।**

2 वृक्षाणाम् उपादेयता

हिंदी अनुवाद (वृक्षों के लाभ)

हरे पेड़, फूलों से भरे पेड़, फलदार पेड़, छाया देने वाले पेड़—सब प्रकार के पेड़ हमारा उपकार करते हैं। वृक्षों की हरियाली नेत्रों को सुख पहुँचाती है, उनकी छाया गर्मी दूर करती है, फूल वातावरण को सुगन्ध से भर देते हैं और फल भूख मिटाते हैं।

क्या-क्या नहीं करते वृक्ष—

वृक्ष औरों के लिए छाया करते हैं, किन्तु स्वयं धूप में खड़े रहते हैं। उनके फल भी दूसरों के लिए (परार्थाय) होते हैं। वृक्ष सत्पुरुषों की भाँति होते हैं।

भाव—जिस प्रकार सज्जन स्वार्थ के लिए नहीं, जनहित के लिए जीवन अर्पण करते हैं उसी प्रकार वृक्ष भी दूसरों का उपकार करते हैं। वे स्वयं कष्ट सहकर भी परोपकार के कार्य में लीन रहते हैं।

यदि वृक्ष न हों, तो प्राणियों/जीवधारियों के लिए फल कहाँ से आएँगे, थके-माँदों को छाया कहाँ से मिलेगी, पक्षियों को आश्रय कहाँ से मिलेगा। और तो और पानी बरसाने में भी वृक्ष सहायक होते हैं। वातावरण को शुद्ध करने में वृक्षों से बहुत लाभ होता है। दूषित वायु (गन्दी हवा) से दोष कारक तत्त्व लेकर, वृक्ष हमें स्वास्थ्य कारक तत्त्व ऑक्सीजन देते हैं।

वृक्ष सब का जीवन सुखमय बनाते हैं। उनके प्रति हमारा भी कर्त्तव्य है। वृक्षों के आरोपण (लगाने) के लिए, उनके बढ़ने (संवर्धन) और रक्षा करने के लिए हमें भी निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए।

हम देखते हैं (देखने में आता है) कि आजकल वृक्षों की संख्या प्रतिदिन कम होती जा रही है। यह सचमुच बड़ी शोचनीय स्थिति (दुख की बात) है। आज हरे वृक्षों की बहुत आवश्यकता है।

जीवन तो वृक्षों पर आश्रित/निर्भर है। वृक्षों के जीवन से हमारा जीवन है, उनकी रक्षा से हमारी रक्षा—यह बात नहीं भुलानी चाहिए।

अतः जीवन की रक्षा के लिए, वृक्षों की रक्षा करनी चाहिए।

प्राणी-मात्र के हित के लिए वृक्षों की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य बनता है।

उत्तराणि

मौखिकम्

प्रत्येक प्रश्न का वाचन ध्यानपूर्वक करें। कोष्ठकदत्त विकल्पों को देखें। पाठ के आधार पर उचित विकल्प चुनकर एक पद में उत्तर दें। उदाहरण देखें व समझें। 'केषाम्' (किनके) के उत्तर में 'वृक्षाणाम्' (वृक्षों के) उचित।

क. पुष्पाणि – 'कानि' के उत्तर में– (दोनों पद नपुंसकलिंग, बहुवचन)–कर्त्ताकारक

ख. क्षुधाम् – 'काम्' के उत्तर में– (दोनों पद स्त्रीलिंग, एकवचन)–कर्मकारक

ग. जीवितम् – 'किम्' के उत्तर में– (दोनों पद नपुंसकलिंग, एकवचन)–कर्त्ताकारक

घ. वृक्षाः – 'के' के उत्तर में– (दोनों पद पुल्लिंग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति)

ङ. सुखमयम् – 'कीदृशम्' के उत्तर में– (दोनों पद नपुंसकलिंग, एकवचन, द्वितीया विभक्ति)

प्रत्येक उत्तर का सम्पूर्ण वाक्य के रूप में मौखिक-अभ्यास हितकर होगा।

लिखितम्

1. **प्रश्न ध्यान से पढ़ें। उत्तर पाठ में देखें। आवश्यकतानुसार भाषा में किंचित् परिवर्तन कर लें।**

उत्तर– क. अद्यत्वे वृक्षाणां संख्या प्रतिदिनम् अल्पतरा जायते इति शोचनीया स्थितिः।

अथवा

अद्यत्वे शोचनीया स्थितिः एषा यत् वृक्षाणां संख्या प्रतिदिनम् अल्पतरा जायते।

ख. हरिताः, पुष्पिताः, फलिनः वृक्षाः, छायावृक्षाः च अस्मान् उपकुर्वन्ति।

ग. वृक्षाणाम् आरोपणाय, तेषां संवर्धनाय संरक्षणाय च वयम् प्रयत्नं कुर्याम।

घ. जीवनं रक्षितुम् वृक्षाः रक्षितव्याः।

2. **उदाहरण देखें और समझें–**विशेषण-विशेष्य में समन्वय। 'छाया' शब्द स्त्रीलिंग, एकवचन ('लता' की भाँति); अतः 'सुखद शब्द'–विशेषण –तदनुसार 'सुखदा'–स्त्रीलिंग एकवचन में।

इसी प्रकार प्रत्येक वाक्यांश में दिए गए विशेष्य-पद (संज्ञा) के विभक्ति, वचन, लिंग आदि को पहचानते हुए, कोष्ठकदत्त विशेषण शब्द का उचित रूप रिक्त स्थान में भरें।

उत्तर– क. सुखमयम् – क्योंकि 'जीवनम्' नपुंसकलिंग, एकवचन।
ख. परमम् – क्योंकि 'कर्त्तव्यम्', नपुंसकलिंग एकवचन।
ग. हरिताः – क्योंकि 'वृक्षाः'–पुल्लिंग, बहुवचन।
घ. दोषप्रदम् – 'तत्त्वम्'–के अनुसार नपुंसकलिंग एकवचन।
ङ. हरितानाम् – 'वृक्षाणाम्' के अनुसार, षष्ठी बहुवचन का प्रयोग।

3. मञ्जूषा में दिए गए प्रश्नवाचक शब्द पढ़ें, अर्थ समझें। उचित पद चुनें। उदाहरण देखें–रंगीन पद के स्थान पर उचित प्रश्नवाचक लगाकर प्रश्न-निर्माण हुआ है, वाक्य के शेष सभी शब्द उसी प्रकार प्रयुक्त है।

उत्तर– क. अद्यत्वे **केषाम्** महती आवश्यकता?–'वृक्षाणाम्'–षष्ठी, बहुवचन पद के स्थान पर 'केषाम्'–'किम्' षष्ठी बहुवचन का प्रयोग।
ख. तरवः सर्वेषाम् जीवनं **कीदृशम्** कुर्वन्ति?–विशेषण-पद-'सुखमयम्'-नपुंसकलिंग, एकवचन होने के कारण।
ग. **किम्** वृक्षाश्रितं खलु?–जीवितम्–नपुंसकलिंग, एकवचन पद के लिए नपुंसकलिंग, एकवचन प्रश्नवाचक।
घ. वृक्षाः **केभ्यः** आश्रयं यच्छन्ति?–'पक्षिभ्यः'–चतुर्थी, बहुवचन के लिए चतुर्थी बहुवचन प्रश्नवाचक।
ङ. वृक्षाः स्वयं **कुत्र** तिष्ठन्ति?–'आतपे' (धूप में) के लिए 'कुत्र' (कहाँ)।

निर्देश– (*i*) सर्वनाम 'किम्' के शब्द रूप की आवृत्ति कर लें।
(*ii*) जिस पद के आधार पर प्रश्न-निर्माण करना हो, उस पद के लिंग, विभक्ति व वचन के अनुसार 'किम्' सर्वनाम के रूप का प्रयोग करें; जैसे **उदाहरण में**–'दृष्टिम्' के लिए 'काम्'–स्त्रीलिंग, द्वितीया, एकवचन का प्रयोग।
(*iii*) सहज-बोध के लिए अभ्यासों में आए प्रश्न वाक्यों का ध्यानपूर्वक वाचन करें।

4. वाक्य में आए प्रत्येक पद का अर्थ उसमें लगी विभक्ति के अनुसार ही होता है; जैसे–हिंदी भाषा में परसर्ग और आंग्लभाषा में Preposition। प्रस्तुत वाक्य में इसी दृष्टि से प्रत्येक पद की विभक्ति व वचन निर्दिष्ट करें।

उत्तर– क. ······· षष्ठी, बहुवचन। (वृक्षों के)

ख. ······· तृतीया, एकवचन। (जीवन से)

ग. ······· षष्ठी, बहुवचन। (हमारा)

घ. ······· प्रथमा, एकवचन। (जीवन) – यहाँ 'अस्ति' (है) साथ में समझ लें।

निर्देश–पाठ वाचन के समय विभक्ति प्रयोग पर ध्यान दें और विभक्ति के अनुसार प्रत्येक पद का अर्थ समझें।

5. उदाहरण देखें और समझें–'अस्माकम्'–उचित विकल्प। कारण–'गृह-उद्याने' से सम्बन्ध–(हमारे गृह-उद्यान में ····) अतः षष्ठी-विभक्ति अर्थात् सम्बन्ध कारक वाला पद प्रयुक्त हुआ है। (अस्मद्–मूल शब्द, 'अस्मभ्यम्' = हमारे लिए–इस संदर्भ में दोनों ही उचित नहीं)।

इसी प्रकार प्रत्येक वाक्य में कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरें। ध्यान रहे–वाक्य-प्रयोग के अनुसार विभक्ति का प्रयोग होता है।

उत्तर– क. आम्राणि (नपुंसकलिंग, बहुवचन)–विशेषण 'मधुराणि' होने के कारण उचित विकल्प। (आम्रः–अशुद्ध पद–लिंग की दृष्टि से; आम्रम्–एकवचन होने के कारण उचित नहीं, क्योंकि विशेषण-पद 'मधुराणि'–बहुवचन है)।

ख. सर्वेभ्यः–क्रियापद 'रोचन्ते', अतः चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग उचित।

ग. वृक्षाः–'उपकुर्वन्ति' क्रियापद, अतः कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति, बहुवचन प्रयोग उचित। (वृक्षः–एकवचन; वृक्षैः–(वृक्षों द्वारा) –तृतीया विभक्ति–दोनों में से कोई भी उचित नहीं।

घ. परोपकाराय–उचित विकल्प, वाक्य के प्रसंग में। 'के लिए' के अर्थ में चतुर्थी का प्रयोग होता है। (परोपकारम्–परोपकार को, परोपकारेण–परोपकार द्वारा–कोई भी विकल्प उचित नहीं)।

ङ. वातावरणस्य–'रक्षा' से सम्बन्ध, अतः षष्ठी विभक्ति पद उचित। वाक्य-पूर्ति के उपरान्त वाचन करें। विभक्ति प्रयोग पर ध्यान दें। वाचन पुनर्वाचन करने से स्वतः ही शुद्ध प्रयोग में अभ्यस्त हो जाएँगे।

6. **सर्वनाम 'एतत्' के रूप दोहरा लें।***

मञ्जूषा में 'एतत्' सर्वनाम के कुछ रूप दिए गए हैं। वाक्यों में आए संज्ञा पदों के लिंग, विभक्ति व वचन का ध्यान रखते हुए उचित सर्वनाम रूप चुनें और रिक्त स्थान भरें।

उदाहरण देखें–'आम्रवृक्षः'–पुल्लिग, एकवचन होने के कारण, 'एषः'–पुल्लिग, एकवचन रूप का प्रयोग।

उत्तर– क. एतस्मिन्–(*i*) उद्याने-(पुल्लिग), सप्तमी, एकवचन अतः सर्वनाम एतत्-(पुल्लिग) का सप्तमी, एकवचन रूप उचित।

ख. (*i*) एतानि (*ii*) एतेभ्यः।

(*i*) 'फलानि' के साथ, नपुंसकलिंग, बहुवचन का प्रयोग।

(*ii*) 'बालकेभ्यः' के साथ; 'एतेभ्यः'–चतुर्थी बहुवचन।

ग. एतस्मै–'बालकाय'–चतुर्थी एकवचन (पुल्लिग) के साथ।

घ. (*i*) एतत् (*ii*) एतस्य।

(*i*) 'गृहम्'–नपुंसकलिंग एकवचन पद होने कारण।

(*ii*) बालकस्य–(पुल्लिग), षष्ठी, एकवचन पद होने कारण।

ङ. एतेषाम्–'बालकानाम्' (पुल्लिग) षष्ठी, बहुवचन होने के कारण।

स्मरण रहे–सर्वनाम शब्द जिस संज्ञापद के साथ प्रयोग में आते हैं, उसी का लिंग, विभक्ति व वचन ले लेते हैं। पाठ-वाचन के समय सर्वनाम प्रयोग पर ध्यान दें।

7. **प्रत्येक खण्ड में दिए वाक्य को ध्यान से पढ़ें। प्रत्येक पद का अर्थ प्रयोगानुसार समझें। अब प्रश्न पढ़ें और वाक्य के आधार पर उत्तर दें।**

उत्तर– (क) (*i*) तरवः–(तरु शब्द–प्रथमा–बहुवचन) (*i*) क्रियापद 'कुर्वन्ति'– बहुवचन में, अतः कर्त्ता भी तदनुसार बहुवचन में होगा।

(*ii*) कर्त्ता सदा प्रथमा विभक्ति में होता है।

इन दोनों बिन्दुओं की दृष्टि से 'तरवः' उचित है, क्योंकि 'जीवनम्' एकवचन पद है, और सर्वेषाम्–षष्ठी विभक्ति पद।

(*ii*) सुखमयम्–'जीवनम्' का विशेषण–दोनों पद नपुंसकलिंग, एकवचन।

---

* अकारान्त (पुल्लिग व नपुंसकलिंग) शब्द रूप की आवृत्ति लाभप्रद होगी।

उत्तर– (ख) *(i)* चतुर्थी–'के लिए' के अर्थ में प्रयुक्त। (**थके माँदों के लिए** छाया कहाँ से)

नोट–सभी शब्द रूपों में चतुर्थी तथा पञ्चमी विभक्ति के रूप समान होते हैं; यथा–बालकेभ्यः, लताभ्यः, सर्वेभ्यः इत्यादि। वाक्य प्रयोग के आधार पर ही विभक्ति का पता चल सकता है। **उदाहरणतः**–'**वृक्षेभ्यः** पत्राणि पतन्ति' वाक्य में पञ्चमी का प्रयोग है, '**वृक्षेभ्यः** जलं यच्छति' वाक्य में चतुर्थी का। अतः वाक्य में आए प्रयोग को समझें, तदनुसार उत्तर दें।

(ii) कुतः–(इतः, ततः, कुतः इत्यादि अव्यय पद हैं।)

उत्तर– (ग) *(i)* द्वितीया–(तान्–तत्, द्वितीया, बहुवचन-पुल्लिंग)–**नियम**–प्रति के योग में द्वितीया का प्रयोग; यथा–गृहम् प्रति, मित्रं प्रति, पितरं प्रति इत्यादि।

(ii) वृक्षान् प्रति अस्माकं किं कर्त्तव्यम्?

('तान्'–द्वितीया, बहुवचन-पुल्लिंग, उसी प्रकार–'वृक्षान्' ('वृक्ष' मूल शब्द) द्वितीया बहुवचन)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. सज्जनाः वृक्षाः इव स्वयं कष्टं सहन्ते, परम् अन्येषां जीवनं सुखमयं कुर्वन्ति।
2. ये अस्माकम् उपकारं कुर्वन्ति तान् प्रति अस्माकम् अपि किञ्चिद् कर्त्तव्यम् अस्ति।
3. सत्पुरुषाः वृक्षाः/तरवः इव परार्थाय (परेषाम् उपकाराय) जीवन्ति, न तु स्वार्थाय।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. पाठ्यपुस्तक तथा सामान्यबोध के आधार पर वृक्षों की उपादेयता के बारे में कक्षा में चर्चा करें। वास्तव में पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व पूर्णतया वृक्षों के अस्तित्व पर निर्भर है। प्रकृति में सब प्रकार से संतुलन बनाए रखने का श्रेय वृक्षों को जाता है। वृक्ष जीवन का आश्रय हैं–वह जीवन मनुष्य का हो या पशु-पक्षी अथवा चींटी जैसे कीट का।

2. **वृक्षाः–अस्माकं मित्राणि–**वृक्षाः सत्पुरुषाः इव परोपकारं कुर्वन्ति। ते परोपकाराय फलन्ति। स्वयम् आतपे तिष्ठन्ति परम् अस्मभ्यं शीतलां छायां कुर्वन्ति। श्रान्तः पथिकः वृक्षस्य अधः विश्राम्यति। सुखं च अनुभवति। वृक्षस्य उपरि खगाः मधुरं कूजन्ति। ते वृक्षे नीडं रचयन्ति। स्वशावकान् च पालयन्ति। वृक्षस्य मूले पिपीलिकाः निवसन्ति। वृक्षाणाम् कृपया वायुः स्वच्छः वातावरणं च प्रदूषण-रहितं भवति। वृक्षाणाम् प्रत्येकम् भागः उपादेयः। अजाः पर्णानि, खादन्ति, वयम् फलानि खादामः। पुष्पाणि सुगन्धेन वातावरणं पूरयन्ति। वृक्षाणाम् काष्ठेन विविधं निमार्ण-कार्यं प्रचलति। वृक्षाः अस्माकं मित्राणि सर्वविधम् साहाय्यं कुर्वन्ति। वृक्षदेवेभ्यः नमः।

छात्र इस प्रकार स्वयं वाक्य रचना करें। संकेत में दिए गए पदों के अतिरिक्त अन्य पदों का प्रयोग किया जा सकता है।

❐❐

3 अहो कारुण्यम् सिंहदम्पत्योः

हिंदी अनुवाद (अहो, सिंहदम्पती की करुणा)

(यह कथा हितोपदेश से संकलित है। एक शेर दम्पती भूखे रहकर भी सियार के शिशु की हत्या भोजन के लिए नहीं करते। शेरनी उसका पुत्रवत् पालन करती है। सियार का बचपन शेर शिशुओं के साथ बीतता है। जब रहस्य सामने आता है तो शेरनी सियार पुत्र जीवित रहे—इसी कामना से उसे वहाँ से भाग कर अपनी जाति वालों के बीच चले जाने के लिए कहती है। एक माँ की ममता और शेरनी की अनुकम्पा!)

किसी वनस्थल में सिंहदम्पती निवास करते थे। समय के साथ शेरनी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। अपने दोनों शिशुओं के साथ शेर दम्पती का समय सुख से बीत रहा था।

शेर हमेशा ही पशुओं को मार कर शेरनी को दे देता। कभी एक दिन उसे कोई भी जीव (सत्त्वम्) नहीं मिला (उसके द्वारा कोई भी जीव प्राप्त नहीं किया गया)। वन में घूमते-घूमते सूर्य अस्त हो गया।

घर लौटते हुए उसे एक सियार का बच्चा मिला। यह तो बच्चा ही है—यह सोचकर उसने शेरनी को उसे जीवित ही सौंप दिया।

'प्रिय! हमारा कुछ भोजन लाए हो?'

'आज इस श्रृगाल शिशु के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला। यह बच्चा है—यह सोचकर मैंने इसे नहीं मारा। अब इसी को खाकर अपनी क्षुधा शान्त कर लो।'

'प्रिय! यह बच्चा है—यह सोचकर तुमने इसे नहीं मारा; तो मैं इसे कैसे मारूँ।

'कहा भी गया है—प्राणत्याग की स्थिति उत्पन्न होने पर भी अकृत्य अर्थात् न करने योग्य काम को नहीं करना चाहिए और न ही करने योग्य काम (कृत्यम्) का त्याग करना चाहिए—यही सनातन धर्म है।'

(भाव—कर्त्तव्य कर्म प्राणों से भी अधिक प्रिय होना चाहिए। प्राण चाहे चले जाएँ, किन्तु कर्त्तव्य का त्याग नहीं करना चाहिए।)

'आज से यह मेरा तीसरा पुत्र होगा।' ऐसा कहकर उसने श‍ृगाल के बच्चे को पुत्र की भाँति पाला।

इस प्रकार वे तीनों शिशु एक साथ घूमने लगे। वे अपना बचपन बिताते रहे, परन्तु परस्पर का जातिभेद नहीं जानते थे।

एक बार उन्होंने वन में घूमता हुआ हाथी देखा। (उनके द्वारा एक घूमता हुआ हाथी देखा गया)। उसे देखकर दोनों सिंह पुत्र बहुत क्रोध में आ गए और उसकी ओर चल पड़े। तभी श‍ृगाल पुत्र ने कहा (उक्तवान्)–'अरे, यह तो हाथी है, इसके सामने मत जाना'–ऐसा कहकर वह तेज़ गति से घर की ओर भागा। वे दोनों भी बड़े भाई के भय से निरुत्साहित हो गए। निरुत्साहित (उत्साह हीन) हो गए। ठीक ही कहा है–

रण के प्रति अर्थात् रणभूमि में एक भी धैर्यवान् और साहसी (योद्धा) होने से (सारी) सेना में उत्साह आ जाता है; (एक भी योद्धा के) टूटने पर सम्पूर्ण सेना टूट जाती है।

(**भाव**–समुदाय में एक दूसरे को देखकर धैर्य व साहस बना रहता है। यदि एक साहस और धैर्य खो बैठे तो दूसरे भी निरुत्साहित हो जाते हैं।)

तब दोनों सिंह पुत्रों ने माता-पिता (पित्रोः) के आगे बड़े भाई की चेष्टा का वर्णन किया–जिस प्रकार वह हाथी को देखकर (वीक्ष्य) दूर भाग गया था। यह सुनकर उसे क्रोध आ गया और वह उन दोनों के प्रति कठोर वचन बोलने लगा।

तब शेरनी ने एकान्त में ले जाकर उसे समझाया–'ऐसे मत बोलो। ये दोनों तुम्हारे छोटे भाई हैं। क्रोधवश वह बोला–

'क्या मैं इनसे (एताभ्याम्) वीरता में, रूप में अथवा विद्या-अभ्यास में कम हूँ जो ये दोनों मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। मैं इन दोनों को अवश्य ही मार डालूँगा।'

यह सुनकर शेरनी उसके जीवन को चाहती हुई बोली–'बेटा, तुम शूरवीर हो, विद्वान हो, सुन्दर हो; किन्तु जिस कुल में तुम उत्पन्न हुए हो वहाँ हाथ नहीं मारा जाता।

तुम श‍ृगाल के पुत्र हो, मैंने कृपा करके तुम्हें अपने दूध से पोषित किया है। आज तक ये दोनों नहीं जानते कि तुम सियार हो, तो जल्दी से जाकर अपनी जाति (के लोगों) में मिल जाओ। नहीं तो मेरे ये दोनों पुत्र तुम्हें मार डालेंगे।

उसके वचन सुनकर, भय से व्याकुल हो, वह उसी क्षण वहाँ से पलायन कर गया।

अहो, सिंह दम्पती की करुणा जिसके कारण निर्बल शृगाल शिशु के प्राण बच गए।

सच ही कहा गया है बुद्धिमानों द्वारा–दीन पर दया करनी चाहिए।

दया धर्म की जन्मभूमि है।

उत्तराणि

मौखिकम्

प्रत्येक वाक्य का वाचन दो बार करें। प्रस्तुत वाक्यों में गम् धातु के लोट् लकार का वाक्य प्रयोग है।

लिखितम्

1. **सभी प्रश्न पाठाधारित हैं। कोष्ठक से पाठ के आधार पर उचित विकल्प चुनकर उत्तर दें।**

उत्तर– क. सिंहदम्पती ख. पुत्रद्वयम् ग. मृगान् घ. तृतीयः
ङ. ज्येष्ठ–भ्रातुः च. क्रोधाविष्टः छ. जीवितम्

उत्तर 2. I. क. एवमेव (म् + ए = मे) II. क. भक्षयित्वा

I.	II.
क. एवमेव (म् + ए = मे)	क. भक्षयित्वा
ख. ममायम्	ख. उक्त्वा
ग. बालोऽयम्	ग. दृष्ट्वा
घ. त्रयोऽपि	घ. परित्यज्य
ङ. शूरोऽसि	ङ. आकर्ण्य
च. किंचिदपि	च. गत्वा

उत्तर 3. क. बालः अयम् इति मत्वा/विचार्य सिंहेन शृगाल–शिशुः न हतः।
ख. अद्य प्रभृति अयं मम तृतीयः पुत्रः भविष्यति इति उक्त्वा सिंही शृगाल शिशुम् अपालयत्।
ग. सिंहपुत्रौ ज्येष्ठभ्रातुः भयात् निरुत्साहितौ अभवताम्।
घ. द्वौ अपि सिंहपुत्रौ पित्रोः अग्रे ज्येष्ठभ्रातुः चेष्टितम् अवर्णयताम् यथा सः गजं दृष्ट्वा दूरतः प्रणष्टः/पलायितः।

उत्तर 4. 1. (ङ) एकस्मिन् वने सिंहदम्पती निवसतः स्म।
2. (ग) सिंही द्वौ पुत्रौ अजनयत्।
3. (ख) एकदा सिंहेन शृगाल-शिशुः लब्धः।
4. (घ) सिंही तं स्वकीयपानेन पुत्रवत् अपालयत्।
5. (क) त्रयः अपि शिशवः एकत्र विहारं कुर्वन्ति।
6. (छ) एकदा गजं दृष्ट्वा भीतः शृगाल-सुतः द्रुतं गृहं प्रति अधावत्।
7. (ज) लघुभ्रातरौ पित्रोः अग्रे ज्येष्ठ-भ्रातुः चेष्टितम् अवर्णयताम्।
8. (च) सिंही तं प्रबोध्य तस्य प्राणान् अरक्षत्।

उत्तर 5. I. (क) शिशवः (ख) गजः (ग) द्रुतगत्या (घ) सिंह-पुत्रौ
II. (क) 'अहो गजोऽयम्, मा गच्छतम् अस्य अभिमुखम्' इति।
(ख) सिंहपुत्रौ ज्येष्ठ-भ्रातुः भयात् निरुत्साहितौ अभवताम्।
III. (क) (*i*) शिशवः-'त्रयः' तथा 'ते' यहाँ विशेषण हैं 'शिशवः' के।
(*ii*) एवम्, एकत्र, च, परम्, न, परस्परम्।
(*iii*) शिशुः शिशू ....
करोति कुरुतः ....
(ख) (*i*) सिंहपुत्रौ (विशेष्य पद) (*ii*) गजम्
(*iii*) 1. भयात् 2. तीव्रगत्या
(*iv*) द्वितीया
(*v*) 1. गम् 2. चल् 3. दृश्
4. क्रुध् 5. ज्ञा

उत्तर 6. क. पठन्तु – कर्त्ता प्रथम पुरुष बहुवचन।
ख. पठत – कर्त्ता मध्यम पुरुष बहुवचन।
ग. पठानि – कर्त्ता उत्तम पुरुष एकवचन।
घ. पठ – कर्त्ता मध्यम पुरुष एकवचन।
ङ. पठतु – कर्त्ता, प्रथम पुरुष एकवचन।
च. पठाव – कर्त्ता, उत्तम पुरुष द्विवचन।
छ. पठतम् – कर्त्ता, मध्यम पुरुष द्विवचन।

उत्तर 7. क. सिंहेन
ख. सिंहः, शृगाल–शिशुम्
ग. शृगाल–सुतः, सिंह–सुतौ
घ. शृगाल–सुतस्य
ङ. सिंह्याः, शृगाल–सुतः

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. (*i*) प्राणान् अपि रक्षितुं नरः अनुचितं कर्म कदापि न कुर्यात्।

(*ii*) प्राणपणेन अपि स्वकर्त्तव्यं पालयेत्।
(प्राणपणेन = प्राणों की बाज़ी लगाकर)

2. (*i*) कष्टे आगते दलात् पलायनं न कुर्यात्, सर्वथा धैर्यम् आचरेत्।
(कष्टे आगते = कष्ट आने पर)

(*ii*) यदि एकस्मिन् दले (समूहे) एकः अपि साहसं दर्शयति तर्हि शेषं दलम् सोत्साहं (उत्साहपूर्णम्) भवति।

(*iii*) कस्मिंश्चित् समूह–कार्ये (सामूहिक–कार्ये) एकोऽपि साहसी सुधीरः सकलं कार्यं सफलं करोति, न तु कातरः मूर्खः। (कातरः = कायर)

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. चर्चा करें। यथा–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की व्यवस्था में प्रत्येक जन अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए दूसरे पर निर्भर है। ऐसी परिस्थिति में दीन–हीन का शोषण न हो, इसके लिए आवश्यक है कि बलशाली निर्बल पर, समृद्ध निर्धन/वञ्चित वर्ग पर और सशक्त अशक्त पर दया करे। सम्मानपूर्वक जीवनयापन करने का समान अधिकार सबको है। दया की भावना धर्म का मूलमंत्र है, एक स्वस्थ समाज की सुदृढ़ नींव भी।

2. लोट् व लङ् लकार–अभ्यास हेतु कुछ वाक्य। यथा–

(क) (*i*) त्वम् एतत् चित्रं पश्यसि। – एतत् चित्रं पश्य।
(लट्) (लोट्)

	(*ii*) अर्णवः आपणं गच्छति। (लट्)	–	अर्णवः आपणं गच्छतु। (लोट्)
	(*iii*) भवान् उपविशति। (लट्)	–	भवान् उपविशतु। (लोट्)
(ख)	(*i*) नरः कर्त्तव्यम् करोतु। (एकवचन)	–	नराः कर्त्तव्यं कुर्वन्तु। (बहुवचन)
	(*ii*) छात्रः पाठम् अपठत्। (एकवचन)	–	छात्राः पाठम् अपठन्। (बहुवचन)
	(*iii*) किं त्वं भोजनम् अखादः? (एकवचन)	–	किं यूयम् भोजनम् अखादत? (बहुवचन) इत्यादि।

❐❐

4 विद्या ददाति विनयम् (संवादः)

हिंदी अनुवाद (विद्या विनयशीलता प्रदान करती है)

माता – बेटा अर्णव, क्या बात है तुम्हारी कमीज़ फटी है। यह तो नई ही है, पुरानी तो नहीं।

अर्णव – माँ! आज मैं स्कूल के खेल के मैदान में भागते हुए गिर गया।

माता – सच बताओ, क्या स्कूल में तुम्हारा किसी से झगड़ा तो नहीं हुआ?

अर्णव – सच बताता हूँ। यह अनुराग मुझे रोज़ पीटता और गाली देता रहता है। आज मैंने सोचा (मेरे द्वारा सोचा गया) कि दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए 'जैसे को तैसा'।

माता – बेटा! क्या तुम नहीं जानते–'विद्या विनम्रता प्रदान करती है और विनम्रता से व्यक्ति योग्यता प्राप्त करता है।' (विद्या पाकर मनुष्य विनयशील बन जाता है, और विनम्र व्यक्ति में योग्यता आ जाती है।)

अर्णव – जानता हूँ माँ! मैं भी झगड़ालू नहीं हूँ। परन्तु कूट स्वभाव वालों के साथ सीधापन उचित नहीं।

माता – स्वभाव से तुम शान्ति पसन्द करते हो। इसीलिए तुम्हारे इस झगड़ालू व्यवहार को देख (जानकर) मैं चिन्तित हूँ।

अर्णव – माता! यदि कोई सदैव झगड़ा करे तो मैं क्या करूँ?

माता – 'बैर से बैर नहीं शान्त होता' यह बात तुम्हें याद रखनी चाहिए।

अर्णव – माँ मुझे क्षमा कीजिए! मैं याद रखूँगा कि कलह से शान्ति नहीं आती।

माता – बेटा, तुम बहुत योग्य हो, तुम्हारे पर मुझे पूरा विश्वास है।

अर्णव – मैं माता का विश्वासपात्र हूँ, यह जानकर चित्त प्रसन्न हुआ है।

माता – तुम मेरे स्नेह के पात्र भी हो। माता पुत्र से सदा स्नेह करती है।

अर्णव – माँ! आज हमने संस्कृत की पुस्तक में पढ़ा (हमारे द्वारा पढ़ा गया) –'फलदार वृक्ष झुक जाते हैं और गुणवान लोग भी झुकते हैं अर्थात् विनम्र होते हैं।

माता – यह सच है! हमें विनम्र होना चाहिए। गुणी लोग सदा विनीत स्वभाव वाले होते हैं।

अर्णव – माँ! मैं तुम्हारे से प्रतिज्ञा करता हूँ कि सदा विनयशील रहूँगा।

माता – आयुष्मान होवो बेटा! विनयशील बनो!

अर्णव – माँ! मैं आपका आभारी हूँ। आप (भवती) मुझे सदा सन्मार्ग दिखाती हैं।

उत्तराणि

मौखिकम्

उच्चारण करें। बाईं से दाईं ओर–

1. मातृ शब्द् के एकवचन के रूप–सातों विभक्तियों में।
2. भू–धातु–विधिलिङ् लकार–प्रथम, मध्यम, उत्तम पुरुष–तीनों वचनों में।
3. कृ–धातु–विधिलिङ् लकार–तीनों पुरुष, तीनों वचनों में।

सहज रीति से वाचन–पुनर्वाचन करें। प्रत्येक पुरुष के धातु रूप का दो बार वाचन करें। स्पष्ट उच्चारण करने से लाभ होगा।

लिखितम

1. प्रत्येक प्रश्न का ध्यानपूर्वक वाचन करें। रंगीन पद के आधार पर पाठानुसार, कोष्ठक से, तथ्य की दृष्टि से, उचित विकल्प चुनें। ध्यान दें–प्रत्येक कोष्ठक में दिए गए विकल्प लिंग, विभक्ति व वचन में समरूप हैं। उदाहरण देखें और समझें। 'कीदृशम्' के उत्तर में 'विशीर्णम्' पाठानुसार उचित विकल्प। लिखते समय वर्तनी की ओर विशेष ध्यान दें।

उत्तर– क. क्रीडाङ्गणे–('कुत्र' के उत्तर में सप्तमी विभक्ति पद। **नोट करें**–कोष्ठक में सभी विकल्प सप्तमी एकवचन में हैं)।

ख. विनयम्–('किम्' के उत्तर में द्वितीया विभक्ति पद। **नोट**–कोष्ठक में दिए गए सभी विकल्प कर्मकारक में हैं)।

ग. पात्रताम्–('काम्' के उत्तर में द्वितीया विभक्ति पद (स्त्रीलिंग)। शेष विकल्प भी समरूप)।

घ. गुणिजनाः–('कीदृशाः' (कैसे) के उत्तर में; शेष विकल्प भी समरूप–पुल्लिग बहुवचन में)।

ङ. फलिनः/फलयुक्ताः–('कीदृशाः'–कैसे–के उत्तर में)। (दोनों पद बहुवचन)

2. प्रश्न ध्यानपूर्वक पढ़ें, अर्थ समझें; सही उत्तर के लिए पाठ में देखें। उत्तर लिखने से पहले पाठगत वाक्य/वाक्यों में प्रसंगानुसार अपेक्षित परिवर्तन करना न भूलें।

उत्तर– क. अनुरागः नित्यमेव अर्णवम् ताडयति अपवदति च; अतः तेन सह अर्णवस्य कलहः भवति। (**नोट**–प्रस्तुत उत्तर में पाठगत 'माम्' के स्थान पर 'अर्णवम्' और 'अनुरागेण' के स्थान पर 'तेन' प्रयुक्त किया गया है)।

ख. अर्णवः विचारयति–'आर्जवं हि न कुटिलेषु नीति'–अतः सः अनुरागेण सह कलहं करोति।

अथवा

'आर्जवं हि न कुटिलेषु नीति' इति विचार्य अर्णवः अनुरागेण सह कलहं करोति।

ग. अर्णवः मात्रे/अम्बायै प्रतिजानाति–अहं सदा विनीतः भविष्यामि इति।

3. परस्पर मेल–

उत्तर– I. समानार्थक-पद–ख. ददाति–यच्छति, ग. फलिनः–फलयुक्ताः, घ. याति–गच्छति, ङ. समाचरेत्–कुर्यात्, च. अवगम्य–विज्ञाय।

II. विलोम-पद–ख. नित्यम्–यदा-कदा, ग. कलहप्रियः–शान्तिप्रियः, घ. सत्यम्–मिथ्या, ङ. गुणिनः–गुणहीनाः, च. तुभ्यम्–मह्यम्।

परस्पर मेल करने के बाद सहज रीति से वाचन करें।

4. पाठांश को ध्यान से पढ़ें। फिर एक-एक करके प्रश्नों के उत्तर पाठांश के आधार पर दें। प्रश्न ध्यान से पढ़ें। लिखते समय वर्तनी पर ध्यान दें।

उत्तर– I. (क) विद्या (ख) विनयात् (ग) वैरेण।

II. अर्णवस्य कलहयुक्तं व्यवहारम् अवगम्य (ज्ञात्वा) माता चिन्तिता।

III. (क) वैरेण (ख) गम् धातुः, ल्यप् प्रत्ययः।

(ग) न + अस्मि, तवेदम्, कश्चित्, अहम् + अपि।

(घ) *(i)* कश्चित् *(ii)* कृ–विधिलिङ् *(iii)* यदि–तर्हि।

5. विधिलिङ्‌के धातु रूप की आवृत्ति कर लें।
वाक्यों को पढ़ें, आशय समझें। वाक्य में कर्त्ता (Subject/Agent of the action) को पहचानें, तदनुसार क्रियापद का रूप निर्धारित करें।

I. उदाहरण देखें–'भवेत्' (भू)–कारण–वाक्य में कर्त्ता–'कश्चित्' –प्रथम पुरुष, एकवचन।

उत्तर– क. पठेत्, क्रीडेत्–वाक्य में कर्त्तापद लुप्त होने पर, सामान्य रूप से विधि-विधान, सिद्धान्त, नियम आदि को दर्शाने के लिए प्रथम पुरुष, एकवचन का प्रयोग; यथा–पठनकाले पठेत् = पढ़ने के समय पढ़ना चाहिए।

ख. आगच्छेत्–कर्त्ता–**'मित्रम्'**, क्रियापद तदनुसार प्रथम पुरुष, एकवचन।

ग. वसन्तु–कर्त्ता–**'जनाः'**, अतः प्रथम पुरुष, बहुवचन का प्रयोग।

घ. पठेः–कर्त्ता–'त्वम्' होने के कारण, मध्यम पुरुष, एकवचन।

ङ. कुर्याम–कर्त्ता–'वयम्', अतः उत्तम पुरुष, बहुवचन का क्रियापद।

II. उदाहरण देखें और समझें–लोट् लकार के क्रियापद के स्थान पर विधिलिङ् लकार का क्रियापद प्रयोग में लाना है।*

उत्तर– क. सर्वे बालकाः क्रीडाक्षेत्रं गच्छेयुः।

ख. सुमित, त्वम् अपि सावधानं पाठं पठेः।

ग. यूयम् पौष्टिकं भोजनं खादेत।

घ. तौ खेलनाय गच्छेताम्।

ङ. वयम् प्रश्नम् सम्यक् पठित्वा उत्तरम् लिखेम्।

अभ्यास करने के बाद दोनों लकारों के वाक्यों का ध्यानपूर्वक वाचन करें और नोट करें–क्रियापद में क्या परिवर्तन आया है; यथा–गच्छन्तु–गच्छेयुः, पठ–पठेः, खादत–खादेत इत्यादि। (दोनों लकारों के धातु रूप आमने-सामने लिखकर भी तुलनात्मक अवलोकन कर सकते हैं।)

6. मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़िए। ये सभी पाठ में आ चुके हैं। रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य पढ़ें, आशय समझें, मञ्जूषा से प्रसंगानुसार उचित पद चुनें और वाक्य पूर्ति करें। सभी वाक्य पाठ से उद्धृत हैं।

---

* प्रस्तुत अभ्यास करने से पहले लोट् व विधिलिङ् लकार के धातु रूप की आवृत्ति करना हितकर होगा। फिर भी यदि कठिनाई अधिक हो तो धातु रूप तालिका की सहायता ली जा सकती है, ठीक उसी प्रकार जैसे वर्तनी आदि देखने के लिए शब्दकोश का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर– क. वैरेण, वैराणि; ख. पुत्रे; ग. मातुः (माता का) घ. आयुष्मान्
ङ. विनयशीलाः (विनीत स्वभाव वाले)

7. **उदाहरण देखें और समझें–**नास्मि = न + अस्मि – 'न' के अन्तिम अक्षर 'अ' तथा 'अस्मि' के प्रथम अक्षर 'अ' का मेल होने पर 'आ' हो गया है–और 'नास्मि' सन्धियुक्त शब्द बन गया है। यह स्वर सन्धि का उदाहरण है।*

उत्तर– क. अद्य + अहम्   ख. विद्या + आलयः
ग. च + अपि   घ. केन + अपि
ङ. सदा + एव (आ + ए = ऐ)   च. सुयोग्यः + असि

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. विद्वान् विनयशीलः/विनम्रः जायते।
2. वैरं शामयितुं मित्रतां कुर्यात्, न तु वैरम्।
3. गुणिनः जनाः स्वभावेन विनम्राः भवन्ति न तु गर्विताः (दर्पिताः)।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. सहपाठियों में यदा-कदा कलह हो जाना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में विनयपूर्वक व्यवहार ही उचित है। यदि दोनों पक्ष विवेक से काम लें तो समस्या का समाधान हो सकता है। अन्य सहचरों का भी यहाँ उत्तरदायित्त्व बनता है कि वे शान्तिपूर्ण तरीके से समस्या के समाधान में योग दें। उदारचरित होने से आत्मसम्मान भी बना रहता है और शान्ति भी।
2. वाक्य के क्रियापद में लकार परिवर्तन का अभ्यास करें। यथा–

लट् लकार-प्रयोग	**लोट् लकार-प्रयोग**	**विधिलिङ्-प्रयोग**
सः पठति।	सः पठतु।	सः पठेत्।
तौ पठतः।	तौ पठताम्।	तौ पठेताम्।
ते पठन्ति।	ते पठन्तु।	ते पठेयुः।

* विस्तार के लिए देखें – 'सन्धि बोधः' – 'परिशिष्टम्' पाठ्य पुस्तक में।

अथवा

लट् लकार-प्रयोग	**लोट् लकार-प्रयोग**	**विधिलिङ्-प्रयोग**
बालकः गच्छति।	बालकः गच्छतु।	बालकः गच्छेत्।
बालकौ गच्छतः।	बालकौ गच्छताम्।	बालकौ गच्छेताम्।
बालकाः गच्छन्ति।	बालकाः गच्छन्तु।	बालकः गच्छेयुः।

मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष में भी वाक्य-रचना का अभ्यास करें। इसी प्रकार अन्य धातुओं का विविध लकारों में प्रयोग करने का अभ्यास करें। विभिन्न लकारों के धातुरूप में भेद की ओर ध्यान दें।

2. लोट् विधिलिङ्-अभ्यास–कुछ अन्य वाक्य; यथा–

लट् लकार-प्रयोग	**लोट् लकार-प्रयोग**	**विधिलिङ्-प्रयोग**
त्वं पठसि।	त्वं पठ।	त्वं पठेः।
युवाम् पठथः।	युवाम् पठतम्।	युवाम् पठेतम्।
यूयम् पठथ।	यूयम् पठत।	यूयम् पठेत।
अहम् पठामि।	अहम् पठानि।	अहम् पठेयम्।
आवाम् पठावः।	आवाम् पठाव।	आवाम् पठेव।
वयम् पठामः।	वयम् पठाम।	वयम् पठेम।

यदि छात्र इस प्रकार आमने सामने, लकारों के क्रियापदों को तुलनात्मक दृष्टि से देखें, तो हितकर होगा।

❑❑

पाठाः 1-4 पुनरावृत्तिः

1. प्रश्न ध्यान से पढ़ें, रंगीन पद पर ध्यान दें। कोष्ठक दत्त विकल्पों का वाचन करें। उचित विकल्प चुनकर उत्तर दें।

उत्तर– क. सुनीतायै–कस्यै (स्त्रीलिंग) के उत्तर में, 'सुनीता' (आकारान्त) में चतुर्थी, एकवचन का प्रयोग; जैसे–लतायै, अध्यापिकायै आदि।

ख. अभ्यासेन – 'केन' के उत्तर में।

ग. वृक्षाः – 'के' के उत्तर में।

घ. वृक्षाणाम् – 'केषाम्' के उत्तर में।

ङ. तण्डुलकणान् – 'कान्' के उत्तर में।

च. मातुः– कस्याः (स्त्रीलिंग) के उत्तर में (षष्ठी प्रयोग)।

छ. पुत्रे – 'कस्मिन्' के उत्तर में।

2. पाठ का वाचन भली-भाँति करें। पाठ में प्रयुक्त शब्दों/वाक्यांशों से सहायता लें। वाक्य संक्षिप्त रखें।

उत्तर– क. वृक्षाः वातावरणं शुद्धं कुर्वन्ति।

ख. तेषां छाया तापम् अपहरति/अपनयति।

ग. वृक्षाणां पुष्पाणि वातावरणं सुगन्धेन पूरयन्ति।

घ. तेषां फलानि अस्माकं क्षुधां हरन्ति।

ङ. वृक्षाः पक्षिभ्यः अपि आश्रयं यच्छन्ति।

अथवा

क. वृक्षाः स्वयम् आतपे स्थित्वा सर्वेभ्यः छायां कुर्वन्ति।

ख. ते अस्मभ्यं फलानि यच्छन्ति।

ग. पक्षिणः वृक्षेषु नीडान् रचयन्ति।

घ. ते स्वास्थ्यप्रदं तत्त्वम् ऑक्सीजन इति यच्छन्ति।

ङ. जलानां वर्षणे अपि वृक्षाः सहायकाः सन्ति।

3. मञ्जूषा में दिए गए अव्यय-युग्म पढ़ें। अर्थ समझें, रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य पढ़ें, आशय समझकर उचित अव्यय-युग्म चुनें।

उत्तर– क. यावत् (ज्यों ही) – तावत् - (तभी)

ख. यदा (जब) – तदा – (तब)

ग. यत्र (जहाँ) – तत्र (वहाँ)

घ. यथा – (जिस प्रकार) – तथा - (उस प्रकार)

वाक्यों का वाचन करें। प्रयोग समझें।

4. **मञ्जूषा में दिए शब्द पढ़ें, अर्थ समझें–**प्रतीत होता है कि चर्चा वृक्ष, प्रदूषण, पशु–पक्षी, रोग आदि के विषय में हैं। रिक्त स्थान छोड़कर संवाद पढ़ें, आशय समझकर उचित पद चुनें।

उदाहरण देखें–'अनुपस्थितः' शब्द रिक्त स्थान में।

उत्तर– क. अस्वस्थः – 'श्वासरोगात्' (श्वास–रोग के कारण)– के साथ उचित प्रयोग; 'अहम् .... आसम्' के साथ भी पूरक शब्द– एकवचन–उचित।

ख. प्रदूषणम् – प्रसंगानुसार उचित। बाद का वाक्य– 'तस्मात् अनेके रोगाः जायन्ते' (उसके कारण/उससे अनेक रोग हो जाते हैं।)

ग. 'जलम्' – 'प्रदूषितम्' के साथ उचित संज्ञापद–(दोनों पद नपुंसकलिंग, एकवचन)

घ. 'प्रदूषणेन' – 'एतेन'–सार्वनामिक विशेषण–पद के साथ उचित विशेष्य–पद समान विभक्ति व वचन में

ङ. वृक्षाः – 'अल्पतराः' (और कम)– विशेषण के साथ उचित विशेष्य–पद समान विभक्ति व वचन में।

च. वृक्षाणाम् – 'आरोपणम्' से सम्बन्ध, अतः षष्ठी विभक्ति पद उचित।

छ. मिलित्वा (मिलकर) – प्रसंगानुसार उचित।

5. **परस्पर मेल करते हुए उच्चारण करें।**

उत्तर– **I. विपरीतार्थक–**क. कलहप्रियः–शान्तिप्रियः, ख. आतपः–छाया, ग. सत्यम्–मिथ्या, घ. विनयशीलः–गर्वितः/अहङ्कार–युक्तः, ङ. ह्यः–श्वः।

II. विशेषण–विशेष्य–क. महती– आवश्यकता, ख. पूर्णः–विश्वासः, ग. सम्पूर्णम्–कार्यम्, घ. शोभनाः–अङ्काः, ङ. पुष्पितः–वृक्षः।

6. सर्वनाम अस्मद् तथा युष्मद् के शब्द रूप की पुनरावृत्ति करें। इन शब्दों का प्रयोग हम बहुधा करते हैं। अतः ये शब्द रूप महत्त्वपूर्ण हैं।

उदाहरण देखें और समझें। कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ति करें।

उत्तर– क. तव   ख. अस्मान्   ग. तुभ्यम्

घ. अस्माभिः   ङ. युष्मान्   च. मया।

वाक्य पूर्ति के उपरान्त सम्पूर्ण वाक्य का वाचन करें। विभक्ति का प्रयोग भी समझें;

यथा–वाक्य (ग) में रुच् धातु के कारण चतुर्थी, वाक्य (घ) में सह के योग में तृतीया, वाक्य (ख) तथा (ङ) में कर्म में द्वितीया, वाक्य (क) में सम्बन्धकारक में षष्ठी प्रयोग।

7. **I. उदाहरण देखें और समझें–**रिक्त स्थान में–'पठेयुः' (पठ्–विधिलिङ्)।

कारण–वाक्य में कर्त्ता 'छात्राः', अतः क्रियापद प्रथम पुरुष, बहुवचन में।

प्रत्येक वाक्य को पढ़ें, कर्त्तापद पहचानें, क्रियापद का उचित रूप लिखें।

उत्तर– क. भवत – कर्त्ता 'यूयम्' लुप्त, सम्बोधन में 'छात्राः' (बहुवचन) होने के कारण क्रियापद बहुवचन में।

ख. कुर्याम – कर्त्ता 'वयम्' अतः क्रियापद–उत्तम पुरुष, बहुवचन में।

ग. हरन्ति – कर्त्ता 'वृक्षाः' होने के कारण क्रियापद प्रथम पुरुष, बहुवचन में।

घ. भवेत् – कर्त्ता 'कोऽपि' होने के कारण क्रियापद प्रथम पुरुष, एकवचन में।

ङ. पालयिष्यामः – कर्त्ता 'वयम्' होने के कारण; **ध्यान दें–**'पाल्' के धातु रूप में 'य' बीच में आता है; यथा–दण्ड्–दण्डयति, कथ्–कथयति आदि।),

II. रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य पढ़ें, आशय समझकर कोष्ठकदत्त शब्द का रूप निर्धारित करें।

उत्तर– क. शब्दरूपाणाम्–'प्रयोग:' के साथ सम्बन्ध होने के कारण षष्ठी प्रयोग।

ख. (*i*) फलिन:–'वृक्षा:' का विशेषण-पद होने के कारण बहुवचन।

(*ii*) जना:–'गुणिन:' का विशेष्य-पद होने के कारण बहुवचन।

ग. (*i*) जीवनम्–'रक्षितुम्' का 'कर्म' होने के कारण द्वितीया प्रयोग।

(*ii*) वृक्षा: –'रक्षितव्या:' के प्रसंग में दोनों शब्द समान विभक्ति, वचन में।

घ. प्रतिवसत:–कर्त्ता पद 'सिंहदम्पती'; यह द्विवचन माना जाता है। अत: क्रिया पद द्विवचन में। ध्यान दें–पाठ में यही प्रयोग आया है।

ङ. सिंह्यै (शेरनी के लिए)–दा धातु (ददाति) के क्षेत्र में सम्प्रदान में चतुर्थी; 'सिंही' शब्द-रूप नदी की भाँति (जिस प्रकार 'नद्यै'–चतुर्थी एकवचन; इसी प्रकार सिंह्यै)।

मूल्यपरकप्रश्ना:

1. विनयशील: जन: योग्य: भवति।
2. वृक्षाणां रक्षा प्राणिमात्र-हिताय कर्त्तव्या।
3. दीनेषु दया कर्त्तव्या।

❒❒

5 भारतं मे गौरवम्

हिंदी अनुवाद (भारत मेरा गौरव है)

प्यारे बच्चो! भारत हमारा गौरव है। हमारी प्राचीन संस्कृति आज भी जीवित है। देवताओं की मधुर वाणी संस्कृत, अपने शब्द भण्डार से देश की अनेक प्रान्तीय-भाषाओं का पोषण करती है। यह कम्प्यूटर के लिए सबसे ज़्यादा उपयुक्त भाषा है, ऐसा संसार के अनेक विद्वानों का मत है।

हमारा देश प्रतिभाशाली है। ज्ञान का उदय सबसे पहले इस देश की भूमि पर हुआ था। चिकित्सा-शास्त्र में आयुर्वेद का 'चरक संहिता' सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। इसकी चिकित्सा-पद्धति (तरीका) आज भी न केवल अपने देश में बल्कि विदेश में भी सम्मान पाती है। प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट ने अनेक वर्ष पहले गणना में शून्य की कल्पना की थी। विज्ञान के क्षेत्र में यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह पाश्चात्य देशों के लोग भी मानते हैं। प्राचीनकाल में पराशर ऋषि ने वृक्षायुर्वेद में यह बताया था कि पौधों में भी जीवन होता है। वे भी सुख-दुख महसूस करते हैं। आज के समय में श्री जगदीशचन्द्र बसु ने प्रयोगशाला में यह प्रमाणित किया है। सकल संसार भारतीयों की इन उपलब्धियों से चकित हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्सटाइन महोदय ने एक बार कहा था–'हम भारतीयों के आभारी हैं, विज्ञान के क्षेत्र में उनका बहुत ही बड़ा योगदान है।'

नोबेल पुरस्कार के विजेता डॉ० सी०वी० रमन्, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और हरगोविन्द खुराना भारत माँ के यशस्वी पुत्र देश के लिए गौरव के पात्र हैं। इन महापुरुषों की सफलताएँ हमारे लिए सच में प्रेरणा का स्रोत हैं। खेल जगत में सचिन तेन्दुलकर का नाम उल्लेखनीय है। यह सुप्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी पद्मभूषण, पद्मविभूषण इत्यादि अनेक पुरस्कारों का विजेता है। स्वभाव से अति विनम्र और खेल में अति निपुण यह सबका स्नेहपात्र है। लोकसेवा के क्षेत्र में, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत (honoured), भारतीय पुलिस की पहली महिला अधिकारिणी (officer) किरण बेदी अपूर्व सम्मान के योग्य हैं। तिहार जेल में, बन्दियों के उद्धार के लिए, उनके द्वारा किए गए संशोधन (reforms) प्रशंसनीय हैं।

परिश्रम और दृढ़ संकल्प से (मेहनत और पक्के इरादे से) क्या नहीं हो सकता? कम्प्यूटर के क्षेत्र में 'हॉटमेल' और 'पेन्टियम् चिप' अति योग्य भारतीयों

की ही रचना/कृति है। भारतीय विदेशों में भी उच्च पदों पर विराजमान हैं और देश का गौरव बढ़ा रहे हैं।

प्यारे बच्चो! देश की प्रगति हमारा लक्ष्य और इसका गौरव हमारा ध्येय है। हमारे इरादे पक्के हैं, हम अपने देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाएँगे और लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

'सफल होंगे एक दिन,
मन में हमारे विश्वास, पूरा है विश्वास।
सफल होंगे हम एक दिन।'

उत्तराणि

मौखिकम्

I. अभ्यास में दिए शब्दों को पढ़िए, सभी शब्द पाठ में आ चुके हैं। ये सभी बहुवचन पद हैं। प्रत्येक को एकवचन में बदलिए।

उत्तर– क. मम–(मम आवयोः अस्माकम्)*–षष्ठी

ख. एतस्य–(एतस्य एतयोः एतेषाम्)–षष्ठी

ग. भारतीयस्य–(भारतीयस्य भारतीययोः भारतीयानाम्)–षष्ठी

घ. प्रयोगशालायाम्–(प्रयोगशालायाम् प्रयोगशालयोः प्रयोगशालासु)

ङ. विजेता–(विजेता विजेतारौ विजेतारः–'विजेतृ' शब्द–प्रथमा)

च. उच्चपदम्–(उच्चपदम् उच्चपदे उच्चपदानि–'उच्चपद' शब्द नपुं–प्रथमा/द्वितीया)

छ. प्रशंसनीयम्–(प्रशंसनीयम् प्रशंसनीये–प्रशंसनीयानि–'प्रशंसनीय' शब्द–विशेषण)

ज. विदेशे–(विदेशे विदेशयोः विदेशेषु–विदेश शब्द-सप्तमी)

II. प्रत्येक वाक्य का ध्यानपूर्वक वाचन करें। और एकवचन में बदलें। ध्यान रहे–कर्त्ता के साथ क्रियापद में रूपान्तर आता है और विशेष्य/संज्ञापद के साथ विशेषण-पद में भी। (कर्त्ता क्रिया-पद समन्वय और विशेषण-विशेष्य समन्वय का नियम याद रखें।)

* कोष्ठक में दिए शब्द रूप अपेक्षित उत्तर का अंश नहीं। केवल आवृत्ति हेतु दिए गए हैं। किन्तु इस प्रकार का अभ्यास अतीव लाभप्रद होगा। तुलनात्मक दृष्टि से देखने का सुअवसर भी मिलेगा।

उत्तर– क. अहम् सफलः भविष्यामि।

(कर्त्ता) (विशेषण) (क्रियापद)।

ख. सः अपि सुख-दुःखम् अनुभविष्यति।

(कर्त्ता) (अव्यय) (कर्मपद) (क्रियापद)

ग. अहम् अनुगृहीतः अस्मि।

(कर्त्ता) (विशेषण) (क्रियापद)।

लिखितम्

1. प्रत्येक प्रश्न का वाचन ध्यानपूर्वक करें। रंगीन पद (प्रश्नवाचक पद) पर ध्यान दें। कोष्ठक में दिए गए विकल्पों को पढ़ें, पाठगत तथ्यों के आधार पर उचित विकल्प चुनें। लिखते समय वर्तनी की ओर ध्यान दें। कोष्ठकदत्त प्रत्येक विकल्प को ध्यान से पढ़ें।

उत्तर– क. प्राचीना ख. संस्कृतभाषा ग. चिकित्साशास्त्रे

घ. शून्यस्य ङ. प्रतिभासम्पन्नः च. ज्ञानस्य

छ. स्वशब्दभण्डारेण।

नोट– पूर्ण वाक्य के रूप में प्रत्येक उत्तर का मौखिक-अभ्यास श्रेयस्कर होगा।

2. प्रश्न पढ़ें, आशय समझें; सहायतार्थ पाठ में देखें।

उत्तर– क. जगदीशचन्द्रवसुना प्रमाणितम् यत् पादपेषु अपि जीवनम् अस्ति।

ख. दृढ़संकल्पाः वयम् स्व-देशम् उन्नतिपथं नेष्यामः लक्ष्यं च प्राप्स्यामः।

ग. देशस्य प्रगतिः अस्माकं लक्ष्यम्, अस्य गौरवं च अस्माकं ध्येयम्।

घ. स्वभावेन अतीव विनम्रः खेले च नितरां निपुणः सचिन् तेन्दूलकरः सर्वेषाम् स्नेहपात्रम् अस्ति।

अथवा

सचिन् तेन्दूलकरः स्वभावेन अतीव विनम्रः खेले च नितरां निपुणः अतः सर्वेषाम् स्नेहपात्रम् अस्ति।

ङ. डॉ० सी०वी० रमन्, रवीन्द्रनाथः ठाकुरः, हरगोविन्दः खुराना च नोबेल-पुरस्कार विजेतारः सन्ति।

3. मञ्जूषा में दिए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें। रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद के प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, आशय समझें। प्रसंगानुसार उचित पद मञ्जूषा से लेकर रिक्त स्थान भरें। प्रस्तुत अनुच्छेद पाठ से उद्धृत है।

उत्तर– वृक्षायुर्वेदे–(वाक्य में 'पराशरऋषिणा' तथा 'प्रतिपादितम्' शब्द आने के कारण उपयुक्त)।

जीवनम्–वाक्य में 'पादपेषु' तथा 'वर्तते' शब्द होने के कारण उचित।

सुखदु:खम्–'अनुभवन्ति' क्रियापद वाक्य में होने के कारण उचित।

प्रयोगशालायाम्–क्योंकि वाक्य में 'जगदीशचन्द्र-वसुना' और 'प्रमाणितम्' शब्द आया है।

उपलब्धिभि:–वाक्य में 'एताभि:' विशेषण-पद प्रयोग में आया है, उसके साथ 'उपलब्धिभि:' विशेष्य-पद लिंग, विभक्ति व वचन में समरूप है।

वैज्ञानिक:–वाक्य में 'आइन्सटाइन–महोदय:' होने के कारण उपयुक्त।

भारतीयानाम्–'अनुगृहीता:' के योग में प्रसंगानुसार उचित विकल्प।

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त अनुच्छेद का वाचन करें।

4. समानार्थक पदों का मेल करके वाचन करें।

उत्तर– ख. भूमौ–धरातले; ग. इयम्–एषा; घ. नितराम्–अतीव; ङ. न:–अस्माकम्; च. अखिलम् जगत्–सकल: संसार:।

5. प्रत्येक पाठांश ध्यानपूर्वक पढ़ें। प्रश्नोत्तर लिखते समय वर्तनी की ओर ध्यान दें।

उत्तर– (क) (*i*) संस्कृति: (**नोट**–'संस्कृति:' शब्द स्त्रीलिंग होने के कारण 'प्राचीना' (विशेषण)–स्त्रीलिंग)

(*ii*) संस्कृति:–('प्राचीना'–विशेषण-पद, कर्त्तापद 'संस्कृति:' का अद्यापि–अव्यय-पद; अत: दोनों में से कोई भी उचित विकल्प नहीं।)

(*iii*) षष्ठी बहुवचनम्–(मम, आवयो:, अस्माकम्)

(iv) अद्य + अपि (अ + अ = आ)

उत्तर– (ख) I. क. प्रतिभासम्पन्न: ('कीदृश:' के उत्तर में)

ख. ज्ञानस्य ('कस्य' के उत्तर में)

II. ज्ञानस्य उदय: अस्माकं देशस्य भूमौ अभवत्।

III. क. उदय:–[**ध्यान रहे**–वाक्य का कर्त्ता प्रथमा में होता है–(कर्तृवाच्य–Active Voice में)]

(ज्ञानस्य–सम्बन्ध कारक-षष्ठी–उदय: से सम्बन्ध; भूमौ–सप्तमी एकवचन, अधिकरण कारक पद; अत: इन दोनों में से कोई भी कर्त्ता पद नहीं हो सकता)

ख. भू धातुः, लङ् लकारः।

ग. वर्तते–(वृत् धातुः)

घ. सप्तमी, एकवचनम्–[यथा–मतौ (मूल शब्द–मति)]

ङ. प्रतिभासम्पन्नः–[**ध्यान रहे**–विशेषण में वहीं लिंग, विभक्ति व वचन होता है जो विशेष्य/संज्ञा पद में। अतः 'देशः' प्रथमा, एकवचन, पुल्लिंग होने के कारण विशेषण 'प्रतिभासम्पन्नः' समरूप है। (अस्माकम्–षष्ठी विभक्ति, सम्बन्धकारक पद 'देशः' से सम्बन्ध; वर्तते–क्रियापद। अतः दोनों में से कोई भी विशेषण-पद के रूप में उचित नहीं।)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. बन्दिनः अपि उद्धारयोग्याः सन्तिः ते न केवलं दण्डनीयाः।
2. कार्यसिद्धिः परिश्रमेण दृढ़संकल्पेन च सम्भाव्यते। अथवा परिश्रमेण दृढ़संकल्पेन विना कार्यसिद्धिः न सम्भाव्यते।
3. देशस्य उन्नति न केवलं प्रशासनस्य कार्यम् अस्ति अपि तु प्रत्येकं देशवासिनः अपि कर्त्तव्यम्/उत्तरदायित्त्वम् अस्ति।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

अब खेल खेलते हैं। कक्षा दो वर्गों में विभाजित हो जाए। एक-एक करके छात्र अधोलिखित प्रश्नों का उत्तर देंगे। पहले अध्यापिका एक वर्ग से पूछती है और शुद्ध उत्तर के लिए उसे एक अंक देती है, फिर दूसरे वर्ग की बारी आती है। इस क्रम से सारे प्रश्न पूछे जानें पर जो वर्ग अधिक अंक प्राप्त करता है वह विजयी होता है। (सहायता के लिए संकेत दिए गए हैं।)

उदाहरण देखें और समझें–उत्तर एक पद में दिया जाना है। प्रश्नवाचक शब्द के लिंग, वचन तथा विभक्ति का ध्यान रखें; यथा–यहाँ 'कस्य' के उत्तर में–**आयुर्वेदस्य–**पाँच अक्षर–उत्तर के लिए जितने वर्ग दिए गए हैं, उत्तर पद में उतने अक्षर हैं।

I.
1. – | च | र | कः |
2. | च | त्वा | र | –
3. | ऋग | वे | –
4. – | र्य | भ | ट्ट | : |
5. – | व्या | से | –
6. | म | हा | भा | – | त | स्य |
7. | अ | ष्टा | द | –
8. | भ | – | त | –
9. | भा | र | त | – | का | र | स्य |
10. | मु | ण्ड | को | – | नि | –
11. | ऋ | ष | य | –
12. – | ष्टा | द | श |
13. – | प | रा | श | र | –
14. | र | वी | न्द्र | – | थ | टै | गो | र | –
15. | सा | हि | त्य | –
16. | वि | – | मा | दि | त्य | –
17. | त | क्ष | शि | –
18. | सू | र्य | – | व | –
19. | का | लि | दा | सः |
20. | ढो | ल | क | –

II. नोबेल-पुरस्कार तथा इसके भारतीय विजेता

रवीन्द्रनाथ टैगोर पहले भारतीय हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार का सम्मान प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार इन्हें अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति 'गीताञ्जलि' के लिए साहित्य के क्षेत्र में 1913 में मिला था।

इनके अतिरिक्त कुछ और भारतीयों को भी नोबेल पुरस्कार मिला है। श्री चन्द्रशेखर वेंकट रमन् को भौतिकी (Physics) में, विद्युत् ज्ञान के लिए; श्री सुब्रह्मण्य चन्द्रशेखर को भौतिकी में, नक्षत्र-ज्ञान के लिए, श्री हरगोविन्द खुराना को आयुर्विज्ञान में जीन्स (genes) पर कार्य करने के लिए, श्री अमर्त्य सेन को लोक कल्याण-अर्थशास्त्र (Welfare Economics) में अनुपम काम करने के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। हाल ही में वेंकट रमन् रामकृष्णन् को रसायनशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया है।

मदर टैरेसा को (जो यद्यपि विदेश में जन्मी थीं किन्तु अब भारत की नागरिक बन चुकी थीं) यह पुरस्कार समाज में दरिद्रों की सेवा के लिए दिया गया था।

❐❐

6 मार्गोऽहम्

हिंदी अनुवाद (मैं मार्ग हूँ)

मैं मार्ग हूँ। मैं राजमार्ग (मुख्य मार्ग) हूँ। बहुत दूर तक चलता हूँ, लगातार चलता हूँ, दिन-रात चलता ही रहता हूँ।

कर्त्तव्य के मार्ग पर लगातार चलते हुए मैं बहुत कष्टों का अनुभव करता हूँ। किन्तु मैं उनकी परवाह नहीं करता (उन्हें नहीं गिनता)। यदि मैं अपना कर्त्तव्य न करूँ, तो लोग अपने गन्तव्य स्थान पर कैसे पहुँचेंगे। लोगों के कार्य पूरे हो जाएँ यह कामना मुझे कर्त्तव्यनिष्ठ बनाती है। इससे मुझे सन्तोष होता है। कर्त्तव्य पालन मेरा संतोष बढ़ा देता है।

मेरे कष्टों की क्या गणना? (मेरे कष्टों की बात मत पूछिए)। मेरे वक्षस्थल पर मोटरें, बसें, साइकिलें, तिपहिया वाहन और दूसरे अनेक प्रकार के वाहन आते-जाते रहते हैं। कैसे-कैसे वे मेरे ऊपर प्रहार (चोट) करते हैं। पथिक (मार्ग में चलने वाले लोग) कूड़ा फेंककर मुझे मलिन कर देते हैं। मेरे दोनों ओर खड़े पेड़ वाहनों के धुएँ के कारण कष्ट अनुभव करते हैं। यह देख मुझे भी दुख होता है। उनका कष्ट मेरा कष्ट है।

समय के साथ और यातायात (ट्रैफ़िक) के कारण मेरे शरीर पर घाव हो जाते हैं। इन गड्ढों को देखो। ये मेरे घाव हैं। वर्षा ऋतु में मुझे बहुत कष्ट होता है। मेरे ये घाव जल से पूरी तरह भर जाते हैं। कौन दूर करेगा मेरा कष्ट?

न मेरा कोई बन्धु। न कोई मेरा मित्र। न कोई मेरे साथ बात करता है। पास में खड़े पेड़ ही मेरे प्यारे संगी-साथी हैं। उनके हरे पत्ते और विचित्र फूल देख मेरा दिल खुश होता है। प्रकृति माता वर्षा के जल से मेरा मलिन मुख धोती है।

प्रिय छात्रो! क्या तुम लोग मुझे स्वच्छ और सुन्दर रखने का प्रयत्न करोगे? तुम लोगों पर ही मुझे विश्वास है। तुम लोग, देश के नेता, (मेरे) रक्षक बनकर मेरे कष्ट दूर करोगे।

उत्तराणि

मौखिकम्

1. **उदाहरण देखें**–'के' के उत्तर में 'पथिकाः' अर्थात् 'पथिकाः मार्गे अवकरं क्षिपन्ति'।

प्रश्न पढ़ें। प्रत्येक पद पर ध्यान दें। रंगीन पद के आधार पर कोष्ठक से उचित विकल्प चुनें। तत्पश्चात् सम्पूर्ण वाक्य में उत्तर दें।

उत्तर–क. मार्गस्य शरीरे यातायातेन व्रणाः जायन्ते।

ख. वर्षर्तौ (वर्षा–ऋतौ)* मार्गस्य महत् कष्टं भवति।

ग. गर्ताः जलेन परिपूर्णाः भवन्ति।

घ. वृक्षाः मार्गस्य प्रियसंगिनः।

ङ. प्रकृतिः मार्गस्य मलिनम् मुखं प्रक्षालयति।

च. मार्गस्य उपरि वाहनानि प्रहारं कुर्वन्ति।

छ. वृक्षाः वाहनानाम् धूम्रेण कष्टम् अनुभवन्ति।

प्रश्नवाचक तथा उत्तर में प्रयुक्त शब्द के लिंग, विभक्ति व वचन की ओर ध्यान दें। दोनों समान हैं।

लिखितम्

1. उदाहरण देखें। प्रश्न तथा उत्तर दोनों का वाचन करें। पाठ की सहायता से उत्तर लिखें।

उत्तर– क. जनानां कार्याणि सिध्यन्तु एषा कामना मार्गं कर्त्तव्यनिष्ठं करोति।

ख. वर्षर्तौ गर्ताः जलेन परिपूर्णाः भवन्ति–एतत् मार्गस्य कष्टम्।

ग. प्रकृतिमाता वर्षाजलेन मार्गस्य मलिनं मुखं प्रक्षालयति।

घ. वृक्षाणाम् हरितानि पत्राणि विचित्राणि च कुसुमानि दृष्ट्वा मार्गस्य चित्तं प्रसीदति।

नोट–पाठ में से उत्तर लिखते समय शब्दों में प्रसंगानुसार आवश्यक फेर–बदल करना न भूलें; यथा–सर्वनाम के स्थान पर संज्ञा पद–'माम्' के स्थान पर 'मार्गम्' 'तेषां' के स्थान पर 'वृक्षाणाम्' इत्यादि। पाठ का वाचन करते समय कौन–सा सर्वनाम किस के लिए प्रयुक्त हुआ है–इस बिन्दु को भलीभाँति समझ लें।

2. पाठ के इस अनुच्छेद का वाचन ध्यानपूर्वक कर लें। तत्पश्चात् रिक्त स्थान भरें।

उत्तर– कर्त्तव्यपथेन, कष्टानि, गणयामि, कुर्याम्, जनाः, कार्याणि, कामना, करोति।

* **ध्यान रहे–**'ऋतु' शब्द पुल्लिंग है। अतः प्रश्न में 'कस्मिन्' (पुल्लिंग सर्वनाम) का

3. I. विपरीतार्थक-पद–उच्चारण करें।

उत्तर– ख. मलिनम् – स्वच्छम्, निर्मलम्, ग. यान्ति – आयान्ति,
घ. आपदाम् – सम्पदाम्, ङ. मित्रम् – रिपुः।
अवधेयम्–या धातु-(जाना, to go)–'यान्ति'–लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन–(जाते/जाती हैं)।
('यातायात' शब्द 'या' धातु से बना भाववाचक संज्ञा पद है)

II. समानार्थक-पद–मेल करते समय उच्चाकरण करें।

उत्तर– ख. सततम् – निरन्तरम्; ग. रमणीयम् – सुन्दरम्;
घ. जायते – भवति; ङ. आपदाम्* – कष्टानाम्।

4. I. वाक्य का वाचन करते समय प्रत्येक पद पर ध्यान देना हितकर होगा।

उत्तर– **क.** (*i*) मार्गः–(**ध्यान रहे**–'अहम्' शब्द 'मार्गः' के लिए प्रयुक्त हुआ है।)
(*ii*) कर्त्तव्यपथेन–'केन' के उत्तर में–(दोनों पद समान विभक्ति, वचन तथा लिंग में)
(*iii*) कष्टानि–'कानि' के उत्तर में (दोनों पद कर्मकारक, द्वितीया, बहुवचन, नपुंसकलिंग)

ख. (*i*) बहूनि–('अनेकानि' की भाँति नपुंसकलिंग, बहुवचन, कर्मकारक में)
(*ii*) 'अहम्'–(कर्त्ता–उत्तम पुरुष एकवचन, क्रियापद 'अनुभवामि' के साथ)
(*iii*) कष्टानि–('बहूनि'–विशेष्य-पद)

उत्तर– **II.** (*i*) द्वितीया विभक्तिः क्योंकि 'उभयतः' के योग में द्वितीया का प्रयोग होता है। (यथा–नदीम् उभयतः वृक्षाः सन्ति)
(*ii*) (अ) कष्टम् – कर्म पद अतः द्वितीया विभक्ति।
(आ) भू – (अनु + भू → अनुभवति)

---

* यहाँ मूल शब्द 'आपद्' है, 'आपदाम्'–षष्ठी बहुवचन रूप है। यह हलन्त शब्द है; जैसे–सम्पद्, उपनिषद्, संसद् आदि। सविस्तार चर्चा अगली कक्षा में। अभी इतना जान लें कि यहाँ 'आपदा' शब्द नहीं है।

(*iii*) (अ) वृक्षाणाम्–['तेषां कष्टम् मम कष्टम्'–इस वाक्य में 'तेषाम्' पद वृक्षों के लिए (वृक्षाणाम् कृते) प्रयुक्त हुआ है।]

(आ) वृक्षाणाम् कष्टम् मम कष्टम्। [तेषाम् (उनका) अर्थात् वृक्षाणाम् (वृक्षों का)]

5. उदाहरण देखें–'विश्वासः'–एकवचन; शेष पद बहुवचन में।

उत्तर– क. हरितानि–विशेषण-पद; शेष संज्ञा पद। (नपुंसकलिंग, बहुवचन)

ख. मार्गम्–पुल्लिग पद–द्वितीया विभक्ति; शेष नपुंसकलिंग पद।

उत्तर 6. क. ममापि–(अ + अ = आ) ख. ममोपरि–(अ + उ = ओ)

ग. यदि + अहम् –(इ – य्) घ. वर्षर्तौ–(आ + ऋ = अर्)

ङ. कः = अपि–(अः – ओ, अ – ऽ) च. मार्गोऽहम्–(अः – ओ, अ–ऽ)

देखें–ये सभी शब्द पाठ में आए हैं।

(**विस्तार के लिए देखें**-'परिशिष्टम्' में सन्धिबोधः।)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. कष्टस्य भयात् स्वकर्त्तव्यं कदापि न त्यजेत्।
2. कर्त्तव्य–पालनेन मार्गस्य संतोषः जायते। अथवा मार्गः कष्टानि सोढ्वा स्वकर्त्तव्यं पालयति; अनेन अस्य सन्तोषः जायते।
3. मार्गः स्वच्छः रमणीयः च स्यात्। एतत् प्रत्येकं नागरिकस्य कर्त्तव्यम्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

यह अभ्यास विशेषतः वाक्य-रचना की योग्यता बढ़ाने हेतु बनाया गया है। चित्र वर्णन की दृष्टि से मञ्जूषा में दिए शब्द पढ़ें, अर्थ समझ लें। एक-एक करके वाक्यों को, रिक्त स्थान छोड़कर पढ़ें, आशय समझकर उचित पद चुनें।

उदाहरण देखें–'बसस्थानकस्य'-(बस–स्टॉप का) शब्द का 'चित्रम्' से सम्बन्ध, अतः षष्ठी विभक्ति पद–उचित प्रयोग।

चित्रवर्णन को सरल तथा रोचक बनाने हेतु अध्यापक/अध्यापिका पहले

चित्र पर आधारित सरल प्रश्न इस प्रकार पूछें, कि छात्र/छात्राएँ मञ्जूषादत्त शब्दों की सहायता से सरल व संक्षिप्त उत्तर संस्कृत में दे सकें; यथा–

एतत कस्य चित्रम् अस्ति?	एतत् बसस्थानकस्य चित्रम् अस्ति।
अत्र जनाः किं कुर्वन्ति?	अत्र जनाः प्रतीक्षन्ते।
जनाः किमर्थं प्रतीक्षन्ते?	जनाः बसयानम्/बसयानाय प्रतीक्षन्ते।
मार्गे कानि गच्छन्ति?	मार्गे वाहनानि गच्छन्ति। इत्यादि।

उत्तर– क. प्रतीक्षन्ते–(प्रतीक्षा करते हैं)–कर्त्ता-जनाः (बहुवचन) तथा कर्मपद-बसयानम्-के साथ उचित क्रियापद-वचन की दृष्टि से कर्त्तापद से समन्वय।

ख. (*i*) युवकः (युवक)–एकः (पुल्लिंग)–विशेषण-पद के साथ पुल्लिग विशेष्य-पद एकवचन।

(*ii*) युवती–(युवती)–एका (स्त्रीलिंग)–विशेषण-पद के साथ स्त्रीलिंग विशेष्य-पद एकवचन।

ग. (*i*) वाहनानि (वाहन-बहुवचन)–क्रियापद-'गच्छन्ति'–का कर्त्ता-बहुवचन।

(*ii*) आगच्छन्ति (आते हैं) – 'च' होने के कारण दो क्रियापद साथ-साथ यथा-'पठति लिखति च'।

घ. बसयानम्–(एकवचन)–क्रियापद-'आगच्छति' (एकवचन) का कर्त्ता (एकवचन)।

ङ. (*i*) महिले–(महिलाएँ-द्विवचन)–'द्वे' (स्त्रीलिंग)–विशेषण-पद के योग में।

(*ii*) आरोहन्ति–(चढ़ते हैं)–'एकः पुरुषः, द्वे महिले च'–वाक्य में कर्त्ता बहुवचन होने के कारण क्रियापद 'आरोहन्ति'–(बहुवचन)।

(**ध्यान दें–**आ + रुह् धातु के साथ 'यानम्'–द्वितीया विभक्ति पद का प्रयोग।) रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त सहज रीति से वाचन करें।

❒❒

7 श्लोक-समुच्चयः

हिंदी अनुवाद (श्लोक-संग्रह)

1. सदा अभिवादनशील (सदा दूसरों का अभिवादन करने वाले) व्यक्ति की और वृद्धजनों के प्रति सेवा-भाव रखने वाले की आयु, विद्या, यश और बल–इन चारों में वृद्धि होती है।

   अर्थात् जो मनुष्य विनयशील है, सब का आदर-सम्मान करता है, मिलनसार है, निर्बल असहाय वृद्ध लोगों की सेवा करने के लिए तत्पर रहता है, उसे बहुत कुछ मिल जाता है। उसकी कीर्ति फैलती है, वह आयुष्मान, बलवान और विद्वान बन जाता है, क्योंकि उसे उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ मिलती हैं। सद्सम्पर्क बढ़ने से ज्ञान में भी वृद्धि हो जाती है।

   भाव–सबके प्रति आदर-भाव और वृद्ध-सेवा–ये गुण व्यक्ति को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करते हैं। अतः सबका अभिवादन और बड़े-बूढ़ों की सेवा करनी चाहिए।

2. माता, पिता और मित्र–ये तीनों स्वभाव से ही हमारे हितेच्छु (हित चाहने वाले) होते हैं। अन्य लोग तो अपने कार्य के स्वार्थवश हमारे हित की कामना करने लगते हैं।

   अर्थात् माता, पिता और मित्र वास्तव में हमारे हितैषी होते हैं। इनके अतिरिक्त यदि कोई और हमारे हित की बात कहता है या इस दिशा में कोई कार्य करने के लिए आतुर दिखाई देता है, तो समझ लें कि वह किसी स्वार्थ-पूर्ति के लिए ऐसा कर रहा है। ऐसी स्थिति में विवेक से काम लेना, (सतर्क रहना) उचित होगा।

   भाव–सच्चे हितैषी और अपना उल्लू सीधा करने के लिए हितकामना करने वालों में भेद समझ लेना चाहिए।

3. जो पीठ पीछे हमारा काम बिगाड़े, किन्तु मुँह पर मीठी-मीठी बातें करे, ऐसे मित्र को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह ऐसा विष का घड़ा है, जिसके ऊपरी भाग में तो दूध है, किन्तु अन्दर ज़हर भरा है।

अर्थात् कुछ लोग दोस्ती और स्नेह का दिखावा करते हैं; बातें तो मित्रों जैसे करते हैं, किन्तु पीठ पीछे शत्रु बनकर हमारे काम में रुकावटें उत्पन्न करते हैं, ऐसे मित्र का सर्वथा परित्याग करना ही श्रेयस्कर है। ऐसे मित्र से लाभ कम और हानि अधिक होने की सम्भावना बनी रहती है।

भाव–सच्चे मित्र की पहचान होना आवश्यक है।

4. कुटिल स्वभाव वाला व्यक्ति, यदि प्रिय वचन बोले तो भी विश्वास के योग्य नहीं होता। उसकी जिह्वा पर मधु, किन्तु हृदय में ज़हर भरा होता है।
   अर्थात् दुष्ट स्वभाव वाले व्यक्ति पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा व्यक्ति स्नेहमयी मधुर बातें भले ही करे, किन्तु उसके मन में छल-कपट भरा रहता है। ऐसे व्यक्ति पर विश्वास करना मूर्खता है। वह कभी भी धोखा दे सकता है, क्योंकि उसका स्वभाव ही ऐसा है कि औरों को छलने में उसे आनन्द आता है।
   भाव–चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले दुर्जन से सावधान रहने में ही हमारा हित है।

5. मुख्यतया लोगों के स्वभाव की परख की जाती है, उनके अन्य गुणों (qualifications) की नहीं। गुणों की अपेक्षा मनुष्य का स्वभाव प्रमुख (अधिक महत्त्वपूर्ण) माना गया है।
   अर्थात् यदि विद्या, कला-कौशल अथवा अन्य योग्यताएँ अथवा गुण व्यक्ति में विद्यमान हों, किन्तु वह सुशील न हो, तो ऐसे व्यक्ति की गणना श्रेष्ठ-वर्ग में नहीं की जाती। प्रयास द्वारा योग्यता विकसित की जा सकती है, किन्तु स्वभाव नहीं बदला जा सकता। उदाहरणतः यदि कोई घमण्डी स्वभाव का है, औरों के साथ मिल-जुलकर काम नहीं करना चाहता, तो वह ऐसे पद के योग्य नहीं माना जाएगा, जहाँ एकजुट होकर काम करना अनिवार्य है, चाहे उसने उस क्षेत्र में कितनी भी उच्च शिक्षा क्यों न पाई हो। अतः अच्छा स्वभाव होना सबसे बड़ा गुण समझा जाता है।*
   भाव–योग्यता की परख मनुष्य के स्वभाव के आधार पर की जानी चाहिए।

---

* आज के युग में बड़ी-बड़ी संस्थाएँ किसी पद पर व्यक्ति की नियुक्ति करने के पूर्व उसके स्वभाव को ही अधिक प्रधानता देती हैं। शिक्षा तो सभी पा लेते हैं, किन्तु सफल आजीविका हेतु अच्छा स्वभाव बहुत महत्त्व रखता है।

6. विदेशों में विद्या ही धन है, संकट के समय सुमति (अच्छी बुद्धि) ही धन है, परलोक में इहलोक में किया गया पुण्यकर्म ही धन है, किन्तु सुशीलता अर्थात् अच्छा आचरण (सदाचार) सब जगह धन है (अत्यधिक महत्त्व रखता है)।

अर्थात् विदेश में व्यक्ति का निर्वाह तभी सम्भव है यदि उसके पास कोई विशेष ज्ञान हो, जो उसकी आजीविका का साधन बन सके। इसलिए विद्या को धन अर्थात् महत्त्वपूर्ण माना गया है। विपत्ति आने पर प्रायः लोग घबरा जाते हैं और संकट को पार करने का उपाय नहीं ढूँढ़ पाते, किन्तु यदि धैर्य व सुबुद्धि से काम लें, तो हर विपदा का समाधान निकाला जा सकता है। इसीलिए आपत्ति काल में सुमति को धन कहा है। इहलोक (संसार) में व्यक्ति भौतिक संपदा संजोने में लगा रहता है, किन्तु यह वैभव परलोक में (मृत्यु के उपरान्त) काम नहीं आता। यदि कुछ काम आता है तो इस जीवन में अर्जित पुण्य कर्म। सारांश यह कि विदेश में विद्या, संकट में सुबुद्धि और परलोक में पुण्य इष्ट फल प्रदान कराता है, किन्तु व्यक्ति का आचरण सब परिस्थितियों में अच्छे परिणाम दिलाता है। अतः सदाचार सबसे अधिक मूल्यवान है।

भाव–सुशील व्यक्ति सर्वत्र सफल होता है। अतः सदाचारी बनो।

7. जिसके जीवित रहने से अनेक को जीवन प्राप्त होता है, वह (व्यक्ति) तो जीता रहे (दूसरों का सहारा बना रहे)। अपनी उदरपूर्ति तो अपनी चोंच से कौवा भी कर लेता है।

अर्थात् स्वार्थ-सिद्धि तो पशु-पक्षी भी कर लेते हैं, किन्तु मनुष्य का जीवन तभी सफल होता है जब वह अपने लिए नहीं, अपितु औरों के लिए जीता है, औरों का आश्रय बन जाता है। जो दूसरों का सहारा बन जाता है, उनको प्रेरणा देता है, उनके हित के लिए कार्य करता है, जीवन तो उसका सफल है। ऐसा जीवन श्रेष्ठ है।

भाव–परोपकार करने में जीवन की सार्थकता है।

8. भली-भाँति देखकर पाँव रखना चाहिए, कपड़े से छना हुआ पानी पीना चाहिए; जो शास्त्र-सम्मत हो वही बात कहनी चाहिए, मन से पवित्र किया हुआ आचरण करना चाहिए।

अर्थात् जीवन में व्यक्ति को उचित कार्य शैली अपनानी चाहिए। प्रत्येक काम विधिपूर्वक होना चाहिए–यथा कदम बढ़ाने से पहले मार्ग की पहचान कर लेनी चाहिए; पीने का पानी छानकर स्वच्छ कर लेना हितकर है। शास्त्रों को प्रमाण मानकर बात कही जानी चाहिए–ये सब नियम सर्वसम्मत हैं। किन्तु आचरण के विषय में व्यक्ति अपने अन्तःकरण की आवाज़ सुने और तद्नुसार व्यवहार करे, क्योंकि विवादास्पद परिस्थितियाँ उत्पन्न होने पर शुद्ध अन्तःकरण की पुकार सही मार्ग दिखाती है।

भाव–व्यक्ति अन्य कार्यों में बाह्य साधनों पर निर्भर रहे, किन्तु व्यवहार अपने शुद्ध अन्तःकरण के मार्गदर्शन में ही करे; अपनी अन्तरात्मा में झाँककर देखने से ही सही मार्ग दिखाई दे जाता है।

उत्तराणि

श्लोकों का वाचन करें। प्रत्येक शब्द का अर्थ समझ लें।

मौखिकम्

श्लोकांशों का परस्पर मेल करने से पूर्व पाठगत श्लोकों का वाचन-पुनर्वाचन कर लें, जिससे त्रुटि न हो। उदाहरण देखें और समझें। (यदि श्लोक वाचन के समय प्रत्येक शब्द का अर्थ तथा श्लोक का भाव समझ लें, तो अभ्यास सरल हो जाएगा)

उत्तर– ख. परलोके धनं धर्मः, शीलं सर्वत्र वै धनम्। (दोनों श्लोकांशों में 'धनम्' का उल्लेख)

ग. कार्यकारणतश्चान्ये भवन्ति हितबुद्धयः।

घ. चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।

ङ. मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि च हलाहलम्।

च. वर्जयेत् तादृशं मित्रं, विषकुम्भं पयोमुखम्।

लिखितम्

1. प्रत्येक प्रश्न का वाचन ध्यान से करें। रंगीन पद पर विशेष ध्यान दें। कोष्ठक में दिए गए पदों का वाचन करें। पाठ के आधार पर उचित विकल्प चुनकर एक पद में उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न

का सम्पूर्ण वाक्य अथवा श्लोकांश के रूप में उत्तर देने का मौखिक-अभ्यास हितकर होगा।

उदाहरण देखें–'कस्य' के उत्तर में 'अभिवादनशीलस्य' अर्थात् 'अभिवादनशीलस्य चत्वारि वर्धन्ते'। (**देखें श्लोक–**अभिवादनशीलस्य .... आयुर्विद्यायशोबलम्)।

उत्तर– क. मधु – (मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे, हृदि तु हलाहलम्)

ख. मित्रम् – (वर्जयेत् तादृशं मित्रम्, विषकुम्भम् पयोमुखम्)

ग. स्वभावः – (स्वभावो हि गुणान् सर्वान् अतीत्य मूर्ध्नि वर्तते)

घ. मतिः – (...व्यसनेषु धनम् मतिः)

ङ. वस्त्रपूतम् – (वस्त्रपूतं जलं पिबेत्)

च. विदेशेषु – (विदेशेषु धनं विद्या)

छ. मनःपूतम् – (मनःपूतम् समाचरेत्)

उत्तर 2. क. परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत् तादृशम् मित्रम्, विषकुम्भम् पयोमुखम्।।

अथवा

परोक्षे कार्यहन्तारं, प्रत्यक्षे च प्रियवादिनम् मित्रं वर्जयेत्।

ख. दुर्जनः प्रियवादी च नैतद् विश्वासकारणम्।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदि च हलाहलम्।।

अथवा

दुर्जनः प्रियवादी च विश्वासकारणम् न भवति, यतः तस्य जिह्वाग्रे मधु तिष्ठति, परं हृदये हलाहलम् वर्तते।

3. रिक्त स्थान छोड़कर प्रत्येक श्लोकांश पढ़ें। आशय समझें। कोष्ठक में दिए गए विकल्पों का वाचन करें और उचित विकल्प चुनकर श्लोकांश पूरा करें।

उत्तर– क. दृष्टिपूतम्–(दृष्टि से पवित्र किया हुआ अर्थात् भली–भाँति देखकर) –शेष श्लोकांश का आशय–पैर रखना चाहिए।

ख. वर्धन्ते–वाक्य का कर्त्ता 'चत्वारि' (बहुवचन) अत: बहुवचन क्रियापद उचित (वर्धते–एकवचन; वर्धेते–द्विवचन)।

ग. शीलं सर्वत्र वै धनम्–श्लोकानुसार।

घ. स्वभावात्–पाठगत श्लोकानुसार।

ङ. पिबेत्–श्लोकानुसार–(**ध्यान रहे**–जहाँ कर्त्ता का उल्लेख न करते हुए सामान्य निर्देश अथवा सिद्धान्त की बात कही जाती है तो विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन का क्रियापद प्रयोग में लाया जाता है; **यथा**–समये पठेत् (समय पर पढ़ना चाहिए), समये च क्रीडेत् (और समय पर खेलना चाहिए।)

4. समानार्थक पदों का मेल करते समय उच्चारण करें। उदाहरण देखें और समझें।

उत्तर– ख. बहव: – अनेके, ग. कुरुते – करोति, घ. अन्ये – इतरे, ङ. व्यसनेषु – संकटेषु, च. मूर्ध्नि – सर्वोपरि/मस्तके।

5. मञ्जूषा में दिए गए शब्दों का वाचन कर लें, अर्थ समझ लें। रिक्त स्थान छोड़कर श्लोक पढ़ें, आशय समझकर, उचित पद चुनकर, श्लोक पूरा करें। (पाठगत श्लोक का वाचन करते समय यदि प्रत्येक पद का अर्थ और श्लोक का भाव भली-भाँति समझ लें, तो श्लोकपूर्ति में कठिनाई नहीं आएगी।)

उत्तर– परोक्षे (पीठ पीछे), प्रत्यक्षे (सामने); वर्जयेत् (छोड़ देना चाहिए), विषकुम्भम् (विष का घड़ा अर्थात् हानि पहुँचाने वाला, काम बिगाड़ने वाला।)

6. श्लोक के शब्दों का क्रम जब इस प्रकार होता है, जैसे गद्य-लेखन में, तो उसे अन्वय (Prose-order) कहते हैं।

सर्वप्रथम पाठ में आए श्लोक का ध्यानपूर्वक वाचन करें। तत्पश्चात् मञ्जूषा में दिए शब्दों को पढ़ें और समझें, फिर रिक्त स्थान छोड़कर श्लोक का अन्वय पढ़ें, आशय समझकर उचित पद चुनें और रिक्त स्थान भरें।

उत्तर– परीक्ष्यन्ते, गुणाः, स्वभावः, गुणान्, वर्तते।

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त वाचन करें देखें, श्लोक का अर्थ अधिक स्पष्ट हो गया है। सबके (सर्वस्य) निश्चय ही (हि) स्वभाव (स्वभावाः) परखे जाते हैं (परीक्ष्यन्ते), दूसरे गुण (इतरे गुणाः) नहीं। (परखे जाते–परीक्ष्यन्ते) स्वभाव निश्चय ही (स्वभावः हि) सर्वान् गुणान् (सब गुणों को) अतीत्य (पारकर/लाँघकर) सर्वोपरि (मूर्ध्नि) है (वर्तते)।

(**ध्यान दें–**अन्वय करते समय श्लोक के शब्दों में सन्धि–विच्छेद किया जाता है; यथा–स्वभावो हि → स्वभावः हि, नेतरे → न इतरे)।

7. श्लोक का वाचन करें, अर्थ समझें। प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़कर उत्तर दें।

उत्तर– I. यः दुर्जनः प्रियवादी च, सः विश्वासयोग्यः न भवति।

II. क. हलाहलम् ख. मधु

III. क. हलाहलम् ख. स्था धातुः, लट्लकारः

8. बाईं ओर श्लोकांश दिए गए हैं, और दाईं ओर उनके भावार्थ। प्रत्येक श्लोकांश को पढ़ें, आशय समझें। दाईं ओर दिए गए भावार्थ पढ़ें। अर्थ समझ कर श्लोकांश का उचित भावार्थ से मेल करें।

उत्तर– क. चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्। (उसकी चार चीज़ें बढ़ती हैं–आयु, विद्या, यश और बल)

–सः आयुष्मान्, विद्वान्, यशस्वी बलवान् च भवति।

(वह आयुष्मान, विद्वान, यशस्वी और बलवान बन जाता है।)

ख. यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवतु। (जिसके जीवित रहने पर बहुत से लोग जीते रहते हैं अर्थात् जिस पर अनेक लोगों का जीवन निर्भर है, वह जीवित रहे।)

–यः परार्थाय जीवति तस्य जीवनम् सार्थकम्। (जो दूसरों के हित के लिए जीता है, उसका जीवन सार्थक है।)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. मातुः पितुः च आज्ञा पालनीया यतः माता पिता च/पितरौ स्वभावात् संततेः हितम् इच्छतः। (संततेः = सन्तान का)
2. नरस्य जीवनं परार्थाय स्यात् न तु स्वार्थाय।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

श्लोकोच्चारण में प्रत्येक पद के शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण की ओर विशेष ध्यान दें। ऐसा करने से न केवल वाचन में आनन्द आएगा, प्रत्युत श्रवण भी मधुर लगेगा और भाषा-बोध भी सुगम होगा।

❑❑

8 केरल-प्रदेशः

हिंदी अनुवाद (श्लोक-संग्रह)

अध्यापिका – छात्रो, भारत विशाल देश है। भारत में गणतंत्र राज्य है। यहाँ उनतीस राज्य और सात केन्द्र-प्रशासित प्रदेश हैं। केरल राज्य इनमें से एक है। तुम लोग इसके विषय में कुछ जानते हो?

छात्र – मैडम, यह राज्य भारत के दक्षिण भाग में स्थित है, बहुत ही सुन्दर और पर्यटकों का आकर्षण है। इसके विषय में 'देव का अपना देश' ऐसा विज्ञापन यहाँ वहाँ (अर्थात् सब जगह) दिखाई देता है। (हम देखते हैं)

अध्यापिका – यह सच है। इस राज्य के एक ओर अरब सागर और दूसरी ओर पर्वत शृंखला है। यहाँ प्राकृतिक दृश्य अनुपम है। प्रकृति की सुन्दरता, घने जंगल, समुद्र का तट रम्य जलप्रपात (झरने) इसको सुन्दर बना देते हैं। सब जगह हरियाली दिखाई देती है। शान्ति विराजमान है। ऐसा प्रतीत होता है कि देवता यहाँ रहते हैं।

छात्र – मैडम, इस राज्य की राजधानी क्या है?

अध्यापिका – तिरुवनंतपुरम् इसकी राजधानी है। कोच्चि एक और प्रसिद्ध नगर है।

छात्र – केरलवासियों का प्रमुख उत्सव क्या है?

अध्यापिका – ओणम् यहाँ के लोगों का प्रमुख उत्सव है। यह कृषि उत्सव है। उत्सव के समय सारे राज्य में कहीं सुसज्जित हाथियों की शोभा यात्रा कहीं सर्पनौका प्रतियोगिताएँ और कहीं विविध पारम्परिक खेल आयोजित किए जाते हैं। लोग नए वस्त्र धारण करते हैं, विशिष्ट भोजन तैयार करते हैं। घर के आंगन में महिलाएँ नाना वर्णों के फूलों से पुष्प-सज्जा करती हैं। शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य नाटक गीता आदि के अनेक कार्यक्रम जनजीवन में आनंद का सञ्चार करते हैं।

छात्र – इस उत्सव को लेकर कोई लोककथा प्रचलित है, ऐसा सुनने में आता है।

अध्यापिका – हाँ! प्राचीनकाल में महाबलि नाम का राजा था। वह असुरों का राजा था किन्तु स्वभाव से दयालु और दानशील था। उसकी दानशीलता की परीक्षा लेने के लिए एक बार विष्णु वामन (बौने) के रूप में आए। अति दानशीलता के कारण वह विष्णु द्वारा पाताल लोक में भेज दिया गया। प्रजा का दर्शन करने वह प्रजाप्रिय (राजा) प्रतिवर्ष राज्य में आते हैं, ऐसी लोगों की मान्यता है। ओणम् उत्सव उस राजा के स्वागत हेतु उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। लोग प्रसन्न होकर अपने प्रिय राजा के लिए उत्साहपूर्वक उत्सव की तैयारी करते हैं।

छात्र – मैडम! नौका प्रतियोगिता के विषय में हम सुनने को उत्सुक हैं।

अध्यापिका – ये प्रतियोगिताएँ बहुत लोकप्रिय हैं। प्रतियोगिता में अनेक सुसज्जित अलंकृत नौकाएँ होती हैं। नौका की आकृति सर्प की भाँति होती है, इसलिए सर्पनौका नाम है। प्रत्येक नौका में सौ से अधिक नाविक होते हैं जो बड़े कौशल से नाव को चलाते हैं। दो तीन जन गीत गाते हैं और ढोल बजाते हैं। दृश्य बहुत सुन्दर होता है।

छात्र – इस प्रदेश की भाषा क्या है और जनजातियों का क्या उद्योग है?

अध्यापिका – मलयालम् केरलवासियों की भाषा है। अनेक अंग्रेज़ी बोलने वाले भी हैं। कृषि, मछली का व्यापार, और नारियल का व्यापार यहाँ की जनजातियों के मुख्य उद्योग हैं।

लोग संगीतप्रिय हैं। कथकली प्रदेश का शास्त्रीय नृत्य है। इस नृत्य की वेशभूषा क्लिष्ट है पर विचित्र रंगों वाली है। यह नृत्य अभिनय प्रधान है अर्थात् इस नृत्य में अभिनय की प्रधानता होती है। नर्तक विविध मुद्राओं से भाव प्रकट करता है।

छात्र – इस प्रदेश की विशिष्टता क्या है?

अध्यापिका – साक्षरता (literacy) इसकी मुख्य विशेषता है। साक्षरता के विषय में इस राज्य का समस्त देश में प्रथम स्थान है। महिलाएँ सुशिक्षित हैं और परिवार में सम्मान पाती हैं। अनेक परिचारिका वृत्ति (Nurse's Profession) अपनाती हैं। यह प्रदेश आयुर्वेद की भूमि है। इसके हरे-भरे वनों में ओषधियाँ सुलभ हैं और जलवायु भी अनुकूल है। अनेक रोगी स्वास्थ्य लाभ के लिए पाश्चात्य देशों से भी यहाँ आते हैं। अनेक आयुर्वेद चिकित्सा संस्थान (institutions) यहाँ विश्व विख्यात हैं।

छात्र — हमें भी शैक्षणिक भ्रमण के लिए केरल अवश्य जाना चाहिए।

अध्यापिका — ठीक ही कहा गया है–**'देवता का अपना देश'**, सच में।

उत्तराणि

मौखिकम्

प्रस्तुत प्रश्न पाठाधारित हैं। कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक पद में दें।

उत्तर– क. विशालः ख. नवविंशतिः ग. दक्षिणभागे
घ. तिरुवनंतपुरम् ङ. ओणम् च. महाबलिः
छ. असुरराजः

लिखितम्

उत्तर 1. I. सम्बन्धवाचक शब्द

ख. पर्यटकानाम् आकर्षणम्
ग. गजानाम् शोभायात्रा
घ. समुद्रस्य तटम्
ङ. केरलवासिनाम् भाषा
च. नौकायाः आकारः

II. विशेषण — विशेष्य शब्द

विशेषण	विशेष्य शब्द
ख. प्राकृतिकम्	दृश्यम्
ग. रम्याः	जलप्रपाताः
घ. नवीनानि	वस्त्राणि
ङ. अलङ्कृताः	नौकाः
च. हरितेषु	वनेषु

उत्तर 2. क. केरल–प्रदेशस्य विषये 'देवस्य स्वीयः देशः' इति विज्ञापनं पश्यामः।

ख. ओणम् इति उत्सव–काले विविधाः समारोहाः भवन्ति तद् यथा गजानां शोभायात्रा, सर्पनौका–प्रतियोगिताः, पारम्परिक–खेलाः, शास्त्रीय नृत्य–लोकनृत्य–गीतादीनां च कार्यक्रमाः।

ग. राजा महाबलिः पुत्रवत् स्नेहेन प्रजाः अपालयत्।

घ. नौका–प्रतियोगितायां सुसज्जिताः अलङ्कृताः सर्पाकाराः नौकाः सन्ति।

ङ. नौकायां स्थिताः जनाः कौशलेन नौकां चालयन्ति। तेशु केचित् गीतं गायन्ति ढक्कां च वादयन्ति।

उत्तर 3. प्रस्तुत अनुच्छेद पाठाधारित है। मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें। रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद के वाक्य पढ़ें और प्रसंगानुसार उचित पद चुनकर वाक्यों को पूरा करें।

शिक्षितः — 'प्रदेशः' विशेष्य पद के साथ उचित विशेषण, समरूप भी।

जनाः — 'सुशिक्षिताः' विशेषण के साथ उचित विशेष्य पद, दोनों पद समरूप।

सम्मानम् – 'लभन्ते' का कर्मपद–द्वितीया में।

प्रकृतिः – 'रमणीया' विशेषण के साथ उचित संज्ञा पद, समान लिंग व विभक्ति में।

जनाः – क्रियापद 'आगच्छन्ति'–बहुवचन के साथ उचित कर्त्तापद बहुवचन में।

आयुर्वेद-चिकित्सा-पद्धत्यै–(आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के लिए)– प्रयोजन (purpose) के अर्थ में चतुर्थी 'विख्यातम् जातम्' (प्रसिद्ध हो गया) के साथ।

केरलवासिनाम् (केरलवासियों का)–'उत्सव' के साथ सम्बन्ध।

उत्तर 4. I. (क) महाबलिः (ख) स्नेहेन/पुत्रवत्

(ग) विष्णुना (घ) सुखिनः

II. (क) राजा महाबलिः दयालुः दानशीलः च आसीत्।

(ख) ओणम् इति उत्सवः राज्ञः महाबलेः स्वागतार्थं सोल्लासम् आयोज्यते।

III. (क) अकरोत् (ख) (*i*) सर्वे (*ii*) सुखिनः

(ग) (*i*) जनाः–कर्त्तापद प्रथमा में होता है; 'तस्य' षष्ठी विभक्ति पद है; 'सर्वे' यहाँ सार्वनामिक विशेषण है 'जनाः' का–अतः ये दोनों पद कर्त्ता नहीं हो सकते।

(*ii*) राज्ञः / महाबलेः

(*iii*) अ. .... तयोः तेषाम्

ब. सुखी सुखिनौ ....

उत्तर 5. क. विशालः – 'देशः'–पुल्लिंग, प्रथमा एकवचन शब्द का विशेषण तदनुसार।

ख. दृश्यम् – 'दृश्य' शब्द नपुंसकलिंग होता है; वाक्य में उसके विशेषण पद 'प्राकृतिकम्' तथा 'अतुल्यम्' भी नपुंसकलिंग एकवचन में हैं।

ग. कृषि-उत्सवः – पुल्लिंग, प्रथमा विभक्ति एकवचन पद उचित।

घ. ओषधयः — मूल शब्द 'ओषधि' इकारान्त पुंल्लिग शब्द, प्रथमा बहुवचन में उचित रूप।

ङ. प्रजाः — प्रजा शब्द आकारान्त–द्वितीया बहुवचन–कर्म पद; 'लता' की भाँति (लताम् लते लताः)

उत्तर 6. पाठ का वाचन ध्यानपूर्वक कर लें। छात्र उसी के आधार पर सरल संस्कृत में पाँच वाक्य लिखें; यथा–

1. केरल–प्रदेश भारतस्य दक्षिण–भागे स्थितः।
2. अस्य प्रदेशस्य राजधानी तिरुवनंतपुरम् अस्ति।
3. अत्र प्रकृतिः अतीव रमणीया वर्तते।
4. साक्षरता–विषये अयं देशे सर्वप्रथमं सथानं भजते।
5. आयुर्वेद–चिकित्सा–पद्धत्यै अयं प्रदेशः विश्व–विख्यातः वर्तते।

छात्र इस प्रकार अन्य वाक्य स्वयं बनाएँ।

उत्तर 7. क. अयमुत्सवः सकले राज्ये कथं समायोज्यते?
'सोल्लासम्' (उल्लासपूर्वक) के लिए प्रश्न में 'कथम्' (किस प्रकार)

ख. अस्य हरितेषु वनेषु के सुलभाः?
'ओषधयः'–पुल्लिग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति के लिए प्रश्न में 'के'।

ग. महिलाः कुत्र पुष्प–सज्जां कुर्वन्ति?
'गृहस्य प्राङ्गणे (घर के आँगन में) के लिए कुत्र (कहाँ)।

घ. ओणम् केषाम् प्रमुखः उत्सवः?
केरलवासिनाम् (केरलवासियों का) के लिए 'केषाम्' (किनका) प्रश्न में।

ङ. पुरा केरल–राज्ये किं नाम राजा राज्यं करोति स्म?
महाबलि नाम (महाबलि नाम का) के लिए प्रश्न में 'किं नाम' (किस नाम का)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. जनानां साक्षरता महत्त्वपूर्णा अस्ति।

2. (*i*) महिलानां शिक्षणम् आवश्यकम्।
(*ii*) महिलाः पुरुषसमम् आदरणीयाः।
(*iii*) आम्, शिक्षणार्थं देश–देशान्तराणां भ्रमणम् लाभप्रदम् अस्ति।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. (क) देश के विभिन्न राज्यों; यथा–पंजाब, हरियाणा राजस्थान, तमिलनाडु कर्नाटक, बंगाल बिहार आदि की संस्कृति, भाषा नृत्य संगीत आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

(ख) केरल प्रदेश के विषय में जानकारी प्राप्त कर सञ्चिका में चित्र लगाएँ; यथा–कथकली नर्तक, पुष्पों की रंगोली, सर्पनौका-प्रतियोगिता, हाथियों की शोभा यात्रा आदि के चित्र।

2. छात्र राजन् शब्द के रूप का दो तीन बार उच्चाकरण करें। (देखें परिशिष्टम्) और प्रस्तुत वाक्यों को उचित रूप से पूरा करें। कोष्ठक में हिन्दी भाषा में राजा शब्द के परसर्ग की सहायता से उचित रूप का चयन करें; यथा–

1. राजानम् – द्वितीया विभक्ति, एकवचन कर्मकारक में।
2. राज्ञे – जिससे निवेदन किया जाता है, उसमें चतुर्थी का प्रयोग।
3. राज्ञः – षष्ठी एकवचन रूप, सम्बन्ध कारक में।
4. राज्ञि – सप्तमी एकवचन रूप–जिसपर विश्वास होता हे, उसमें सप्तमी का प्रयोग।
5. राजसु – 'राजन्' शब्द का सप्तमी बहुवचन रूप।

❑❑

पाठाः 5-8 पुनरावृत्तिः

1. प्रश्न का वाचन करें, रंगीन पद पर ध्यान दें। कोष्ठकदत्त प्रत्येक विकल्प को ध्यान से पढ़ें, पाठ के आधार पर उचित विकल्प चुनें। उत्तर देते समय प्रश्नवाचक पद पर ध्यान दें, यह भी नोट करें कि कोष्ठकदत्त सभी विकल्प समरूप हैं।

उत्तर– क. कर्त्तव्यपथेन–'केन' (किससे/द्वारा) के उत्तर में, करणकारक–तृतीया विभक्ति पद।

ख. गर्ताः–'के' उत्तर में–कर्त्ताकारक–प्रथमा विभक्ति पद।

ग. प्रतिभासम्पन्नः–'कीदृशः' (कैसा) के उत्तर में; विशेषण–प्रथमा एकवचन पद।

घ. आर्यभट्टः–'कः' के उत्तर में–कर्त्ताकारक, प्रथमा विभक्ति पद।

ङ. स्वभावः–'कः' के उत्तर में–कर्त्ताकारक–प्रथमा विभक्ति पद।

च. ओणम्–कः उत्सवः के उत्तर में–कर्त्ता कारक, प्रथमा विभक्ति पद (ओणम्–नपुंसकलिंग पद 'फलम्' की भाँति, प्रश्न में 'कः' 'उत्सवः' के योग में)।

छ. केरलः–पाठाधारित; 'कः प्रदेशः' के उत्तर में प्रथमा विभक्ति पद।

2. प्रश्न पढ़ें, प्रत्येक पद पर ध्यान दें, आशय समझें, पाठानुसार उत्तर दें।

उत्तर– क. दृढ़-संकल्पाः वयम् देशम् उन्नति-पथं नेष्यामः।

ख. संस्कृतम् स्व-शब्दभण्डारेण देशस्य अनेकाः प्रादेशिक-भाषाः सम्पोषयति।

ग. वर्षर्तौ गर्ताः वर्षा-जलेन पूर्णाः भवन्ति इति मार्गस्य कष्टम्।

अथवा

मार्गस्य कष्टम् इदम् अस्ति यत् वर्षा-ऋतौ गर्ताः वर्षा-जलेन पूर्णाः भवन्ति।

घ. मार्गम् उभयतः स्थिताः वृक्षाः वाहनानां धूम्रेण कष्टम् अनुभवन्ति।

ङ. उत्सव-काले केरल-प्रदेशे अनेके समारोहाः भवन्ति। यथा-राजानां शोभायात्रा, सर्पनौका-प्रतियोगिताः पारम्परिक-खेलाः शास्त्रीयनृत्य-लोकनृत्य-गीतादयः च।

उत्तर के वाक्यों का वाचन सावधानी से करें। प्रत्येक पद पर ध्यान दें। **निर्देश-प्रयोग समझें और याद रखें;** यथा-'अनेकाः भाषाः-(द्वितीया प्रयोग-कर्म में), नेष्यामः (नी-ने); मार्गम् उभयतः-(द्वितीया प्रयोग)-'उभयतः' के योग में। ('जीवनम्', 'कष्टम्'-संस्कृतम्-आदि नपुंसकलिंग पद हैं इत्यादि। पाठ वाचन के समय इसी प्रकार प्रयोग पर ध्यान देने से लाभ होगा।)

3. रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य/सूक्ति पढ़ें, कोष्ठक से उचित विकल्प चुनें।

उत्तर- क. स्वभावाः ख. मनःपूतम्

ग. नः (अस्माकम् का लघु रूप) घ. वर्षर्तौ

ङ. पराशरऋषिणा (पराशर ऋषि द्वारा-कर्मवाच्य प्रयोग)।

4. मार्ग की आत्मकथा में वाक्यपूर्ति करें। पहले रिक्त स्थान छोड़कर ध्यानपूर्वक पढ़ें, आशय समझकर पाठ से उचित पद चुनें।

उत्तर- अस्मि-कर्त्ता-'अहम्' के साथ क्रियापद।

कष्टानि-(कष्टों को) विशेषण 'बहूनि' के साथ विशेष्य-पद (नपुंसकलिंग), क्रियापद 'अनुभवामि' का कर्म(object)।

मम-'उपरि' के योग में सम्बन्धवाचक पद षष्ठी प्रयोग।

वाहनानि-बहुवचन-'यान्ति' (जाते हैं) क्रियापद (बहुवचन) का कर्त्ता (बहुवचन)।

यातायातेन (यातायात से)-पाठानुसार-'से' के अर्थ में तृतीया प्रयोग।

शरीरे-पाठ के आधार पर-'में' के अर्थ में सप्तमी प्रयोग।

अवकरम्-'क्षिप्त्वा' का कर्म-द्वितीया प्रयोग।

मलिनम्-'माम्' (मुझे)-कर्मपद का विशेषण-दोनों पद द्वितीया, एकवचन।

रक्षितुम्–'प्रयत्नं करिष्यथ' के साथ, तुमुन् प्रत्ययान्त का प्रयोग।

करिष्यथ–'यूयम्' के साथ क्रियापद का उचित रूप।

वाक्यपूर्ति के पश्चात् सहज रीति से वाचन करें। प्रयोग समझें। वाचन-पुनर्वाचन से शुद्ध प्रयोग का अभ्यास स्वतः होने लगता है।

5. मञ्जूषा में दिए गए शब्द पढ़ें, समझें कि अधोदत्त संवाद का संकेत किस ओर है। स्पष्टतः वृक्षारोपण महोत्सव की ओर। संवाद को रिक्त स्थान छोड़कर पढ़ें और आशय समझकर प्रसंगानुसार उचित पद का चयन करें।

उत्तर– वृक्षारोपणम्–'कर्त्तव्यम्' (किया जाना चाहिए) के योग में।

कार्यम्–'सर्वोत्तमम्' विशेषण-पद के साथ उचित विशेष्य पद–दोनों पद नपुंसकलिंग एकवचन।

सर्वेषाम् (षष्ठी बहुवचन)–'प्राणिनां' (षष्ठी बहुवचन)–विशेष्य-पद का सार्वनामिक विशेषण। (समान विभक्ति व वचन का प्रयोग)

'शोभा'–स्यात् (होगी)–क्रियापद के साथ, प्रथम पुरुष, एकवचन कर्त्ता पद के रूप में उचित।

वनमहोत्सवस्य–'आयोजनं' के साथ सम्बन्धकारक–षष्ठी विभक्ति के पद का प्रयोग उचित।

जानामि–(जानता हूँ)–कर्त्ता–'अहम्'–लुप्त; पूर्वगत प्रश्न 'किं जानासि' के उत्तर में उचित क्रियापद।

6. विभक्ति-प्रयोग का अभ्यास करें। विभक्ति-प्रयोग दो प्रकार का होता है–कारक विभक्ति तथा उपपद विभक्ति।*

प्रत्येक वाक्य ध्यानपूर्वक पढ़ें, प्रयोग समझें, तदनुसार उचित विभक्ति लगाएँ।

उत्तर– क. मार्गम् – द्वितीया विभक्ति–'उभयतः' के योग में।

ख. मया – तृतीया प्रयोग–'सह' के योग में।

* विस्तार के लिए देखें–'परिशिष्टम्, (पाठ्य-पुस्तक में)।

ग. बहूनि – 'कष्टानि' (कर्मपद) नपुंसकलिंग–द्वितीया, बहुवचन होने के कारण विशेषण 'बहु' भी समान लिंग, विभक्ति व वचन में। **(देखें पाठ में प्रयोग)**

घ. अभ्यासेन – (अभ्यास द्वारा)–'द्वारा'/'से' के अर्थ में तृतीया प्रयोग।

ङ. लोभात् – (लोभ से/के कारण)–'कारण' अर्थ दर्शाने के लिए पञ्चमी प्रयोग।

च. विष्णवे – 'नमः' के योग में चतुर्थी प्रयोग–'विष्णु'–उकारान्त पुल्लिग 'गुरु' की भाँति। (विष्णुवे–अशुद्ध रूप)

7. चित्र देखें, बगीचे का चित्र है। माली पौधा लगा रहा है। बगीचे में पेड़-पौधे फूल आदि हैं। मञ्जूषा में दिए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें। उदाहरण देखें। प्रत्येक वाक्य ध्यानपूर्वक पढ़ें। आशय समझकर, प्रसंगानुसार उचित पद चुनकर वर्णन पूरा करें।

उत्तर– क. (*i*) एतस्मिन् – 'चित्रे' (चित्र में) का विशेषण होने के कारण उचित।

(*ii*) पादपाः – 'वृक्षाः', 'लताः' कर्त्तापद के साथ उचित कर्त्तापद, **नोट करें**–साथ में 'च' अव्यय भी आया है।

ख. विकसन्ति – 'पुष्पाणि' कर्त्ता (बहुवचन) के साथ उचित क्रियापद।

ग. (*i*) मालाकारः – प्रसंगानुसार उचित कर्त्तापद (खुरपी से मिट्टी को खोदता है)।

(*ii*) पादपम् – (पौधों को)–उचित कर्मपद–क्रियापद 'आरोपयति' (लगाता है) के साथ।

घ. सिञ्चति – 'पादपान्' कर्मपद के साथ उचित क्रियापद–कर्त्तापद 'सः' अर्थात् 'मालाकारः' के साथ भी उचित।

ङ. पुष्पैः — 'विविधवर्णैः' विशेषण-पद के साथ उचित विशेष्य-पद—दोनों समान विभक्ति व वचन में (तृतीया बहुवचन)

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त उदाहरण सहित सभी वाक्यों का वाचन करें।

(*i*) प्रसंगानुसार कुछ नए शब्द सीख लें; यथा—खनित्रेण (खुरपी से); केदारेषु (क्यारियों में)।

(*ii*) पहले सीखे हुए शब्दों तथा शब्दरूप प्रयोग की आवृत्ति कर लें; यथा—

पादपाः — प्रथमा विभक्ति पद, कर्त्ता कारक में।

पादपान् — द्वितीया विभक्ति पद, कर्म कारक में।

एतस्मिन् — सप्तमी विभक्ति पद—सर्वनाम एतत् इत्यादि।

(*iii*) प्रत्येक पद पर ध्यान देकर, वाक्य-रचना के अभ्यास का लाभ उठाएँ।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. आकरं कदापि मार्गे न क्षिपेत्, सदैव अवकर-पात्रे स्थापयेत्।

2. विनम्रः स्वभावः अथवा विनयशीलः जनः सर्वत्र शोभते।

3. सदैव अभिवादनशीलः वृद्धसेवी च स्यात्।

❐❐

9 विचित्रमिदम् जगत्

हिंदी अनुवाद (विचित्र है यह संसार)

यह जगत् विशाल है और विचित्र भी। मनुष्य के अतिरिक्त यहाँ अनेक प्रकार के प्राणी निवास करते हैं। यह विविधता इस संसार को सुन्दर बनाती है।

यदि आप कभी जन्तुशाला (चिड़ियाघर) जाएँ, तो प्राणियों की विचित्रता का प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे। कहीं सौम्य पक्षी कूकते हैं, कहीं भयानक पशु गर्जना करते हैं। कहीं सौम्य तोते, मैना और मोर चित्त हर लेते हैं; और कहीं भयावह (डराने वाले) शेर, चीते और बाघ भय उत्पन्न कर देते हैं।

एक बात और; कुछ जन्तु छोटे आकार वाले, तो कुछ बड़ी काया (शरीर) आकार वाले होते हैं। कुछ जल में निवास करने वाले, कुछ स्थल (ज़मीन) पर रहने वाले और कुछ वृक्षों पर रहने वाले होते हैं। कुछ मांसाहारी और कुछ घास खाने वाले होते हैं।

प्राणियों का स्वभाव और उनका खान-पान उनके निवास-स्थान के अनुसार होता है। कुछ जीव घने जंगलों में रहना पसन्द करते हैं, कुछ विस्तृत घास के मैदानों में। कुछ गरम प्रदेशों में रहते हैं, कुछ शीतल स्थलों में।

यदि आप उत्तर तथा दक्षिण के ध्रुव प्रदेशों के बर्फ़ीले इलाकों से गरम प्रदेशों की ओर जाएँ, तो इस सृष्टि की विविधता अधिक स्पष्ट हो जाएगी। न केवल पशुओं, पक्षियों का परन्तु पौधों, वृक्षों और फूलों का भी वैभव तथा विचित्रता दृष्टिगोचर हो जाएगी।

पृथ्वी के दो भाग में जल है। समुद्रों में भी अद्‌भुत जीवन है। मछलियाँ, मगरमच्छ, कछुए या अन्य जलवासी जन्तु किस प्रकार जल में रहते हैं और अपनी सन्तान का पालन करते हैं यह सब जानने के लिए वैज्ञानिकों की उत्सुकता सदा बनी रहती है। इस क्षेत्र में शोध कार्य (research work) निरन्तर चलता है।

इस संसार में मानव, पशु, कीड़े, पक्षी, पेड़-पौधे सभी एक-दूसरे पर निर्भर हैं। अत: सबका एक समान महत्त्व है। यह सृष्टि सच में सुन्दर है और विचित्र भी।

उत्तराणि

मौखिकम्

उच्चारण करें। इन शब्द रूपों–संज्ञा व सर्वनाम में से कुछ रूप पाठ में प्रयोग में आ चुके हैं; यथा–प्राणिनः, जलवासिनः; इयम् इदम्, अस्याः, अस्मिन् इत्यादि। नोट करें–सभी सर्वनामों के रूप एक समान चलते हैं; यथा–अस्य/तस्य/कस्य/यस्य इत्यादि।

लिखितम्

1. **उदाहरण देखें–**'कीदृशम्'* के उत्तर में 'विचित्रम्'। (विशेषण–पद भी नपुंसकलिंग एकवचन में)

   सम्पूर्ण वाक्य में भी उत्तर समझ लें अर्थात् 'इदम्' जगत् विचित्रम् अस्ति।

   प्रत्येक प्रश्न का वाचन करें। कोष्ठक से उचित विकल्प चुनकर एक पद में उत्तर दें। प्रयोग पर ध्यान दें। सम्पूर्ण वाक्य में प्रत्येक उत्तर का मौखिक–अभ्यास करें।

उत्तर– क. रम्यम्   ख. प्राणिनः   ग. सौम्याः   घ. पृथिव्याः
ङ. अद्भुतम्   च. विलक्षणा   छ. सन्ततिम्
लिखते समय वर्तनी की ओर ध्यान दें।

2. **प्रश्न पढ़ें उत्तर लिखने से पहले पाठ में देखें। उत्तर लिखते समय प्रयोग में आए शब्दों के अर्थ समझ लें।**

उत्तर– क. भवान् जन्तुशालायां जन्तूनाम् विचित्रतां प्रत्यक्षम् अनुभविष्यति।
ख. मत्स्याः, मकराः कच्छपाः अन्ये च जलवासिनः जलेषु कथं निवसन्ति, कथं च सन्ततिं पालयन्ति, इति ज्ञातुं वैज्ञानिकानाम् औत्सुक्यं वर्तते।
ग. अस्मिन् संसारे मानवाः, मृगाः, कीटाः, पादपाः, खगाः वृक्षाः च सर्वे एव अन्योन्याश्रिताः।
घ. पशूनां, पक्षिणाम्, पादपानां कुसुमानां चापि वैचित्र्यं दृष्टिपथम् आगमिष्यति।
ङ. भयावहाः पशवः यथा सिंहाः, चित्रकाः व्याघ्राः च भयम् उत्पादयन्ति।

---

* विशेषण–पद पर आधारित प्रश्न का निर्माण करने के लिए 'कीदृश' शब्द का विशेष्य–पद के लिंग, विभक्ति व वचन के अनुसार प्रयोग किया जाता है।

उत्तर 3. I. रिक्त स्थान छोड़कर प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, कर्त्ता पद पहचानें, तत्पश्चात् उचित क्रियापद का चयन कर, वाक्य पूरा करें।

क. वर्तते – वाक्य का कर्त्ता–'जलम्' प्रथम पुरुष एकवचन होने के कारण ('वर्ते'–उत्तम पुरुष एकवचन उचित नहीं। 'वृत्' धातु आत्मनेपदी, अतः 'वर्तति'–अशुद्ध)

ख. पालयन्ति – वाक्य का कर्त्ता–'जन्तवः' बहुवचन में होने के कारण ('जन्तु'–उकारान्त शब्द 'साधु' 'पशु' 'गुरु' की भाँति)

ग. निवसन्ति – क्रियापद बहुवचन में क्योंकि कर्त्तापद–'प्राणिनः'– बहुवचन (**देखें–'मौखिकम्'– प्राणी, प्राणिनौ, प्राणिनः**)

घ. (*i*) गच्छेत्* – 'भवान्' के योग में प्रथम पुरुष क्रियापद का प्रयोग होता है; (गच्छसि–मध्यम पुरुष–लट् लकार, गच्छेः–मध्यम पुरुष विधिलिङ्–अतः दोनों में कोई भी उचित नहीं।)

(*ii*) अनुभविष्यति* – 'भवान्' के योग में प्रथम पुरुष, एक वचन का क्रियापद उचित ('अनुभविष्यसि'–मध्यम पुरुष, एकवचन; 'अनुभविष्यथ'–मध्यम पुरुष– बहुवचन – अतः दोनों में से कोई भी उचित नहीं)

ङ. हरन्ति – वाक्य का कर्त्ता–'पक्षिणः'–बहुवचन पद; (यथा–प्राणिनः, 'जलवासिनः', 'स्थलवासिनः' इत्यादि)।

यद्यपि प्रस्तुत अभ्यास में दिए गए सभी वाक्य पाठ में आ चुके हैं तथापि कोष्ठक में दिए गए विश्लेषण द्वारा व्याकरण के तत्त्वों का बोध पुष्ट हो जाएगा–इस बात को ध्यान में रखकर वाक्यों का वाचन-पुनर्वाचन रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त सावधानी से करें। वाचन करते समय प्रत्येक पद पर ध्यान देना श्रेयस्कर होगा।*

---

* 'यदि–तर्हि'–अव्यय-युग्म प्रयोग में आने पर विधिलिङ् के प्रयोग का नियम है। अथवा लृट् लकार प्रयुक्त होता है। प्रस्तुत वाक्य में इसी कारण दोनों लकारों का प्रयोग किया गया है।

II. प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, तत्पश्चात् कोष्ठक से उचित शब्द रूप चुनें–वर्तनी अथवा विभक्ति की दृष्टि से;

क. जन्तवः – वर्तनी की दृष्टि से उचित विकल्प।

ख. जन्तूनाम् – उकारान्त शब्दों में षष्ठी बहुवचन में दीर्घ 'ऊ' की मात्रा लगती है। ('जन्तोः'–षष्ठी, एकवचन, अतः उचित नहीं।)

ग. वनेषु – विशेषण-पद 'सघनेषु'–बहुवचन होने के कारण।

घ. सर्वेषाम् – बहुवचन प्रयोग उपयुक्त होने के कारण। (यहाँ अनेक प्रकार के जीवों की चर्चा हो रही है।)

ङ. विविधान् – 'पशून्'–बहुवचन होने के कारण विशेषण-पद बहुवचन में।

4. दाईं ओर के स्तम्भ में दिए गए शब्द पाठ में आ चुके हैं। ध्यानपूर्वक वाचन करें। नोट करें–प्रत्येक पद में दो शब्द आए हैं। प्रत्येक पद समस्त पद * (Compound word) है। बाईं ओर इन समस्त पदों का विग्रह (Analysis) दिया गया है जो समस्त पद के अर्थ को दर्शाता है। उदाहरण देखें–वृक्षे वसन्ति इति–(जो वृक्ष में रहते हैं)–वृक्षवासिनः–(वृक्ष में रहने वाले)। इसी प्रकार दोनों स्तम्भों में दिए गए पदों का परस्पर मेल करें और आशय समझें।

उत्तर– ख. स्थले वसन्ति इति–स्थलवासिनः; ग. उष्णेषु प्रदेशेषु–उष्णप्रदेशेषु; घ. शीतलेषु स्थलेषु–शीतल-स्थलेषु; ङ. विशालः कायः येषाम्–विशालकायाः (विशाल शरीर वाले)

5. कोष्ठक में दिए गए विशेषण-पदों का वाचन करें, अर्थ समझें। फिर वाक्य पढ़ें और विशेष्य-पद पहचान कर समान विभक्ति वचन व लिंग का विशेषण-पद चुनकर रिक्त स्थान भरें। उदाहरण देखें और समझें। 'जगत्' शब्द नपुंसकलिंग, अतः विशेषण भी समरूप।

---

* वाचन-पुनर्वाचन को रटन-प्रक्रिया न समझें। यह तो पुनरावृत्ति है, जो शिक्षण का अनिवार्य अंग माना जाता है। (Repetition is a necessary part of learning.)

(*) समास/समस्त पद की सविस्तार चर्चा अगली कक्षाओं में की जाएगी।

उत्तर– **I.** क. सघनानि – वनानि का विशेषण समान लिंग व वचन में।
विस्तृतम् – 'मरुस्थलम्' का विशेषण अतः नपुंसकलिंग एकवचन में।
ख. शीतला – 'छाया' का विशेषण–दोनों पद स्त्रीलिंग, एकवचन।
प्रचण्डः – 'आतपः'–पुल्लिग शब्द का विशेषण समान लिंग व वचन में।
ग. रमणीया – 'सृष्टिः'–स्त्रीलिंग पद होने के कारण।

II. कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम 'इदम्' के विभिन्न रूप हैं। विशेष्य-पद के अनुसार, उचित सर्वनाम, जो यहाँ विशेषण के रूप में प्रयुक्त है, चुनें और रिक्त स्थान भरें।

इयम् – क्योंकि 'विविधता'–स्त्रीलिंग पद प्रथमा, एकवचन में।
इदम् – क्योंकि 'जगत्'–नपुंसकलिंग पद, प्रथमा, एकवचन में।
अयम् – 'संसारः'–पुल्लिग पद, प्रथमा एकवचन होने के कारण।
अस्मिन् – (पुल्लिग)–सप्तमी, एकवचन, अतः 'संसारे' के योग में उचित प्रयोग। (संसारे–सप्तमी एकवचन, 'बालके' की भाँति)।
अस्याम् – (स्त्रीलिंग)–सप्तमी एकवचन–अतः 'रचनायाम्' के साथ उपयुक्त। ('रचनायाम्'–सप्तमी एकवचन 'लतायाम्' की भाँति)।

6. वाक्य का वाचन करें। प्रत्येक पद पर ध्यान दें। प्रश्न का वाचन करके वाक्य के आधार पर उत्तर दें।

उत्तर– क. अपि ख. अद्भुतम् ग. जीवनम् (प्रथमा विभक्ति में)
घ. सप्तमी बहुवचनम् (यथा–'वृक्षेषु', 'बालकेषु', 'वनेषु' इत्यादि।)
ङ. वृत् धातुः, लट्लकारः।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

मञ्जूषादत्त शब्दों को पढ़ें। सभी चित्र से सम्बन्धित हैं। उदाहरण देखें। 'जन्तुशालायाः' (जन्तुशाला का) रिक्त स्थान में उचित पद। रिक्त स्थान छोड़कर प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, आशय समझकर उचित पद चुनें और वाक्य पूरा करें।

उत्तर– 1. (*i*) चित्रे (चित्र में)–'अस्मिन्' (इसमें) सर्वनाम-विशेषण–के साथ उचित संज्ञापद–समान विभक्ति, वचन तथा लिंग में (सप्तमी एकवचन-पुल्लिंग)

(*ii*) जन्तवः (जन्तु-बहुवचन)–'विविधाः' विशेषण-पद से साथ उचित विशेष्य-पद–समान विभक्ति तथा वचन में–प्रथमा बहुवचन।

2. (*i*) लौहपञ्जरे (लोहे के पिंजरे में)–वाक्य में 'सिंहः गर्जति'–अतः स्थान वाचक उचित पद।

(*ii*) नृत्यति–कर्त्तापद 'मयूरः' के योग में उचित क्रियापद।

3. (*i*) वृक्षे–वाक्य में 'वानराः' कर्त्तापद चित्र में वृक्ष पर बन्दर, अतः स्थानवाचक पद उचित।

(*ii*) कूर्दन्ति–वाक्य के कर्त्ता 'वानराः' के योग में उचित क्रियापद। (वचन की दृष्टि से भी उचित–कर्त्तापद क्रियापद दोनों बहुवचन)

4. (*i*) जलगर्ते (पानी के गड्ढे में)–कर्त्तापद 'गण्डक' (गैंडा), चित्र में पानी के गड्ढे में, अतः यहाँ यह स्थानवाचक पद उचित। (**ध्यान रहे–**सभी वाक्यों में स्थानवाचक पद अधिकरण कारक अर्थात् सप्तमी विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है।)

(*ii*) तिष्ठति (बैठा है)–कर्त्तापद 'गण्डकः' के योग में उचित।

5. (*i*) जन्तून् (जन्तुओं को)–'एतान्' के साथ उचित संज्ञापद–(दोनों द्वितीया बहुवचन अर्थात् कर्मकारक में)

(*ii*) हृष्यन्ति (प्रसन्न होते हैं)–वाक्य में 'च' (और) का प्रयोग, अतः क्रियापद 'पश्यन्ति' के साथ एक और क्रियापद का प्रयोग उचित। (यथा–'गायन्ति नृत्यन्ति च' अथवा 'खादन्ति पिबन्ति च', 'पठन्ति लिखन्ति च' इत्यादि।)

चित्र वर्णन पूरा करके ध्यानपूर्वक वाचन करें। प्रत्येक वाक्य को सहज रीति से दो बार पढ़ना हितकर होगा।

प्रस्तुत अभ्यास करने से पहले, अध्यापक/अध्यापिका इस प्रकार चित्राधारित सरल व संक्षिप्त प्रश्न पूछें कि छात्र/छात्राएँ उत्तर में मञ्जूषा-दत्त पदों का प्रयोग कर सकें। इस प्रकार चित्रवर्णन तथा वाक्य-रचना का अभ्यास रोचक व सुगम हो जाएगा।

❑❑

10 लोभो मूलमापदाम्

हिंदी अनुवाद (लोभ सब आपत्तियों की जड़ है)

(हितोपदेश से संकलित इस कथा में पशुओं के चरित्र-चित्रण के माध्यम से इस तथ्य को प्रमाणित किया गया है कि लोभ के वश में व्यक्ति अपना विवेक खो बैठता है। फलतः वह अनेकानेक विपदाओं का शिकार बन जाता है; जैसे एक हाथी लोभवश धूर्त सियार की बातों में आ गया और अपने जीवन से हाथ धो बैठा। **शिक्षा**–लोभ कदापि न करें।)

किसी वन में एक मोटा-ताज़ा हाथी रहता था। जंगल में रहने वाले सियार उस दीर्घकाय (बड़े शरीर वाले) हाथी को देखकर सोचते थे, यदि किसी प्रकार इसकी मृत्यु हो जाए तो चिरकाल तक हमें भोजन की कोई चिन्ता न होगी। इसके मरने का कोई उपाय सोचना चाहिए।

यह सोचकर उनके दल का स्वामी एक बूढ़ा सियार, उस हाथी के पास गया। सादर प्रणाम करके वह उससे बोला–मैं वनवासी पशुओं द्वारा आपके पास भेजा गया हूँ। हमारा कोई स्वामी नहीं है। आप सब गुणों से संपन्न हैं।

आप हमारे राजा बनने के योग्य हैं। कृपया आइए, और राजसिंहासन पर विराजमान होइए।

यह सुनकर चकित होकर हाथी ने उत्तर दिया–मैं आपका आभारी हूँ। किन्तु मैं अपने-आपको उतना विशेष गुणों से युक्त नहीं मानता, जिससे मैं स्वामी पद के योग्य बन सकूँ। तो भी आप लोगों ने मुझपर जो विश्वास किया है, और जो मेरे प्रति सम्मान दिखाया है, उसका अपमान कैसे करूँ। अतः जैसा आप लोगों को अच्छा लगे वैसा आप लोग करें।

मन-ही-मन हँसकर सियार ने कहा–हम लोग अनुगृहीत हुए। आप राज्याभिषेक के लिए आइए। मैं आपका मार्गदर्शन करता हूँ।

राज्य के लोभ से आकर्षित वह जैसे ही तेज़ गति से सियार के पीछे-पीछे जाता है, वैसे ही दलदल में गिर जाता है। 'अरे! मैं तो दलदल में गिर गया। मुझे बचाओ'। बड़े शरीर वाले हाथी को कीचड़ में गिरा देखा धोखेबाज़ सियार, मन में हँसते हुए बोला–'ज़रा रुकिए। मैं अभी आया।'

दलदल से बाहर निकलने में असमर्थ वह हाथी वहीं डूब गया और मर गया। सियारों ने उस हाथी का मांस बहुत दिनों तक आनन्द से खाया।

इसीलिए बुद्धिमान लोग कहते हैं–लालच आपत्तियों की जड़ है, लालच बुरी बला है।

उत्तराणि

मौखिकम्

उच्चारण करें।

(क) 'कृ' धातु, विधिलिङ् के रूप का सहज रीति से उच्चारण करें। **नोट करें**–इनमें से कुछ धातुरूप का प्रयोग पाठ में आया है।

(ख) प्रस्तुत खण्ड में–'भवत्' (आप) शब्द के कुछ रूपों का वाक्य-प्रयोग– प्रत्येक वाक्य पहले एकवचन, फिर बहुवचन में दिया गया है। सहज रीति से वाचन करें। रंगीन पदों पर ध्यान दें। ('भवत्' शब्द की शब्दरूप तालिका देखें–'परिशिष्ट'में।)

लिखितम्

1. प्रत्येक प्रश्न का वाचन ध्यान से करें। कोष्ठक में दिए गए विकल्पों पर ध्यान दें। पाठ के अनुसार शुद्ध विकल्प चुनें। एक पद में उत्तर दें। प्रश्न में प्रयुक्त प्रश्नवाचक–रंगीन पद की ओर विशेष ध्यान दें। उत्तर उसी पर आधारित है। उदाहरण देखें–'कीदृशः' (कैसा) के उत्तर में, 'पीनपृथुलः' (मोटा-ताज़ा)। विकल्पों का वाचन करते समय नोट करें–सभी समान लिंग विभक्ति व वचन में हैं। अतः भाषा-बोध की दृष्टि से ध्यानपूर्वक वाचन हितकर होगा।

उत्तर– क. वने – ['कुत्र' कहाँ के उत्तर में]
ख. गजस्य – ('कस्य' के उत्तर में)
ग. भोजन-लोभात् – ('कस्मात्' के उत्तर में)
घ. राज्यलोभेन – ('केन' के उत्तर में)
ङ. महापङ्के – [कस्मिन् (किस में) के उत्तर में]
च. वञ्चकः – ('कीदृशः' के उत्तर में)
छ. लोभः – ('कः' के उत्तर में)

2. प्रश्न पढ़ें, अर्थ समझें, पाठ की सहायता से उत्तर लिखें।

उत्तर– क. यावत् गजः राज्यलोभेन तीव्रगत्या श्रृगालम् अनुगच्छति तावत् महापङ्के पतति।
ख. पङ्के पतितं गजम् दृष्ट्वा श्रृगालः अवदत्–'क्षणं तिष्ठतु। एष आगच्छामि।'

ग. यदि अस्य गजस्य कथञ्चित् मृत्युः भवेत्, तर्हि चिरकालं यावत् न काऽपि भोजनस्य चिन्ता स्यात् इति विचार्य श्रृगालाः तस्य मरणस्य उपायम् अचिन्तयन्।

घ. श्रृगालाः बहूनि दिनानि पर्यन्तम् तस्य गजस्य मांसम् अखादन्।

ङ. पङ्के पतितः गजःश्रृगालम् अवदत्–'अहह! महापङ्के पतितः अहम् (पतितोऽहम्)। त्राहि माम्'।

अथवा

अहह! महापङ्के पतितोऽहम्; त्राहि माम् इति पङ्के पतितः गजः श्रृगालम् अवदत्।

3. मञ्जूषा में दिए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें। फिर रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद के वाक्यों को पढ़ें, आशय समझें और पाठ के आधार पर मञ्जूषा की सहायता से पूरा करें।

उत्तर– गजः (हाथी) – रिक्त स्थान से पहले 'पीनपृथुलः' शब्द 'गजः' का विशेषण।

अचिन्तयन् (सोचा) – 'श्रृगालाः'–कर्त्तापद के साथ क्रियापद।

भोजनस्य (भोजन की) – 'चिन्ता' शब्द से सम्बन्ध, अतः षष्ठी पद।

यूथपतिः (झुण्ड का स्वामी) – 'तेषां' शब्द से सम्बन्ध।

अगच्छत् (गया) – कर्त्तापद 'यूथपतिः' के साथ एकवचन क्रियापद।

भवान् (आप) – शेष वाक्य के आधार पर।

अनुगृहीताः (अनुगृहीत–obliged) – 'वयम्' का विशेषण–पद–अतः बहुवचन।

रिक्त स्थान पूर्ति करके वाचन करें।

4. उदाहरण देखें प्रत्येक कथन पढ़ें, बताएँ कौन किसको कहते हैं।

उत्तर–क. गजः – वृद्धं श्रृगालम् अथवा वृद्धश्रृगालम्

ख. श्रृगालः – गजम्

ग. गजः – वृद्धं श्रृगालम्/वृद्ध–श्रृगालम्

घ. श्रृगालः – गजम्

5. **उदाहरण देखें और समझें–**'वनवासिनः' (बहुवचन)–उचित कर्त्तापद क्योंकि क्रियापद–'चिन्तयन्ति स्म' बहुवचन है। (वनवासी–एकवचन; वनवासिनौ–द्विवचन) प्रत्येक वाक्य को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उचित विकल्प चुनकर पूरा करें।

उत्तर– क. आगच्छतु–क्योंकि वाक्य का कर्त्ता 'भवान्'–अतः प्रथम पुरुष का क्रियापद उचित। कर्त्ता एकवचन होने के कारण क्रियापद भी एकवचन। (आगच्छन्तु–प्रथम पुरुष, बहुवचन; आगच्छ–मध्यम पुरुष एकवचन–अतः उचित नहीं)।

ख. भवते–(*i*) रुच् धातु के योग में चतुर्थी का प्रयोग होता है। अतः 'भवते' उचित। (यद्यपि 'भवद्भ्यः' भी चतुर्थी विभक्ति पद है, तथापि बहुवचन होने के कारण यहाँ उचित विकल्प नहीं; क्योंकि वाक्य के शेष भाग में–'भवान् करोतु'–एकवचन का प्रयोग आया है)।

ग. सहर्षम् (खुशी से/हर्ष के साथ)–क्रियाविशेषण पद। अतः द्वितीया एकवचन प्रयोग उचित।

घ. विचिन्त्य–उपसर्गपूर्वक धातु में 'ल्यप्' का प्रयोग होता है, 'क्त्वा' का नहीं।

ङ. स्मः (अस्, उत्तम पुरुष, बहुवचन)–वाक्य का कर्त्ता 'वयम्' होने के कारण। ('स्म'–भूतकालिक निपात; यथा–चिन्तयन्ति स्म = अचिन्तयन्)।

6. **उदाहरण देखें और समझें।** 'भवते'–एकवचन, 'भवद्भ्यः'– बहुवचन। शेष वाक्य में कोई रूपान्तर नहीं। **ध्यान रहे–**केवल कर्त्ता में रूपान्तर आने पर क्रियापद में रूपान्तर आता है, अन्यथा क्रियापद में कोई रूपान्तर नहीं होगा। प्रत्येक वाक्य में रंगीन पद में निर्देशानुसार परिवर्तन करके वाक्य पुनः लिखें। लिखते समयवर्तनी की ओर ध्यान दें।

उत्तर– I. क. इदम् **अस्माकम्** गृहम्। (मम, आवयोः, अस्माकम्)

ख. **बालकाय** किं रोचते? [बालकाय, बालकाभ्याम्, बालकेभ्यः। **नोट करें**–प्रस्तुत वाक्य में कर्त्ता 'किम्' है। किम् रोचते? = क्या अच्छा लगता है?]

ग. कक्षायाम् **छात्राः** सावधानं **तिष्ठेयुः**। [छात्रः, छात्रौ, छात्राः; तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः।
(**नोट**–'छात्रः' कर्त्तापद में वचन-परिवर्तन अतः क्रियापद 'तिष्ठेत्' में भी रूपान्तर)]

घ. किं **युष्माकम्** कार्यं पूर्णम्? (तव, युवयोः, युष्माकम्)

ङ. **भवान्** इच्छानुसारं स्वकार्यं **करोतु**। (कर्त्तापद में वचन परिवर्तन के कारण क्रियापद भी प्रभावित)

II. उदाहरण देखें और समझें। 'भवतु–लोट् लकार, भवेत्–विधिलिङ् दोनों क्रियापद प्रथम पुरुष, एकवचन में। शेष वाक्य में कोई रूपान्तर नहीं आया।
इसी प्रकार प्रत्येक वाक्य में निर्देशानुसार क्रियापद में रूपान्तर करके वाक्य को पुनः लिखें। लिखते समय वर्तनी तथा धातु रूप में आए रूपान्तर की ओर ध्यान दें। (लकार परिवर्तन करते समय कर्त्तापद के पुरुष व वचन का ध्यान रखें।)

उत्तर– क. छात्रः पाठं सावधानं पठेत्।
ख. बालकाः लेखं स्वच्छं लिखन्तु।
ग. अहं गृहस्य अन्तः आगच्छेयम्।
घ. वयं देशं प्रगतिपथे नेष्यामः।
ङ. यूयम् शोभनानि पुस्तकानि पठेत।

उत्तर 7. क. ''''' गम् + तुमुन्   ख. प्र + नम् + ल्यप्
ग. वि + हस् + ल्यप्   घ. भू + तुमुन्
ङ. दृश् + क्त्वा

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. आत्मानम् आपद्भ्यः रक्षितुं लोभस्य त्यागः अनिवार्यः।
(अपने आपको आपत्तियों से बचाने के लिए लोभ का त्याग अनिवार्य है।)

2. गजः राज्यलोभात् महापङ्के पतति। अथवा
राज्यलोभस्य कारणेन गजः महापङ्के पतति।

3. श्रृगालः पङ्के पतितस्य गजस्य सहायतां कर्तुं न इच्छति, सः गजम् वञ्चयति।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

उदाहरण देखें और समझें। प्रस्तुत कथन अशुद्ध है, क्योंकि कथावस्तु के अनुसार सियार हाथी को राज्य सिंहासन का लालच देकर धोखे से मारना चाहता है, अतः झूठी प्रशंसा में कहता है–'भवान् सर्वगुणसम्पन्नः'.....। हाथी स्वयं को सर्वगुणसम्पन्न नहीं मानता। इसी प्रकार प्रत्येक कथन का वाचन करें और बताएँ कि कथानुसार वह शुद्ध है अथवा अशुद्ध।

उत्तर– 1. अशुद्ध – क्योंकि बूढ़ा सियार हाथी के पास आया था, हाथी पशुओं के पास नहीं गया।

2. शुद्ध – क्योंकि हाथी को राज्याभिषेक का लालच देना उसे धोखे से मारने का केवल षड्यन्त्र था।
3. अशुद्ध – क्योंकि हाथी दलदल में गिरा था। (सियार नहीं)
4. शुद्ध – क्योंकि दलदल से निकलने में असमर्थ होने के कारण ही वह उसमें डूब गया और मर गया।
5. अशुद्ध – सियारों ने हाथी का मांस खाया। (शेर का नहीं.... सिंहस्य मांसम् अखादन्)
6. अशुद्ध – हाथी सियार के पीछे जाता है। (सियार हाथी के पीछे नहीं।)
7. अशुद्ध – क्योंकि हाथी कहता है–'परमहम् आत्मानं न हि तावत् विशेषणगुणसम्पन्नम् मन्ये'।
8. शुद्ध – क्योंकि उसने बूढ़े सियार का पशुओं का राजा बनने का प्रस्ताव स्वीकार किया। (**देखें पाठांश**–अहम् वनवासिभिः पशुभिः भवतः सकाशं प्रेषितः।)

❑❑

11 पुत्रं प्रति पत्रम्

हिंदी अनुवाद (पुत्र को पत्र)

दिल्ली
दिनांक : 18-10-20XX

प्रिय बेटा अर्णव
स्नेहपूर्वक आशीर्वाद,

विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा भेजा गया तुम्हारा परिणाम-पत्र आज ही मिला है।

छमाही-परीक्षा का तुम्हारा परिणाम देखकर मैं बहुत दुखी हुआ हूँ। देख रहा हूँ कि अंग्रेजी भाषा में पचपन (55), हिन्दी भाषा में साठ (60) समाज शास्त्र में सत्तावन (57), विज्ञान विषय में तिरसठ (63) और संस्कृत भाषा में तुम्हारे उनहत्तर (69) अंक हैं। ऐसा क्यों? बेटा! तिमाही-परीक्षा में तो तुम्हारे अंक बहुत अच्छे थे। मुझे याद है कि उस परीक्षा में अंग्रेज़ी भाषा में बहत्तर (72), हिन्दी भाषा में अस्सी (80), समाजशास्त्र में पचासी (85), विज्ञान शास्त्र में तुम्हारे नब्बे (90) और संस्कृत भाषा में तिरानवें (93) अंक आए थे।

बेटा! यह अवनति कैसे हुई। क्या छात्रावास में तुम नियमपूर्वक पढ़ाई नहीं करते हो? अथवा यह बुरी संगत का प्रभाव है? बेटा, बुरी संगत से अपने-आपको सदा बचाना चाहिए, विशेष रूप से विद्यार्थी-जीवन में। जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समय होता है यह। इस समय का सदुपयोग करना चाहिए। यदि उन्नति चाहिए तो पूरा मन लगाकर अध्ययन करना होगा। यह सच है कि मनोरंजन ज़रूरी है और स्वास्थ्य की रक्षा भी अनिवार्य है। जब स्वस्थ तन, स्वस्थ मन और स्वस्थ बुद्धि होगी, तभी उद्देश्य की पूर्ति निश्चित है।

आशा करता हूँ कि वार्षिक परीक्षा में तुम्हारा परिणाम उत्तम होगा। बहुत अच्छे अंक पाकर तुम हम सब के बधाई के पात्र बनोगे ऐसी कामना है और प्रार्थना भी।

माता और पिता का आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है।

बार-बार तुम्हारी प्रगति की कामना करता हुआ।

तुम्हारा शुभचिन्तक
पिता

उत्तराणि

मौखिकम्

उदाहरण सहित पदों का परस्पर मेल करते हुए उच्चारण करें।

I. विलोम-पद

ख. हर्षः – विषादः; ग. स्मरामि – विस्मरामि; घ. कुसंगः – सत्संगः; ङ. अद्य – ह्यः; च. स्वस्थः – अस्वस्थः।

II. समानार्थक-पद

ख. अनिवार्या – आवश्यकी; ग. इयम् – एषा; घ संवृत्ता – सञ्जाता; ङ. वीक्ष्य – दृष्ट्वा; च. अस्य – एतस्य।

लिखितम्

1. **उदाहरण देखें।** 'कुतः' (कहाँ से) के उत्तर में 'दिल्लीतः' (दिल्ली से) पाठानुसार शुद्ध। (**नोट करें**–'तः' (तसिल्) प्रत्यय से/from के अर्थ में लगाया जाता है; यथा–कुतः, दिल्लीतः, छात्रावासतः इत्यादि।

   प्रत्येक प्रश्न का वाचन करें। कोष्ठकदत्त विकल्पों को ध्यान से पढ़ें। फिर पाठ के आधार पर शुद्ध विकल्प चुनकर एक पद में उत्तर दें।

   सम्पूर्ण वाक्य के रूप में प्रत्येक उत्तर का मौखिक-अभ्यास हितकर होगा; यथा–'एतत् पत्रम् दिल्लीतः लिखितम्'–(उदाहरण में दिया गया प्रश्न का उत्तर)

उत्तर– क. परिणाम-पत्रम् ख. विषादग्रस्तः ग. त्रैमासिक-परीक्षायाम्
घ. कुसंगात् ङ. छात्रावासे च. कालस्य
छ. आशीर्वादाः।

उत्तर 2. क. पिता पुत्रं प्रति पत्रं लिखति।

ख. षाण्मासिक-परीक्षायाम् अर्णवस्य अङ्काः न अति शोभनाः अतः तस्य पिता विषादग्रस्तः।

अथवा

अर्णवस्य पिता विषादग्रस्तः यतः षाण्मासिक-परीक्षायां तस्य (अर्णवस्य) अङ्काः अति शोभनाः न आसन्।

ग. यदि स्वस्थं शरीर, स्वस्थं चित्तं स्वस्था च बुद्धिः स्यात् तर्हि उद्देश्य-पूर्तिः निश्चिता।

घ. पितुः आशा अस्ति यत् वार्षिक्यां परीक्षायां अर्णवस्य/पुत्रस्य परिणामः उत्तमः भविष्यति।

ङ. यदि उन्नतिं वाञ्छेत् तर्हि पूर्ण-मनोयोगेन अध्ययनं कुर्यात्।

3. मञ्जूषा में अव्यय पदों को पढ़ें। फिर रिक्त स्थानों को छोड़कर वाक्य पढ़ें, आशय समझकर पूर्ति करें। सभी वाक्य पाठ में आ चुके हैं। अतः पाठ का पुनर्वाचन करने से सहायता मिलेगी।

उत्तर– क. एव (ही) ख. कथम् (कैसे/क्यों) ग. अपि (भी)
घ. यदि, तर्हि (तो) ङ. च (और), सदैव (सदा)।

वाक्यों का वाचन करें।

4. संख्यावाची पदों की आवृत्ति कर लें।

उत्तर– I. क. नवाशीतिः ख. त्रिसप्ततिः ग. द्विनवतिः।
II. पञ्चाशत् षष्टिः सप्ततिः शतम्।

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त वाचन करें।

5. उदाहरण देखें और समझें। कोष्ठक में 'पितृ' शब्द के तीन रूप दिए गए हैं। प्रस्तुत वाक्य में 'पितृभ्याम्' (चतुर्थी, द्विवचन) उचित प्रयोग। **कारण**–वाक्य में 'नमः' उपपद आया है। (पितरौ = माता व पिता; पितुः पिता का–अतः कोई भी उपयुक्त नहीं।)
इसी प्रकार प्रत्येक वाक्य का ध्यानपूर्वक वाचन करें। कोष्ठकदत्त विकल्पों को पढ़ें, प्रसंग समझें, और उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरें। वाक्य पूरा करके पुनः वाचन करें।

उत्तर– क. परीक्षायाम् (परीक्षा में)–उचित विकल्प, क्योंकि शेष वाक्य का आशय –उसने अच्छे अंक पाए–('परीक्षाम्' = परीक्षा को अनुचित प्रयोग। 'परीक्षा' शब्द आकारान्त 'लता' की भाँति, अतः 'परीक्षे' अशुद्ध रूप)।

ख. इयम्–वाक्य में 'अवनतिः' का विशेषण होने के कारण स्त्रीलिंग रूप उचित। (अयम्–पुल्लिग, इदम्–नपुंसकलिंग)

ग. कुसंगात्–(कुसंग से/from bad company)–प्रसंगानुसार पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग उपयुक्त। (कुसंगेन = कुसंग से/द्वारा; कुसंगस्य कुसंग का)।

घ. प्रधानाचार्येण–(प्रधानाचार्य द्वारा/by the principal)–प्रसंगानुसार तृतीया विभक्ति पद उचित; क्योंकि शेष वाक्य का आशय–'... परिणाम-पत्र भेजा गया' (प्रधानाचार्यः प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्यात्–प्रधानाचार्य से/from the principal)

ङ. मया–(मेरे द्वारा)–प्रसंगानुसार उचित क्योंकि शेष वाक्य का आशय–'...पत्र पढ़ा गया'। (अहम् = मैं; मम = मेरा–दोनों में से कोई भी यहाँ उचित नहीं है।)

6. प्रत्येक वाक्य को ध्यान से पढ़ें। प्रत्येक पद को समझें। फिर तदाधारित प्रश्नों के उत्तर दें।

उत्तर– I. क. वाञ्छेत्, ख. पूर्ण

ग. कृ धातुः, विधिलिङ् लकारः घ. यदि, तर्हि

ङ. द्वितीया विभक्तिः (कर्मपद होने के कारण)

II. क. वर्तन्ते ख. वर्तते ग. षष्ठी एकवचनम्

घ. तृतीया विभक्तिः, 'सह' योगे तृतीया

ङ. आशीर्वादाः(कर्त्तापद में प्रथमा प्रयोग)

च. सदा+एव (आ + ए = ऐ)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. आत्मानं सर्वथा कुसङ्गात् रक्षेत्।
2. विद्यार्थि-कालस्य सदुपयोगं कुर्यात्।
3. उन्नतिम् उद्दिश्य पूर्ण-मनोयोगेन अध्ययनं कुर्यात्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

संस्कृत में एक से सौ तक गणना के अभ्यास हेतु अपनी रुचि व सुविधा के अनुसार कोई भी विधि अपनाई जा सकती है।

(*i*) छात्रों के समूह बनाकर।

(*ii*) काल्पनिक संख्याओं का जोड़ करके।

(*iii*) हिन्दी/आंग्लभाषा/मातृभाषा में कोई संख्या देकर उसे संस्कृत भाषा में परिवर्तित करके।

❑❑

12 दीपोत्सवः

हिंदी अनुवाद (दीपावली का उत्सव)

भारत उत्सवों का देश है। भारत के लोग उत्सवप्रिय हैं। अर्थात् भारतीयों को उत्सव अच्छे लगते हैं। उत्सव जन-जीवन में उत्साह और आनन्द का संचार कर देते हैं। दीपोत्सव–'दीपों का उत्सव' सब उत्सवों में श्रेष्ठ है। शरद् ऋतु में आने वाले इस पर्व को सभी आनन्द से मनाते हैं।

रामायण की कथा पुरानी है। जब दशरथ-पुत्र राम चौदह वर्ष के वनवास के बाद पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे तो सब अयोध्यावासी बहुत खुश हुए। अपने प्रियजनों के स्वागत में उन्होंने रात्रि में घी के दीये जलाए। सम्पूर्ण राज्य में मौज-मस्ती थी। उस समय से लेकर आज तक यह पर्व (त्योहार) हर्ष और उल्लास से मनाया जाता रहा है।

यह उत्सव विजयदशमी (दशहरा) से बीस दिन बाद कार्तिक-मास की अमावस्या पर आता है। वर्षाकाल के पश्चात् आकाश साफ़ हो जाता है, खेत धान से भर जाते हैं, यह समृद्धि (खुशहाली) का समय होता है। उत्सव के दिन से पहले ही लोग घरों को साफ़ करते हैं (और) चित्रों और फूल-मालाओं से सजाते हैं। वे नए वस्त्र धारण करते हैं। बच्चे विशेष रूप से प्रसन्न होते हैं। इस समय दुकानों/बाज़ारों की शोभा भी देखने लायक होती है। चेहरे पर खुशी लिए लोग विविध वस्तुएँ खरीदते हैं। मिठाई की दुकानों में अनेक प्रकार की मिठाइयाँ; जैसे–रसगुल्ले, बर्फ़ी, जलेबियाँ, लड्डू शोभा देते हैं। बाज़ारों में सब जगह प्रसन्न लोगों की भीड़ दिखाई देती है।

रात को लोग बिजली के बल्बों, तेल के दीयों और मोमबत्तियों से घरों में रोशनी करते हैं। जब प्रत्येक घर और प्रत्येक भवन (बिल्डिंग) में दीये जलते हैं, तो दृश्य अत्यन्त आकर्षक और अद्वितीय (अनुपम) होता है।

दीवाली के त्योहार पर लोग लक्ष्मी जी का पूजन करते हैं, और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। वे मित्रों और रिश्तेदारों को मिठाइयाँ बाँटते हैं, स्वयं भी स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं। बच्चे खुश होते हैं और पटाख़े फोड़ते हैं। किन्तु आजकल इस सम्बन्ध में संयम और विवेक से काम लेना चाहिए क्योंकि विस्फोटक वातावरण को ज़हरीले धुएँ से दूषित करते हैं, जिस कारण कुछ लोग विशेषतः छोटे बच्चे और वृद्ध लोग बीमार पड़ जाते हैं। वास्तव में सारी प्रकृति ही वायु के प्रदूषण से प्रभावित हो जाती है।

एक बात और, पटाखों के निर्माण में बाल–मज़दूर लगाए जाते हैं। बचपन में ज़हरीले पदार्थों से उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। कभी–कभी मृत्यु भी हो जाती है। यह अच्छी बात नहीं है। इसलिए विस्फोटकों का त्याग करना चाहिए।

दीपावली तो आनन्द का उत्सव है, लोगों के जीवन में आनन्द फैलाए। यह दीपमाला अज्ञान के अँधेरे को नष्ट करे, सुख–समृद्धि के आलोक को सब जगह फैलाए। 'सब का कल्याण हो'।

उत्तराणि

मौखिकम्

1.उदाहरण देखें। 'कः उत्सवः' के उत्तर में, पाठ के आधार पर 'दीपोत्सवः' शुद्ध विकल्प।

उत्तर– क. अयोध्यावासिनः–(अयोध्यावासी–बहुवचन)–'के' (कौन–बहुवचन) के उत्तर में।

ख. गृहाणि–(घरों को)–'कानि' (किन को) के उत्तर में।

ग. धूम्रेण–(धुएँ से)–'केन' (किससे) के उत्तर में।

घ. बाल–श्रमिकाः–(बाल–मज़दूर–बहुवचन)–'के' उत्तर में।

ङ. अज्ञानस्य–(अज्ञान के)–'कस्य' के उत्तर में।

च. भद्राणि–(अच्छी परिस्थितियाँ) 'कानि' के उत्तर में।

छ. अनुपमम्–(अनुपम)–'कीदृशम्' (कैसा) के उत्तर में।

लिखितम्

उत्तर 1. क. दीपोत्सवः विजयदशमीतः विंशतिदिनानां पश्चात् कार्तिक–मासस्य अमावस्यायाम् आगच्छति।

ख. जनाः विद्युद्दीपैः, तैलदीपैः मोमवर्त्तिकाभिः च गृहाणि आलोकयन्ति।

ग. विस्फोटकानि विषाक्तेन धूम्रेण वातावरणं प्रदूषयन्ति।

एक बार वाचन करें। शब्द-प्रयोग पर ध्यान दें।

2. ध्यान रहे–विशेषण तथा विशेष्य–पद समान लिंग, विभक्ति व वचन में होते हैं। विशेषण शब्दों का अपना कोई लिंग नहीं होता। जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम पद के साथ प्रयुक्त होते हैं, उसी का लिंग, वचन व विभक्ति ले लेते हैं।

उदाहरण देखें–इदम् पर्व–दोनों पद नपुंसकलिंग–प्रथमा, एकवचन में।

उत्तर– क. निर्मलम् – नपुंसकलिंग, एकवचन –'गगनम्' की भाँति।

ख. सर्वम् – नपुंसकलिंग, एकवचन –'वस्तुजातम्' की भाँति।

ग. विषाक्तेन–तृतीया, एकवचन –'धूम्रेण' की भाँति।

घ. प्रमुदिताः– प्रथमा, बहुवचन –'जनाः' की भाँति।

ङ. नवीनानि– द्वितीया, बहुवचन –'वस्त्राणि' (कर्मपद) की भाँति।

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त वाचन करें। सहज ही शुद्ध प्रयोग का अभ्यास होगा।

3. **उदाहरण देखें और समझें।**–'दीपोत्सवे'–(दीवाली के उत्सव पर)–उचित विकल्प; क्योंकि शेष वाक्य का आशय–'...लोग लक्ष्मी पूजन करते हैं'। अतः प्रसंगानुसार सप्तमी विभक्तिपद/अधिकरण कारक का प्रयोग उपयुक्त।

इसी प्रकार प्रत्येक वाक्य का आशय समझकर, कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनें और वाक्यपूर्ति करें।

उत्तर– क. वितरन्ति–(बहुवचन) क्योंकि वाक्य का कर्त्ता 'ते' बहुवचन में, अतः क्रियापद तदनुसार।

ख. रात्रौ–(रात में/at night)–समयवाचक शब्द में सप्तमी प्रयोग उचित। शेष वाक्य का आशय... 'लोग घरों को आलोकित करते हैं), अतः 'रात्रौ' उचित विकल्प।

ग. जीवने–(जीवन में)–शेष वाक्य का आशय–'दीवाली लोगों के ...आनन्द लाए', अतः 'जीवने' इस प्रसंग में उचित विकल्प।

घ. वातावरणम्–(वातावरण को)–'प्रदूषयन्ति' (प्रदूषित करते हैं) का कर्म। अतः द्वितीया प्रयोग उचित।

ङ. रुग्णाः (बीमार–बहुवचन)–'जनाः' का विशेषण। अतः बहुवचन प्रयोग उपयुक्त।

उत्तर– **4.** क. दीप + उत्सवः (अ + उ = ओ)

ख. अति + आकर्षकम् (इ → य्)

ग. हर्ष + उल्लासेन (अ + उ = ओ)

घ. प्रति + आगतः (इ → य्)

ङ. पुष्पमालाभिः + च (ः → श्)

सन्धियुक्त पदों का उच्चारण करें। उच्चारण स्पष्ट और शुद्ध हो।

5. पाठांश पढ़ें; प्रत्येक पद पर ध्यान दें। तदनुसार प्रश्नों के उत्तर दें।

उत्तर– I. क. दीपोत्सवे–(दीवाली के उत्सव पर)–('कदा' (कब) के उत्तर में सप्तमी विभक्ति पद)।

ख. बन्धु-बान्धवेभ्यः (मित्रों और रिश्तेदारों को/के लिए)–('केभ्यः के उत्तर में)।

II. क. दीपोत्सवे जनाः लक्ष्मी-पूजनं कुर्वन्ति।

अथवा

दीपोत्सवे जनां लक्ष्मी-पूजनं कुर्वन्ति, बन्धुबान्धवेभ्यः च मिष्टान्नानि वितरन्ति।

ख. प्रहृष्टाः बालाः विस्फोटकान् स्फोटयन्ति।

अथवा

बालाः प्रहृष्टाः भवन्ति विस्फोटकान् च स्फोटयन्ति।

III. भाषिककार्यम्।

क. जनेभ्यः–('ते' सर्वनाम 'जनेभ्यः' (लोगों के लिए) प्रयुक्तम्)

ख. सप्तमी विभक्तिः एकवचनम्–(यथा–वृक्षे, गृहे, वने इत्यादि)

ग. 'वि' उपसर्गः 'तॄ' धातुः–(वि + तॄ → वितरति–एकवचनम्)

घ. प्रहृष्टः बालः–(विशेषण-विशेष्य समन्वय के नियमानुसार दोनों पदों में परिवर्तन आवश्यक)

ङ. बालाः–(कर्त्तापद–प्रथमा विभक्ति में)–('स्फोटकान्'–कर्मपद–द्वितीया में; 'प्रहृष्टाः'–विशेषण, कर्त्तापद 'बालाः' का)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. (*i*) विस्फोटकानां स्फोटने संयमेन विवेकेन च आचरितव्यम्।

(*ii*) विस्फोटकानि वातावरणं विषाक्तेन धूम्रेण प्रदूषयन्ति।

2. (*i*) बाल-श्रमिकाणां नियुक्तिः अनुचिता।

(*ii*) बाल्य-काले विषाक्त-पदार्थान् त्यजेत्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. त्योहार चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक या फिर राष्ट्रीय स्तर पर, सामान्य जन जीवन में एक अनूठी उमंग भर देते हैं। ऐसे में जीवन की एकरसता दूर हो जाती है; उत्साह और आनन्द की लहरों पर पारस्परिक मेल-जोल हिलोरें लेने लगता हैं। त्योहारों का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है।
2. पटाखों पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए या नहीं—यह एक अत्यन्त विवादास्पद विषय है। कोई भी खुशी का अवसर हो, लोग पटाख़े फोड़ना पसन्द करते हैं। किन्तु आज अन्य कई कारणों से प्रदूषण का स्तर इतना बढ़ चुका है कि पटाख़ों के धुएँ से स्थिति को और ज़्यादा भयावह बनाने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं। विचारणीय बिन्दु यह भी है कि क्या बाह्य प्रतिबन्ध लगाकर लोगों की खुशियों पर नियन्त्रण लगाना उचित होगा? सम्भवत: हमारा हित इसी में है कि हम संयम से काम लें और वातावरण को पटाख़ों के दुष्प्रभाव से यथाशक्ति बचाएँ।

❒❒

पाठाः 9–12 पुनरावृत्तिः

अभ्यास करने से पहले पाठों की पुनरावृत्ति अवश्य करें।

1. **मेल करते समय उच्चारण करें।**

ध्यान रहे–समानार्थक अथवा विपरीतार्थक शब्दों में लिंग-भेद हो सकता है। शब्द के अर्थ पर ध्यान दें।

उत्तर– **I.** क. जगत् (नपुंसकलिंग) – संसारः (पुल्लिंग)

ख. पक्षिणः (बहुवचन) – विहगाः / खगाः

ग. पर्व – उत्सवः

घ. सानन्दम् (आनन्द से) – आनन्देन सह (आनन्द के साथ)

ङ. पृथिव्याः (पृथिवी का) – धरायाः (धरा/पृथ्वी का)

II. क. ह्रस्वाकाराः – विशालकायाः

ख. मांसाहारिणः (बहुवचन) – शष्पभोजिनः (बहुवचन)

ग. जलवासिनः – स्थलवासिनः

घ. गमिष्यति – आगमिष्यति ('आ' उपसर्ग से विपरीत अर्थ)

ङ. रात्रौ (रात में) – दिवसे (दिन में)

अवधेयम्–'रात्रि' शब्द (स्त्रीलिंग) मति की भाँति 'दिवस' शब्द (पुल्लिंग) बालक की भाँति। (दोनों पदों के सप्तमी एकवचन रूप को नोट करें।

याद रहे–शब्द का रूप उसके अन्तिम अक्षर पर निर्भर करता है)।

उत्तर 2. **I.** क. गम् (गन्तव्यम्–जाना चाहिए; यथा–कर्त्तव्यम्–करना चाहिए)

ख. अस्   ग. इष् (इच्छ्)

घ. वद (प्रति + अवदत् = प्रत्यवदत्)   ङ. भू

II. क. अद्य + एव (अ + ए = ऐ)   ख. करोमि + अहम् (इ ⟶ य्)

ग. कः + अपि (अः ⟶ ओ)   घ. तत्र + एव = (अ + ए = ऐ)

ङ. मयूराः + च (ः ⟶ श्)   च. प्रधान + आचार्येण (अ + आ = आ)

3. I. उदाहरण देखें। पाठ की कथावस्तु के आधार पर शुद्ध विकल्प चुनें। कोष्ठकदत्त विकल्पों का वाचन ध्यानपूर्वक करें।

उत्तर– क. कुसङ्गात ख. शरद्कालीनम्

ग. कार्तिक–मासस्य अमावस्यायाम् घ. जीवनम् ङ. अवनतिः।

इन वाक्यों का वाचन करें। प्रयोग–लिंग, विभक्ति तथा वचन पर ध्यान दें। स्पष्ट उच्चारण करने से शुद्ध प्रयोग स्वतः ही मानस पटल पर अंकित रह जाएगा।

उत्तर– II. क. अयम् (पुल्लिंग)–'संसारः' पुल्लिंग शब्द, अतः पुल्लिंग सर्वनाम पद उचित।

ख. विविधाः (बहुवचन)–'प्राणिनः'–बहुवचन पद होने के कारण। (प्राणी, प्राणिनौ, प्राणिनः)

ग. अस्याम् (स्त्रीलिंग सप्तमी एकवचन)–'परीक्षायाम्' (स्त्रीलिंग, सप्तमी) के योग में उचित। (अस्मिन्–पुल्लिंग, सप्तमी; अस्याः–स्त्रीलिंग, षष्ठी अतः इस वाक्य में उचित नहीं)

घ. करोतु–'भवान्' कर्त्तापद, अतः प्रथम पुरुष, एकवचन का क्रियापद उचित; (कुर्वन्तु–प्रथम पुरुष, बहुवचन, कुरु–मध्यम पुरुष, एकवचन, अतः इस वाक्य में उचित नहीं)।

ङ. तिष्ठ–यह आदेश वाक्य है, सम्बोधन पद (मोहित!) भी एकवचन, अतः लोट् लकार मध्यम पुरुष का प्रयोग (एकवचन) उचित। (तिष्ठतु–प्रथम पुरुष–लोट्, तिष्ठति–लट्–अतः दोनों में से कोई भी उचित नहीं।)

उत्तर– III. क. त्रीणि–'पुस्तकानि' का विशेषण, अतः नपुंसकलिंग प्रयोग उचित।

ख. द्वे–'बालिके' का विशेषण होने के कारण, संख्यावाची स्त्रीलिंग में।

ग. चत्वारः–'बालकाः' पुल्लिंग पद होने के कारण, संख्यावाची भी पुल्लिंग में (चतस्रः–स्त्रीलिंग; चत्वारि–नपुंसकलिंग अतः यहाँ उचित नहीं)

तिस्रः–'बालिकाः' स्त्रीलिंग पद होने के कारण संख्यावाची भी स्त्रीलिंग में (त्रयः–पुल्लिंग; त्रीणि–नपुंसकलिंग–अतः यहाँ उचित नहीं)

घ. एकस्मिन्–('एक' मूल शब्द, सप्तमी एकवचन–'तस्मिन्' एतस्मिन् की भाँति) 'वने'–सप्तमी एकवचन पुल्लिंग पद का विशेषण होने के कारण।

एक:–'गज:' का विशेषण, अत: समरूप–(प्रथमा, एकवचन, पुल्लिंग)

4. मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें। अर्थ समझें। रिक्त स्थान छोड़कर संवाद के प्रत्येक वाक्य का वाचन करें। आशय समझें, प्रसंगानुसार मञ्जूषा से उचित पद चुनें। संवाद पूरा करें। उदाहरण देखें।

उत्तर – अगच्छम्–पूर्वगत प्रश्न के उत्तर में, 'अहम्' कर्त्ता के साथ उचित क्रियापद।

अपश्य:–प्रश्न में कर्त्ता 'त्वम्' के योग में उचित क्रियापद; संवाद में आगे उत्तर में भी इसी धातु के क्रियापद का प्रयोग...'अहम्...अपश्यम्'।

अनेकान्–'जन्तून्' का विशेषण-पद, समान विभक्ति, वचन तथा लिंग में।

केन–'सह' के योग में, प्रश्न में, उचित प्रयोग।

मित्रेण–पूर्वगत प्रश्न में 'केन' के उत्तर में, 'सह' के योग में, उचित प्रयोग।

गृहम्–वाक्य में 'प्रति' का प्रयोग, अत: द्वितीया विभक्ति पद उचित [वाक्य में क्रियापद 'आगच्छ:' (तुम आए) के योग में 'गृहम्' (घर को) उचित]।

सायंकाले–पूर्वगत प्रश्न में 'कदा' (कब) के उत्तर में समयवाचक–(सप्तमी विभक्ति) पद उचित।

भोजनं जलम्–वाक्य में 'विना' के योग में–द्वितीया विभक्ति पद उचित।

एक:–'आपण:' का विशेषण-प्रसंगानुसार उचित।

जलपानाय (जलपान के लिए)–प्रसंगानुसार उचित प्रयोग। (शेष वाक्य का आशय–'हम–वहाँ गए'।)

5. संख्यावाची पदों (50–100) की आवृत्ति कर लें। लिखते समय वर्तनी की ओर ध्यान दें।

उत्तर– क. अष्टषष्टिः ख. पञ्चषष्टिः ग. सप्तसप्ततिः
घ. त्रिसप्ततिः ङ. षडशीतिः (षट् + अशीतिः – 6 + 80)।

6. उदाहरण देखें और समझें। सभी प्रश्न पाठाधारित हैं।

प्रत्येक प्रश्न का वाचन करें। कोष्ठक में दिए गए विकल्पों को ध्यान से पढ़ें। पाठ की कथावस्तु के आधार पर उचित विकल्प चुनकर उत्तर दें।

उत्तर– क. कालस्य ख. शरद्–ऋतौ ग. विपणिषु घ. पीनपृथुलः
ङ. महापङ्के च. रम्यम् छ. वैज्ञानिकानाम्।

7. इस अभ्यास को करने से पहले लोट् तथा विधिलिङ् के धातु रूप की भली-भाँति पुनरावृत्ति कर लें।

उदाहरण देखें और समझें–भवान् आगच्छति (लट्)–प्रथम पुरुष, एकवचन।

भवान् आगच्छतु (लोट्)–प्रथम पुरुष, एकवचन।

प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, निर्देशानुसार क्रियापद बदलें कर्त्तापद का ध्यान रखें।

उत्तर– I. क. छात्रः श्लोकम् उच्चैः पठेत्।
ख. त्वं पाठं स्मर।
ग. वयम् आदेशं पालयेम।
घ. छात्राः संस्कृतं पठेयुः।
ङ. श्रृगालः मार्गदर्शनं करोतु।

उत्तर– II. क. स्वस्थः भव।
ख. छात्राः स्वच्छं लिखेयुः।
ग. अहम् वृक्षारोपणम् कुर्याम्।
घ. ते बालिके उपविशताम्।
ङ. किम् वयम् बहिः गच्छाम?

वाक्य में वचन-परिवर्तन करते समय कर्त्तापद तथा क्रियापद—दोनों की ओर ध्यान दें।

याद रहे—क्रियापद का रूप कर्त्तापद पर निर्भर करता है।

दोनों स्तम्भों के वाक्यों का उच्चारण करें।

मूल्यपरकप्रश्नाः

क. आत्मानम् आपद्भ्यः/संकटेभ्यः रक्षितुं लोभस्य त्यागं कुर्यात्।
अथवा यदि आत्मानम् आपद्भ्यः रक्षितुम् इच्छेत् तर्हि लोभस्य त्यागं कुर्यात्।

ख. उत्सव-काले बन्धु-बान्धवैः सह मिलित्वा आमोद-प्रमोदं कुर्यात्।

ग. विषाक्त-धूम्रेण स्वास्थ्य-हानिम् वारयितुम् प्रत्येकं जनस्य योगदानम् आवश्यकम्। अथवा
विषाक्त-धूम्रेण स्वास्थ्य-हानिः न स्यात् भवेत्, एतदर्थं प्रत्येकं जनस्य सहयोगः अनिवार्यः।

❐❐

13 दीपकस्य अहङ्कारः

हिंदी अनुवाद (दीपक का अहंकार)

1. एक बार जलते हुए दीपक को यह घमण्ड हुआ कि मैं तो सूर्य-चंद्रमा से भी बड़ा/महान हूँ।
2. (वह सोचने लगा) सूरज तो (केवल) दिन में आकर प्रकाश/रोशनी करता है, किन्तु रात को, अंधेरे का नाश तो मैं ही करता हूँ।
3. चन्द्रमा भी घर के अन्दर स्थित अंधकार को दूर करने में असमर्थ है मैं ही घर के कोने-कोने अर्थात् प्रत्येक कोने को उज्ज्वल करता हूँ।
4. (मन में इस प्रकार का विचार कर) उसने गर्व से सिर ऊँचा करके, आकाश में दृष्टि डालकर, गर्व भरे नेत्रों से सारी सृष्टि को देखा।
5. (जब वह बड़े घमण्ड से सारी सृष्टि को देख रहा था) तभी हवा का एक हल्का-सा झोंका आया। (जिसके परिणामस्वरूप) उसका सिर झुक गया, घमण्ड टूट गया, रह गई बस एक धुएँ की लकीर।
6. ज़रा सोचो, तूफ़ान आता है तो क्या कभी उससे ग्रहों और नक्षत्रों का प्रकाश कम हुआ है? अर्थात् महान तो ग्रह-नक्षत्र हैं जिनकी चमक तूफ़ानों में भी बनी रहती है, पर वे अहंकार नहीं करते इस बात का। (जबकि दीपक को अपने प्रकाश पर घमण्ड है उसकी ज्योति तो हवा के हल्के से झोंके से समाप्त हो जाती है।)
7. दीपक की ज्वाला/रोशनी हवा के एक हल्के-से झोंके से नष्ट हो गई और (अहंकार का परिणाम यह हुआ कि) उसके माथे पर कलंक की रेखा खिंच गई। (दीपक का अहंकार उसे ले डूबा)
8. संसार में हमेशा अहंकार का फल/परिणाम बुरा ही होता है। अतः जो काम करना हो, उसे तुम सदा बिना अहंकार के ही करो। अर्थात् कर्त्तव्य का पालन करो, अहंकार कभी न करो क्योंकि अहंकार मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है।

(प्रस्तुत कविता में कवि ने एक दीपक के अहंकार की एक घटना का वर्णन किया है और विनम्रता से कर्त्तव्य-पालन करने का संदेश दिया है।

दीपक ने सोचा कि वह महान है, किन्तु हवा के एक हल्के-से झोंके ने उसका घमण्ड चूर-चूर कर दिया। गगन-मण्डल में कितने ग्रह-नक्षत्र हैं,; महान तो वे हैं, क्योंकि उनका प्रकाश कभी कम नहीं होता, चाहे कितने भी तूफ़ान क्यों न आ जाएँ। अतः जीवन में जो काम करना हो, उसे घमण्ड से नहीं, विनम्र-भाव से करने में ही बुद्धिमत्ता है। विनीत रह कर कर्म करने से ही हम महान बनते हैं; अहंकार तो विनाश के मार्ग पर लाकर खड़ा कर देता है।)

उत्तराणि

मौखिकम्

प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें। बताएँ कि वह पाठानुसार शुद्ध है अथवा नहीं। उदाहरण देखें। कथन अशुद्ध है, क्योंकि पाठानुसार दीपक विनयशील नहीं, अहंकारयुक्त है।

क. अशुद्धम्–ऐसा उल्लेख पाठ में कहीं नहीं आया कि चन्द्रमा सूर्य से ज़्यादा बड़ा 'महत्तरः') है। केवल इतनी बात कही गई है कि सूरज दिन में रोशनी करता है और यद्यपि चन्द्रमा रात को रोशनी करता है तथापि घर के अन्दर उसका प्रकाश नहीं पहुँचता। दीपक अपने-आपको दोनों से बड़ा समझता है।

ख. अशुद्धम्–देखें पाठांश–'शशी अपि न समर्थः तमः हर्तुं गृहान्तस्थम्।

ग. अशुद्धम्–पाठानुसार चाँद ने नहीं बल्कि दीपक ने सारी सृष्टि को गर्व से देखा।

घ. अशुद्धम्–क्योंकि दीपक की ज्वाला हवा के झोंके से नष्ट हुई थी।

ङ. शुद्धम्–**देखें श्लोकांश**–'शिरः उन्नम्य गर्वेण...' (**ध्यान दें**–इस कथन को यदि श्लोक संख्या 5 की दृष्टि से देखना चाहें, तो इसे अशुद्ध भी कह सकते हैं–यहाँ 'नतम् शिरः, गतः दर्पः...' से पहले 'आगतः तदैव वायोः अल्पवाहः तत्र एकः' आया है। इसका अर्थ हुआ–'दीपकस्य शिरः अल्पवाहेन नतम्' न कि '...गर्वेण उन्नतम्'। किन्तु ऐसी स्थिति में कथन में एक से अधिक पदों पर उत्तर निर्भर होगा, जो उचित नहीं।)

च. अशुद्धम्   छ. शुद्धम्।

लिखितम्

1. प्रश्न ध्यान से पढ़ें और कोष्ठकदत्त पद भी। पाठ के आधार पर शुद्ध विकल्प चुनें। उदाहरण देखें और समझें।

उत्तर– क. दीपकस्य ख. दिवसे ग. अन्धकारम् घ. सृष्टिम्
ङ. ज्वाला च. वातस्य (वायोः) छ. दर्पस्य।

2. प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़ें, उत्तर के लिए पाठ में देखें।

उत्तर– क. ज्वलतः दीपकस्य अयम् अहङ्कारः अभवत् यत् अहम् सूर्यचन्द्रमाभ्याम् अपि महान् अस्मि।

अथवा

अहम् सूर्यचन्द्रमाभ्याम् अपि महत्तरः इति ज्वलतः दीपकस्य अहङ्कारः अभवत्।

ख. शशी गृहान्तस्थम् अन्धकारं/तमः हर्तुम् असमर्थः।

ग. यदा दीपकस्य ज्वाला नष्टा तदा तस्य दर्पः गतः।

अथवा

यदा दीपकस्य ज्वाला नष्टा, तदा तस्य शिरः नतम्, तस्य दर्पः/ अहङ्कारः अपि नष्टः, केवलम् एका धूम्ररेखा अवशिष्टा।

घ. नरः सदैव कर्त्तव्यं कर्म अहङ्कारं विना एव कुर्यात्।

3. परस्पर मेल करें–

उत्तर– I. समानार्थक-पद

ख. एत्य – आगत्य ग. शशी – चन्द्रमाः

घ. सदा – नित्यम् ङ. उज्ज्वलम् – प्रकाशमयम्

च. व्योम्नि – आकाशे।

II. विपरीतार्थक-पद

ख. सुपरिणामः – दुष्परिणामः ग. निशायाम् – दिवसे

घ. तमः – प्रकाशः ङ. गतः – आगतः

च. सदा – यदा-कदा।

4. अभ्यास करने से पहले श्लोकों का वाचन-पुनर्वाचन कर लें। फिर पुस्तक देखे बिना श्लोक पूर्ति करें।

मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें; रिक्त स्थान छोड़कर श्लोक का वाचन करें, आशय समझकर मञ्जूषा से प्रसंगानुसार उचित पद चुनें और श्लोकपूर्ति करें।

उत्तर– (क) अल्पवाहः, एकः, शिरः, दर्पः, धूम्ररेखा।

(ख) दुष्परिणामः, दर्पस्य; कुरु, कर्म, विना।

उत्तर 5. क. तदैव, ख. सदैव, ग. चाङ्किता, घ. नास्ति, ङ. गृहान्तस्थम्।

6. श्लोक पढ़ें, प्रत्येक पद पर ध्यान दें, आशय समझें। प्रश्न का वाचन ध्यानपूर्वक करें, निर्देशानुसार उत्तर दें।

उत्तर– I. पाठानुसार शुद्ध विकल्प चुनें और एक पद में उत्तर दें।

क. दीपकः ख. गर्वेण

ग. आकाशे ('व्योम्नि'–पाठ में) घ. शिरः (मस्तकम्)।

II. दीपकः गर्वेण शिरः उन्नम्य दर्पयुक्त–नेत्राभ्याम् सकलां सृष्टिं पश्यति।

III. क. नि उपसर्गः, ल्यप् प्रत्ययः ख. सकलाम् ग. शिरः।*

घ. तृतीया द्विवचनम्–(करण कारक का प्रयोग–'दर्पयुक्त–नेत्र' शब्द क्रियापद 'अपश्यत्' (देखा) का साधन होने के कारण)।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. (*i*) अहङ्कार–कारणात् दीपकः आत्मानं सूर्यचन्द्राभ्याम् अपिमहत्तरं मन्यते।

(*ii*) एतत् न शोभनम्।

2. (*i*) अहङ्कारः कदापि न कर्त्तव्यः।

(*ii*) अहङ्कारस्य सदा दुष्परिणामः भवति।

(*iii*) कर्त्तव्यं कर्म नित्यं कुर्यात्।

(*iv*) स्वकर्त्तव्यम् अहङ्कारं विना कुर्यात्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. श्लोकोच्चारण करते समय प्रत्येक पद का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण करें।

2. प्रस्तुत कविता में कवि ने दीपक का दृष्टान्त देकर यह बोध कराया है कि अहंकार विनाश की ओर ले जाता है। अहंकार मनुष्य के दृष्टिकोण को संकुचित कर देता है, वह विवेक खो बैठता है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं–'बुद्धिनाशात् प्रणश्यति' अर्थात् बुद्धि/विवेक खो जाने से मनुष्य नष्ट हो जाता है। रावण को भी अहंकार ने मार गिराया था। कवि कहते हैं कि दीपक को अपने सामर्थ्य पर बहुत गर्व हो रहा था। किन्तु हवा के एक हल्के से झोंके ने उसके अस्तित्व को ही मिटा दिया। अतः

---

* मूल शब्द 'शरम्' नपुंसकलिंग 'मानस्' 'सरस्' की भाँति।

जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण कार्य करना हो उसे मनुष्य अति विनम्र-भाव से, कर्त्तव्य की भावना से करे। उदारचित्त होकर करे, अहंकारवश होकर नहीं। घमण्ड से मनुष्य अपना सर्वनाश कर लेता है।

3. 'दीपकस्य अहङ्कारः' कविता की पुनरावृत्ति कर लें। मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें, अर्थ समझें। तत्पश्चात् रिक्तस्थान छोड़कर प्रत्येक वाक्य का वाचन करें, आशय समझकर उचित विकल्प चुनें, और वाक्य पूर्ति करें। प्रस्तुत वाक्यों में दीपक अपनी गाथा कहता है।

(*i*) सर्वश्रेष्ठः (सबसे श्रेष्ठ)

(*ii*) अस्तम्–'सूर्यः' कर्त्ता, गच्छति क्रियापद के साथ उचित कर्म।

(*iii*) रात्रौ (रात में)

(*iv*) अन्धकारम्

(*v*) वायोः (वायु का)–'अल्पवाहः' (झोंका) से सम्बन्ध।

(*vi*) ज्वाला, धूम्ररेखा

(*vii*) दीपकस्य

(*viii*) स्वकर्त्तव्यम्, अहङ्कारः

❐❐

14 चिकित्सकः चरकः

हिंदी अनुवाद (चिकित्सक चरक)

(ऋषि चरक आयुर्वेदीय ग्रन्थ–'चरक-संहिता' के रचयिता हैं। ऐसा माना जाता है कि स्वास्थ्य सम्बन्धी जिन नियमों का विवरण उन्होंने अपने ग्रन्थ में दिया है, उनका नियमपूर्वक पालन करने से व्यक्ति बीमार नहीं पड़ेगा। अतः उसे डॉक्टर की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इसलिए चरक को चिकित्सक की उपाधि विद्वानों ने दी है।

प्रस्तुत पाठ चरक संहिता में प्रतिपादित शरीर सम्बन्धी तथ्यों तथा सुस्वास्थ्य के सिद्धान्तों पर आधारित है। शरीर और मन एक-दूसरे पर आश्रित हैं–यह बात सर्वमान्य है। यही कारण है कि स्वास्थ्य-रक्षण के लिए पौष्टिक भोजन तथा आचार-विचार की शुद्धि–दोनों की अपेक्षा होती है।)

शरीर सच में, धर्म (कर्त्तव्य कर्म) का मुख्य साधन है–शास्त्रों का यह वचन सर्वथा (सब प्रकार से) उपयुक्त है। स्वस्थ शरीर के बिना जीवन की यात्रा कैसे पूरी हो सकती है?

चिकित्सा-शास्त्र में चरक-संहिता नामक आयुर्वेद का ग्रन्थ न केवल सबसे प्राचीन है, अपितु सबसे श्रेष्ठ भी है। किस रोग का क्या लक्षण है, क्या वस्तु (उस रोग में) गुणकारी है, क्या उसका उपचार (इलाज) है–ये सब बातें चिकित्सा के आचार्य ऋषि चरक द्वारा इस ग्रन्थ में विस्तार से बताई गई हैं।

महर्षि चरक कहते हैं–पाँच तत्त्वों से बना है यह शरीर। और पाँच ही शरीर की इन्द्रियाँ हैं और इन्द्रियों को संयम में रखना स्वस्थ रहने का एकमात्र उपाय है।

एक बात और वात, पित्त और कफ–ये शरीर के तीन दोष हैं।* इन तीनों दोषों अर्थात् तत्त्वों की मात्रा बराबर न होने पर शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार शरीर के दोषों का सही मात्रा में न होना ही रोग है और दोषों का संतुलन रोग का इलाज है। (शरीर के दोषों का) वह प्रमाण संतुलित (बराबर) हो–इसीलिए रोगी को दवा दी जाती है।

किन्तु यदि भोजन और आचरण के विषय में संयम (control) रखा जाए तो शरीर के दोषों का संतुलन (balance) स्वतः ही ठीक हो जाता है, 'न पचने पर भोजन विष (toxic) बन जाता है।' ऐसा डॉक्टर लोग कहते हैं। अतः हितकर

* वात = वायु; पित्त = अग्नि (body heat), कफ = श्लेष्मा (phlegm) यहाँ 'दोष' का अभिप्राय है–शरीर के वे तत्त्व, जिसकी सहायता से शरीर की विभिन्न प्रतिक्रियाएँ सुचारु रूप से चलती हैं। आयुर्वेद के मतानुसार इन दोषों का असंतुलन रोग को जन्म देता है।

भोजन करना चाहिए, सीमित मात्रा में भोजन करना चाहिए और ऋतु अथवा समय के अनुसार भोजन करना चाहिए।

मन और शरीर एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं, यह बात सर्वमान्य है। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए न केवल शुद्ध संतुलित (balanced) भोजन, स्वच्छ वायु, निर्मल पानी, उचित व्यायाम पर चित्त/मन की शुद्धि भी आवश्यक है। 'मेरा मन अच्छे विचारों वाला हो' ऐसा वेदों का कहना है। अतः अच्छा आचरण ज़रूरी है और सब प्रकार का संयम स्वस्थ आचरण है अर्थात् स्वस्थ रहने का सही उपाय।

उत्तराणि

भारत के चिकित्सा-शास्त्र में चरक-संहिता प्रसिद्ध ग्रन्थ है। आयुर्वेद का यह ग्रन्थ आज भी प्रतिष्ठा का विषय है। आयुर्वैदिक चिकित्सा-पद्धति इसी पर आधारित है। इस ग्रन्थ के रचयिता ऋषि चरक का मानना है कि सुस्वास्थ्य के लिए आहार में संयम और जीवन में सदाचार महत्त्वपूर्ण है।

मौखिकम्

कथन का वाचन ध्यानपूर्वक करें। उदाहरण देखें और समझें। कथन अशुद्ध है क्योंकि 'चरकसंहिता' पाठानुसार 'प्राचीनतमः ग्रन्थः'—'आधुनिकतमः' नहीं।

उत्तर—क. अशुद्धम्—देखें पाठांशः '...शरीरस्य त्रयः दोषाः।

ख. शुद्धम्—देखें पाठांशः '...परं यदि आहार-आचार-विषये संयमः...समतोलनं स्वयमेव भवति।

ग. अशुद्धम् घ. शुद्धम् ङ. अशुद्धम्—(मनः मे शिवसंकल्पमस्तु)।

लिखितम्

1. **प्रश्नों का वाचन ध्यान से करें। पाठ के आधार पर उत्तर दें। उदाहरण देखें और समझें। कोष्ठकदत्त विकल्पों का वाचन ध्यान से करें।**

उत्तर— क. चरकसंहिता — 'कः' ग्रन्थः' के उत्तर में।

ख. पञ्च (पाँच) — 'कति' (कितनी) के उत्तर में।

ग. त्रयः (तीन) — 'कति' के उत्तर में।

घ. भोजनम् (नपुंसकलिंग) — 'किम्' के उत्तर में।

ङ. रोगम् (रोग को) — 'कम्' के उत्तर में। (रोग शब्द पुल्लिंग)

च. चिकित्सा-शास्त्रे — 'कस्मिन् शास्त्रे' के उत्तर में।

छ. रोगस्य — 'कस्य' के उत्तर में।

2. पाठाधारित वाक्यपूर्ति–उदाहरण देखें।

उत्तर– क. हितभुक्, ऋतुभुक् ख. प्रमाणम्, रोगः ग. संयमः
घ. औषधम् ङ. विषम्।

उत्तर 3. I. समानार्थक-पद–

ख. स्वच्छः – निर्मलः ग. औषधम् – ओषधिः
घ. रोगः – व्याधिः ङ. संयमः – इन्द्रियनिग्रहः
(इन्द्रियों को वश में रखना)।

II. उदाहरण देखें और समझें।

ख. मितभुक् – यः परिमितम् आहारम् भुङ्क्ते (खादति)
ग. ऋतुभुक् – यः ऋतु–अनुसारं (काल-अनुसारं) खादति।

4. उदाहरण देखें और समझें।

(**स्मरण रहे–**विना के योग तृतीया भी लगती है)।
मञ्जूषा से उचित प्रश्नवाचक पद चुनें और प्रश्न-निर्माण करें।

उत्तर– क. कस्मै औषधम् दीयते? रुग्णाय–चतुर्थी, एकवचन के लिए कस्मै (किम्–चतुर्थी, एकवचन)।

ख. स्वस्थः भवितुम् कस्य शुद्धिः अपेक्षिता? (चित्तस्य– षष्ठी, एकवचन, अतःकस्य)।

ग. शरीरस्य केषां समतोलनम् एव स्वास्थ्यम्?
(दोषाणाम्–षष्ठी बहुवचन, अतः केषाम्–षष्ठी बहुवचन)।

घ. रोगम् अपहर्तुम् किं दीयते? (औषधम् नपुंसकलिंग, अतः किम् नपुंसकलिंग)।

5. उदाहरण देखें और समझें–'प्राचीनतमः' शुद्ध– क्योंकि 'ग्रन्थः' पुल्लिंग-पद। अतः विशेषण भी पुल्लिंग में।

उत्तर– क. स्वास्थ्यम् – विना के योग में द्वितीया विभक्ति।

ख. अनिवार्यः – 'सदाचारः' पुल्लिंग पद होने के कारण।

ग. पञ्च – **स्मरण रहे–**संख्यावाची शब्दों में केवल 'चार' तक की संख्या के पदों में लिंग-भेद होता है। अतः 'पञ्च'– सब लिंगों में समान।

घ. रुग्णाय – 'दा' धातु के योग में चतुर्थी प्रयोग।

ङ. एतेषाम् – 'एतत्' शब्द सर्वनाम, अतः षष्ठी बहुवचन शुद्ध रूप–'एतेषाम्' यथा 'तेषाम्', 'केषाम्', 'सर्वेषाम्' आदि।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. स्वास्थ्यस्य रक्षायै चित्तशुद्धिः अपि अपेक्षिता।
2. मनः शिवसङ्कल्पम् अस्तु।
3. सदाचारः अनिवार्यः।
4. स्वस्थः भवितुं सर्वविधः संयमः अपेक्षितः।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. जैसा मन वैसा तन। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर के अधिकांश रोग मन की अस्वस्थता के कारण उत्पन्न होते हैं। मन शान्त व प्रसन्न हो तो शरीर भी सुस्वस्थ रहता है।
2. अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार में संयम-नियम अत्यावश्यक है। जिह्वा की लालसा में हम बहुधा भोजन के विषय में असावधान हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप कई रोगों के शिकार बन जाते हैं। परिमित व संतुलित आहार से स्वास्थ्य लाभ निश्चित है।
3. सुस्वास्थ्य की कामना कौन नहीं करता। किन्तु उसके लिए केवल भोजन में ही नहीं अपितु जीवन में सब विधि से संतुलन ज़रूरी है। अपने आचार-विचार-व्यवहार में संतुलन बनाए रखने से शरीर भी स्वस्थ बना रहता है।
4. चरकसंहिता आयुर्वेद नामक प्राचीन ग्रन्थ का अंश है। आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धति इसी पर आधारित है।

❑❑

15 नीतिपथः

हिंदी अनुवाद (नीति का पथ)

(प्रस्तुत श्लोक भर्तृहरि रचित 'नीतिशतकम्' नामक श्लोक-संग्रह से लिए गए हैं। इस महाकवि के तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं–शृंगारशतकम्, नीतिशतकम् और वैराग्यशतकम्। प्रत्येक रचना में एक सौ श्लोक हैं। 'नीतिशतकम्' में लोक-व्यवहार सम्बन्धी नीतियों को दर्शाया गया है।)

1. नीच लोग विघ्न-बाधाओं के भय से कोई कार्य शुरू ही नहीं करते। मध्यम प्रकृति वाले काम को शुरू करके बाधाओं के आने पर बीच में ही रुक जाते हैं। उत्तम जन बारम्बार विघ्नों की ठोकरें खाकर भी शुरू किए हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते।

   इस श्लोक में उन लोगों को उच्च कोटि में रखा गया है जो विषम परिस्थितियों में भी अपना संकल्प पूरा करके दिखाते हैं। जीवन में महत्त्वाकांक्षाएँ सभी रखते हैं, किन्तु सबके सपने साकार नहीं होते।

   किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य को पूरा करने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। यह सोचकर कुछ लोग तो घबरा जाते हैं, इसलिए काम शुरू ही नहीं करते। कुछ शुरू तो कर देते हैं, किन्तु जब विघ्न आते हैं तो हिम्मत हार जाते हैं और काम अधूरा छोड़ देते हैं, किन्तु कुछ लोग साहसी होते हैं। बाधाएँ आएँ तो आएँ, वे धैर्य और बुद्धिबल से कार्यसिद्धि का मार्ग निकाल लेते हैं। ऐसे लोग ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

   भाव–बहुधा प्रतिकूल परिस्थितियाँ कार्य-सिद्धि में बाधा उत्पन्न कर देती हैं। ऐसी अवस्था में व्यक्ति विचलित न हो। अपने निर्धारित लक्ष्य को पाने के लिए धैर्यपूर्वक संघर्ष करता रहे। महान व्यक्तियों की यही विशेषता होती है।

2. अच्छे लोगों की संगत की इच्छा होना, दूसरों के गुणों के प्रति लगाव (द्वेष का अभाव), गुरु के प्रति विनम्रता, विद्या पाने में रुचि, अपनी पत्नी से प्यार, लोकनिन्दा से भय, भगवान शिव के प्रति भक्ति-भाव, आत्मसंयम की शक्ति, दुर्जन के साथ से छुटकारा–ये अच्छे गुण जिन लोगों में विद्यमान हैं, उन लोगों को प्रणाम।

   अर्थात् व्यक्ति को केवल अच्छे लोगों की संगति की कामना करनी चाहिए। दूसरों के दोष न ढूँढ़कर उनके गुणों की ओर ध्यान देना श्रेयस्कर है। अपने गुरु के प्रति विनय का भाव रखना चाहिए। सदा ज्ञानवर्धन में रुचि,

अपनी पत्नी से प्रेम, भगवान के प्रति निश्चल भक्ति—ये सब वांछनीय गुण हैं। व्यक्ति को चाहिए कि कभी ऐसा काम न करे, जिससे लोग उसकी निन्दा करे; अपने आचार-विचार आदि पर नियन्त्रण रखे और कुसंग का सर्वथा त्याग करे। जिन लोगों में ऐसे गुण होते हैं वे लोग अत्यन्त आदरणीय होते हैं।

भाव—सद्गुणों वाला व्यक्ति सबके आदर का पात्र बनता है। अतः जीवन में सन्मार्ग पर चलें।

3. इस श्लोक में विद्या की महिमा का वर्णन है।

विद्या ही मनुष्य का सच्चा सौन्दर्य है; भली-भाँति छिपाकर रखी हुई सम्पत्ति है; विद्या सब प्रकार का सांसारिक सुख प्रदान करने वाली है; यश का सुख देने वाली है; विद्या गुरुओं की भी गुरु है अर्थात् परम गुरु है। विदेश में विद्या ही मित्र है। विद्या सबसे बड़ा देवता है। राजाओं में भी विद्या (विद्यावान) की पूजा होती है, धन की नहीं। विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है।

अर्थात् विद्या के बल पर व्यक्ति सम्मान और प्रतिष्ठा पाता है और सभ्य समाज में शोभायमान होता है। विद्या रूपी धन सबसे अधिक गोपनीय सम्पत्ति है, क्योंकि अन्य धन तो चुराया जा सकता है, किन्तु व्यक्ति के ज्ञान-भण्डार को कोई नहीं ले जा सकता। विद्या के बल पर धन अर्जित करके मनुष्य सुख-ऐश्वर्य के साधन इकट्ठा कर सकता है। विद्या से ही मनुष्य की कीर्ति चारों ओर फैलती है। विद्या को परमगुरु कहा गया है। गुरु हमारा मार्गदर्शक होता है; विद्या भी हमारा मार्गदर्शन करती है, विद्वान व्यक्ति अपने ज्ञान तथा विवेक के आधार पर सही मार्ग अपनाकर जीवन को सफल बना लेता है। विदेश में जहाँ अपना कोई नहीं होता, अपनी विद्या के सहारे ही मनुष्य सुखपूर्वक जीवन-यापन करने के योग्य हो जाता है। विद्या परम पूजनीय देवता है। विद्या के लिए की गई साधना देव-पूजन की भाँति इष्ट-फल प्रदान करती है। विद्या की महिमा अनन्त है। राजा लोग भी विद्वान को अपनी सभा में प्रतिष्ठा देते हैं; राजसभाओं में वह सम्मान धनवान को नहीं दिया जाता। विद्या बिना मनुष्य बिल्कुल पशु के समान है। विद्या ही मनुष्य को योग्य बनाती है।

भाव—विद्या मनुष्य को सभ्य और सुसंस्कृत बनाती है। अतः विद्या-लाभ के लिए सतत प्रयास करना चाहिए।

4. इस श्लोक में तीन प्रकार के लोगों के स्वभाव का विवेचन किया गया है। उत्तम, मध्यम और अधम—ये तीन श्रेणियाँ हैं।

जो मनुष्य पाप कर्म करने से डरता है (संकोच करता है) वही इस संसार में उत्तम कोटि का व्यक्ति माना जाता है। जो मन में पाप का विचार रखता है, किन्तु अपयश (निन्दा) के डर से पाप का आचरण नहीं करता, वह मध्यम कोटि का है, परन्तु जिस व्यक्ति को न तो पाप-कर्म से कोई भय है और न ही लोक-निन्दा से लज्जा है, वह ज्ञानी-जनों द्वारा अधम प्रकृति वाला माना गया है।

अर्थात् जो विवेकशील लोग पाप-कर्म का विचार भी मन में नहीं लाते, पाप का मार्ग नहीं अपनाते वे श्रेष्ठ जन हैं। किन्तु कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनके मन में पाप की भावना तो होती है, किन्तु गलत काम करने से अपयश होगा—यह सोचकर कुकर्म से दूर रहते हैं, ऐसे लोगों की गणना मध्यम कोटि में होती है। कुछ इतने निकृष्ट स्वभाव के होते हैं कि बिना किसी संकोच के पाप-कर्म में लीन हो जाते हैं। उन्हें पाप-कर्म करने से कोई डर नहीं और न ही उन्हें कोई लोक-लाज। ऐसे अधम लोग निस्संकोच हो कुकर्म करते हैं।

भाव—सद्भावना और अच्छे संस्कार व्यक्ति को श्रेष्ठ बनाते हैं।

5. इस श्लोक में तीन प्रकार के सांसारिक सुखों का विवरण है। पुत्र का सुख, पत्नी का सुख और मित्र का सुख—ये तीनों एक साथ दुर्लभ हैं अर्थात् तीनों एक साथ किसी को मिल जाएँ ऐसा प्रायः नहीं होता।

जो अपने सद्कर्मों द्वारा पिता को प्रसन्न करे, वही पुत्र होता है। जो केवल अपने पति के हित की ही कामना करे, वह पत्नी होती है। मित्र उसे कहते हैं, जो सुख-दुःख—दोनों परिस्थितियों में एक समान व्यवहार करें। किन्तु ये तीनों सुख किसी पुण्यवान व्यक्ति को ही मिलते हैं।

अर्थात् पिता को पुत्र पर गर्व होता है। उसे सफल देखने की कामना पिता के मन में सदा बनी रहती है। परन्तु साथ में यह अपेक्षा भी होती है कि वह अपने माता-पिता की उपेक्षा न करें। यदि पुत्र का आचरण अच्छा होता है तो पिता को बेहद खुशी मिलती है।

एक पति की हार्दिक कामना होती है कि उसकी पत्नी उसकी हितेच्छु (हित चाहने वाली) हो। ऐसी पत्नी के आचरण से पति को सुख का अनुभव होता है। प्रायः समृद्धि के समय मित्र चारों ओर मँडराते हैं, किन्तु विपदा आने पर साथ छोड़ जाते हैं। ऐसे लोगों को मित्र नहीं कहा जा सकता।

सच्चा मित्र तो वह है जो संकट काल में साथ दे, सहारा बने, धैर्य और उत्साह बढ़ाए। ऐसे मित्र की मित्रता व्यक्ति के लिए बहुत सुखद होती है, किन्तु ये तीनों सुख–पुत्र, पत्नी और मित्र का सुख मिल जाए ऐसी स्थिति दुर्लभ होती है। सुख अपने पुण्य कर्मों के अनुसार भाग्यशाली को प्राप्त होता है।

भाव–धन्य है वह जिसका पुत्र आज्ञाकारी है, जिसकी पत्नी सदा उसके हित की कामना करती है और जिसका मित्र सुख–दुःख में सहयोग देने के लिए तत्पर रहता है, किन्तु ऐसी सुखद स्थिति किसी–किसी को उपलब्ध होती है। प्रायः देखा गया है कि सारे सुख किसी को नहीं मिलते।

उत्तराणि

मौखिकम्

उच्चारण करें।

लिखितम्

श्लोकों का वाचन करके प्रत्येक शब्द का अर्थ समझ लें। उत्तर देने में कठिनाई हो तो पाठ में देखें। सन्धियुक्त शब्दों का सन्धि-विच्छेद करके अर्थ समझें।

1. **उदाहरण देखें**–'केन' के उत्तर में 'विघ्नभयेन' अर्थात् नीचैः विघ्नभयेन कार्यं न प्रारभ्यते।

   सरल भाषा में इसका अर्थ है–नीच लोग विघ्न के भय से कोई महत्त्वपूर्ण काम शुरू ही नहीं करते।

   श्लोकों के आधार पर शेष प्रश्नों के इसी प्रकार एक पद में उत्तर दें। कोष्ठकदत्त विकल्पों का ध्यान से वाचन करें एवं उचित विकल्प चुनें।

उत्तर– क. उत्तमजनाः – (श्लोकांश–'प्रारब्धम् **उत्तमजनाः** न परित्यजन्ति'।)

ख. विद्या – '**विद्या** बन्धुजनो विदेशगमने'।

ग. सुचरितैः – 'प्रीणाति यः **सुचरितैः** पितरं स पुत्रः'।

घ. गुरूणाम् – '........ विद्या गुरूणां गुरुः'।

ङ. हितम् – '........ **हितम्** इच्छति तत् कलत्रम्।

च. अपवादात् – '........न वा लज्जापवादादपि'।

छ. अधमः – '........अधमः सर्वत्र निन्दास्पदम्'।

2. उदाहरण देखें, वाचन करें, अर्थ समझें।

उत्तर– क. विद्या भोगकरी यशः सुखकारी च।

ख. अधमस्य पापात् भयम् नास्ति।

3. पाठ से उद्धृत श्लोकांशों को रिक्त स्थान छोड़कर पढ़ें, फिर श्लोकानुसार मञ्जूषा से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरें–लिखते समय उच्चारण करें।

उत्तर– क. राजसु ख. विद्या ग. पशुः

घ. मित्रम्, सुखे ङ. विदेशगमने।

4. समानार्थक-पद।

I. उदाहरण देखें–त्रस्यति–बिभेति (डरता है)।

उत्तर– ख. भयम्–त्रासः (डर)। ग. वाञ्छा–इच्छा, घ. पापात्–पातकात् (पाप से)। ङ. निन्दास्पदम्–निन्दापात्रम्। च. उदाहृतः (कहा गया है)–कथितः, छ. आपदि (आपत्ति में)–संकटकाले।

II. उदाहरण देखें–शक्तिः–आत्मदमने अर्थात् अपने-आपको संयम में रखने की शक्ति।

उत्तर– ख. भयम्– लोकापवादात् (लोक-निन्दा का भय)।

ग. नम्रता – गुरौ (गुरु के प्रति विनम्रता)।

घ. प्रीतिः – परगुणे (दूसरों के गुणों में प्रीति होना)।

ङ. व्यसनम्–विद्यायाम् (विद्या में रुचि होना)।

च. वाञ्छा– सज्जसङ्गमे (संत्संगति की इच्छा)।

उचित मिलान करके वाचन करें। भाव समझें। प्रयोग पर ध्यान दें।

5. उदाहरणानुसार धातु निर्देश करें।

उत्तर– क. इष् (इच्छा करना) ख. अस्

ग. ज्ञा घ. त्यज् (उपसर्ग– परि)।

6. उदाहरण देखें–धरा, पृथ्वी भू–पर्यायवाची।

उत्तर– क. पत्नी, भार्या; ख. अपवादः, निन्दा; ग. महीपालः, नृपः।

7. उदाहरण देखें–शुद्ध प्रयोग– 'लोकापवादात्', क्योंकि जिससे भय होता है, उसमें पञ्चमी लगती है; यथा–बालः सिंहात् त्रस्यति।

उत्तर– क. तेभ्यः – 'नरेभ्यः' का सार्वनामिक विशेषण होने के कारण चतुर्थी, बहुवचन प्रयोग।

ख. पूजितम् – धनम्–नपुंसकलिंग पद के साथ नपुंसकलिंग प्रयोग।

ग. पापात् – क्रियापद 'त्रस्यति' के योग में पञ्चमी प्रयोग।

घ. या – 'सा भार्या'–के साथ सम्बन्धवाची सर्वनाम, स्त्रीलिंग में।

ङ. देशभक्तेभ्यः – 'नमः' के योग में चतुर्थी विभक्ति पद का प्रयोग।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. विद्या सर्वदा अधिकं महत्त्वपूर्णम् तत्त्वं, धनम् महत्त्वपूर्णम् नास्ति।
2. सुपुत्रः सुचरितैः (शोभनैः कार्यैः) पितरं प्रीणयति/आनन्दयति।
3. सुमित्रं सम्पदि (सुखे) आपदि (दुःखे) च समम् एव आचरति।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. श्लोकों का उच्चारण/अनुवाचन करते समय प्रत्येक पद पर ध्यान दें। उच्चारण जितना स्पष्ट व शुद्ध होगा, उतना ही आनन्द आएगा और भाषा-बोध भी सुगम होगा।
2. संस्कृत का साहित्य ऐसी सूक्तियों से भरा पड़ा है जिनमें सदाचार, धैर्य, उद्यम आदि सदगुणों की महिमा अत्यल्प शब्दों में वर्णित है। ऐसी सूक्तियों का संकलन करें, जीवन भर काम आएँगी। कुछ सूक्तियाँ–

(क) *(i)* धैर्यम् आपदां तरणिः।

(ii) त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले।

(iii) विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

(ख) (*i*) विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।

(*ii*) विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

(ग) (*i*) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।

(*ii*) आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।

(*iii*) आचारः परमो धर्मः।

3. भतृहरि एक राजा थे। साथ ही कवि, दार्शनिक (Philosopher) और संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ भी। वे अपनी रानी पिंगला से बहुत प्रेम करते थे, किन्तु भाग्यवश उनके जीवन में ऐसी घटना घटी कि उन्हें संसार से वैराग्य हो गया। उन्होंने अपना राज-पाट सब त्याग दिया। तब उन्होंने तीन शतकों (सौ-सौ श्लोकों का संग्रह)– शृंगार-शतक, नीतिशतक व वैराग्यशतक की रचना की। संस्कृत साहित्य में इस शतकत्रय का विशिष्ट स्थान है। माना जाता है कि अलवर में उनकी समाधि है।

❐❐

पाठाः 13–15 पुनरावृत्तिः

अभ्यास-प्रश्न करने से पूर्व पाठों की आवृत्ति कर लें। श्लोकों पर विशेष ध्यान दें। अर्थ स्पष्ट होने से उत्तर देना सरल होगा।

1. **रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य का वाचन करें। प्रसंगानुसार उचित विकल्प चुनकर प्रत्येक वाक्य पूरा करें।**

I. प्रस्तुत खण्ड में पाठगत तथ्य के आधार पर उचित विकल्प चुनना है। अतः पूर्वगत पाठों का भली-भाँति वाचन कर लें।

उत्तर– क. पञ्च – 'पञ्च च देहस्य इन्द्रियाणि'–चिकित्सकः चरकः' पाठ से।

ख. भोजनम् – (चिकित्सकः चरकः)।

ग. दोषाणाम् – चिकित्सकः चरकः

घ. विद्या – (भर्तृहरि-श्लोकाः)

ङ. उत्तमाः – (नीतिपथः)

च. पशुः – (भर्तृहरेः श्लोकाः)

II. प्रस्तुत खण्ड में व्याकरण के आधार पर शुद्ध प्रयोग की दृष्टि से उचित विकल्प चुनना है। यद्यपि उचित विकल्प पाठों में देखा जा सकता है, तथापि व्याकरण तत्त्व को समझना हितकर होगा।

उत्तर– क. पापात् – 'त्रस्यति' (डरता है) के योग में पञ्चमी विभक्ति पद उचित।

ख. पितरम् – 'पितृ' शब्द ऋकारान्त, द्वितीया एकवचन में शुद्ध रूप।

ग. मनः – 'मनस्'–मूल शब्द, नपुंसकलिंग; प्रथमा एकवचन प्रयोग। (मनः, मनसी, मनांसिः, यशः, यशसी, यशांसि)

घ. परा – 'देवता' स्त्रीलिंग शब्द का विशेषण होने के कारण–स्त्रीलिंग रूप उचित।

ङ. श्रेष्ठतमः – प्रयोगानुसार 'ग्रंथः'–पुल्लिंग शब्द का विशेषण होने के कारण पुल्लिंग प्रयोग उचित।

6. सः – उपवाक्य में 'यः' सम्बन्धवाचक पुल्लिंग सर्वनाम का प्रयोग, अतः 'सः'–पुल्लिंग उचित।

2. प्रश्न का वाचन ध्यान से करें। पाठ के आधार पर कोष्ठक से उचित विकल्प चुनें। तत्पश्चात् सम्पूर्ण वाक्य में उत्तर दें। लिखते समय वर्तनी का ध्यान रखें।

उत्तर– क. दीपकस्य अहंकारः अभवत्। (विभक्ति–प्रयोग पर ध्यान दें। हिन्दी पर्याय वाक्य में–'दीपक को अहंकार हुआ'–परसर्ग 'को' किन्तु संस्कृत में षष्ठी प्रयोग–सम्बन्धकारक)

ख. तमः (अंधेरे को) – 'किम्' (नपुं०) के उत्तर में।

ग. सृष्टिम् – 'काम्' (स्त्री०) के उत्तर में।

घ. शरीरम् – 'किम्' (नपुं०) के उत्तर में।

ङ. चित्तस्य – 'कस्य' के उत्तर में।

च. सुचरितैः – 'कथम्' (किस प्रकार) के उत्तर में।

छ. हितम् – 'किम्' (नपुं०) के उत्तर में।

उत्तर 3. I. क. निशायाम् – रात्रौ ख. एत्य – आगत्य (आकर)

ग. तमसः – अन्धकारस्य घ. वायोः – पवनस्य

ङ. वाञ्छा – इच्छा च. त्रस्यति – बिभेति/भयभीतः अस्ति

II. क. तमः – प्रकाशम् ख. स्वस्थः – रुग्णः

ग. अधमः – उत्तमः घ. विस्तरेण – संक्षेपण

ङ. समः – विषमः च. उन्नम्य – नत्वा (नम् + क्त्वा)

4. मञ्जूषा में दिए प्रश्नवाचक शब्दों को पढ़ें। शब्द रूप (किम्–पुल्लिंग/स्त्रीलिंग) व प्रयोग समझें।

यहाँ एक परिस्थिति में सम्भावित प्रश्न दिए गए हैं, किन्तु प्रश्नवाचक शब्द का स्थान रिक्त छोड़ा गया है।

उदाहरण–तेन कस्याम् कक्षायाम् प्रवेशः लब्धः। इस वाक्य में **कस्याम्** (स्त्रीलिंग) का प्रयोग, **कक्षायाम्** (सप्तमी, एकवचन) स्त्रीलिंग पद के आधार पर हुआ है।

रिक्त स्थान के साथ आए संज्ञापद के लिंग, वचन व विभक्ति के अनुरूप उचित प्रश्नवाचक शब्द मञ्जूषा से चुनकर लिखें।

उत्तर– क. कस्मिन् (पुल्लिंग) – 'विद्यालये (पुल्लिंग) सप्तमी एकवचन होने के कारण।

ख. कया (स्त्रीलिंग)	–	'अध्यापिकया' (स्त्रीलिंग), तृतीया, एकवचन होने के कारण।
ग. कस्यै (स्त्रीलिंग)	–	'अध्यापिकायै' (स्त्रीलिंग), चतुर्थी, एकवचन के साथ समान विभक्ति-पद का प्रयोग।
घ. कस्मै (पुल्लिग)	–	'बालकाय' (पुल्लिग) के साथ, चतुर्थी एकवचन पद का प्रयोग।
ङ. केन (पुल्लिग)	–	'बसयानेन' (पुल्लिग) के साथ, तृतीया एकवचन का प्रयोग।

इन वाक्यों का वाचन करें। प्रश्नवाचक तथा उसके योग में आए संज्ञापद पर विशेष बल दें। शुद्ध प्रयोग सहज और सरल हो जाएगा।

5. मञ्जूषा में आए शब्दों को पढ़ें। रिक्त स्थान छोड़कर अनुच्छेद पढ़ें। वाक्यों का आशय समझें। सभी वाक्य चित्र में दिख रहीं 'क्रियाओं' से सम्बन्धित हैं। उदाहरण देखें। रिक्त स्थान भरें। वाक्यपूर्ति करते समय सम्पूर्ण वाक्य पर ध्यान दें। प्रसंग समझें तत्पश्चात् उचित विकल्प चुनें।

उत्तर– युवकाः	–'क्रीडन्ति' का कर्त्ता। ('बालकाः' युवतयः'–भी कर्त्तापद)
कन्दुकेन	–'क्रीडन्ति' का साधन (करण कारक), अतः तृतीयान्त प्रयोग।
बालुकाः (रेत)	–'सन्ति' का कर्त्ता।
गृहाणि (घरों को)	–'रचयन्ति' का कर्म (Object)।
जलतरङ्गाः (लहरें)	– क्रियापद–'आगच्छन्ति' का कर्त्ता।
मोटरनौकाभिः (मोटर-बोट द्वारा)	–'जलविहारं कुर्वन्ति' का साधन, अतः करण–कारक–तृतीया विभक्ति पद।
मत्स्यजीविनः (मछुआरे)	–'गच्छन्ति' का कर्त्ता बहुवचन में।

आनन्दम् (आनन्द को)	– 'अनुभवन्ति' का कर्म (Object)।
वृक्षाः (पेड़)	– क्रियापद 'वर्धयन्ति' (बढ़ाते हैं) का कर्त्ता। विशेषण-पद 'हरिताः' के योग में उचित विशेष्य-पद।
शोभाम् (शोभा को)	– क्रियापद 'वर्धयन्ति' का कर्म (Object) ।

रिक्त स्थान पूर्ति के उपरान्त वाचन करें। पद प्रयोग पर ध्यान दें।

अवधेयम्–अभ्यास-प्रश्नों के उत्तर में, कोष्ठकों में दिया विवरण केवल सहायतार्थ है। नियम समझ लेने के बाद सहज-प्रयोग का अभ्यास महत्त्वपूर्ण है। अतः पाठों/अनुच्छेदों/वाक्यों का वाचन-पुनर्वाचन लाभप्रद होगा।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. शुद्ध भावः–

(*iii*) उत्तमजनाः विपत्तिषु अपि स्वकर्त्तव्यात् न विचलन्ति, एतत्कृते ते अहङ्कारं न कुर्वन्ति।

(उत्तम जन विपत्तियों में भी अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होते।)

2. अस्मिन् संसारे सः उत्तमः यः पापात् त्रस्यति अर्थात् पापकर्म मनसा वाचा कर्मणा न आचरति। अथवा

उत्तम जनाः मनसा अपि पापाचरणं न कुर्वन्ति।

3. स्वास्थ्यार्थं संयमस्य महत्त्वम् अत्र प्रतिपादितम्।

❑❑

16 सूर्यः कार्यावरोधं गच्छति

हिंदी अनुवाद (सूर्य कार्यावरोध करता है)

प्रस्तुत पाठ काल्पनिक है। सूर्य द्वारा कार्यावरोध मात्र एक कल्पना है। प्रकृति सदा प्राणिमात्र के हित के लिए कार्यरत रहती है। मानव ने स्वार्थवश इसका संतुलन नष्ट कर दिया है। इसी बात का विरोध करने हेतु सूर्य देव कार्यावरोध करते हैं। जब बालक उनसे याचना करते हैं, तो अपने कार्यावरोध को समाप्त करके सूर्य पुनः गगन मण्डल में प्रकाशमान हो जाते हैं। बालक सूर्यदेव के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए प्रकृति के संतुलन हेतु निष्ठापूर्वक कर्त्तव्य पालन करने की प्रतीक्षा करते हैं। सच में प्रकृति की अमूल्य निधि की रक्षा करना मानव का कर्त्तव्य है।

स्थान – विद्यालय का प्रांगण। छात्र बातें कर रहे हैं।

राजीव – मित्र, क्या हुआ अभी तक सूर्य उदित नहीं हुआ? क्या हम नियत समय से पहले स्कूल आ गए हैं?

सञ्जीव – राजीव, क्या तुमने आज का दैनिक पत्र नहीं पढ़ा?

राजीव – नहीं, कुछ विशेष है क्या?

सञ्जीव – समाचार पत्र के मुख्यपृष्ठ पर स्थूल अक्षरों में लिखा है–

'आज से लेकर अनिश्चित काल तक सूर्य कार्यावरोध (Strike) कर रहे हैं।' मानव ने पर्यावरण को बहुत प्रदूषित कर दिया है। प्रकृति के नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिए क्रोध के कारण सूर्य देव ने विरोध किया है।

राजीव – हाय! क्या करेंगे, न प्रकाश (होगा) न उष्णता, ना वर्षा, न कृषि, न अन्न। सब जगह अन्धकार। कैसे जीएँगे?

इसी बीच कोई आवाज़ सुनाई देती है। स्कूल की छात्राध्यक्ष दैनिक पत्र हाथ में लेकर आता है और छात्रों को सम्बोधित करता है। ''मित्रों! एक महत्त्वपूर्ण सूचना है। सूर्यदेव द्वारा संदेश भेजा गया है। उसका लेख इस दैनिक पत्र में प्रकाशित हुआ है। सब ध्यानपूर्वक सुनें।''

"रे मानव! यह पृथ्वी तुम्हें उपहार में दी गई; अनेक पदार्थ निःशुल्क दिए गए। जल, वायु, आकाश, प्रकाश यह अमूल्य निधि सभी प्राणियों के हित के लिए है। किन्तु तुम स्वार्थी हो, इस सबको अपने अधीन करना चहते हो। संयम से इसका प्रयोग नहीं करते। देखो, प्लास्टिक के कूड़े से मिट्टी का स्वास्थ्य पूरी तरह नष्ट हो गया है। उद्योगों और वाहनों के धुएँ से वायुमण्डल प्रदूषित हो गया है। गन्दगी के कारण नदियों का जल पीने योग्य नहीं रहा। वनों के कटने से पशुपक्षियों की कुछ जातियाँ विलुप्त हो गई हैं। भूमण्डल का ताप प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

विगत दशकों (decades) में जो उन्नति तुम्हारे बुद्धिबल से अथवा परिश्रम से हुई है, वह है तो प्रशंसनीय। किन्तु इस उत्कर्ष में प्रकृति का सन्तुलन तुमने नष्ट कर दिया। इस लिए बाढ़, भूस्खलन (mud-slides), वर्षा का आधिक्य या वर्षा का अभाव जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आ जाती हैं। 'पृथ्वी माता है और मैं भूमिपुत्र' यह वेदवचन भूल गए क्या?

विचित्र बात है–अपने आपको भूमि का पुत्र होने की घोषणा करते हो किन्तु धरती माता के स्वास्थ्य के प्रति उदासीन हो। मूर्ख! क्या शास्त्रों का वचन भूल गए?

'पानी में मूत्र मल अथवा थूक नहीं डालनी चाहिए। कोई गन्दी वस्तु या कोई रक्त या विष लिप्त (वस्तु) भी नहीं फेंकनी चाहिए।

"धूर्त! महान अनर्थ किया है तुमने। मैं बहुत दुःखी हूँ और कुपित भी। संसार की दुर्दशा असहनीय है। अब जब तक तुम विवेक से काम नहीं करते तब तक मैं कार्य का अवरोध करता हूँ।"

सूर्य का सन्देश सुनकर सब व्याकुल हो परस्पर वार्तालाप करते हैं। और विचार-विमर्श करते हैं। क्या करें, कहाँ जाएँ, उपाय क्या है। कौन हमें इस संकट से निकालेगा। तभी आकाशवाणी होती है–

'अपने आपको अपने आप से (अपने बल से) उभारना चाहिए।' यह सुनकर छात्राध्यक्ष उत्साहपूर्वक छात्रों को कहता है। "उपाय समझ आ गया। प्रत्येक को संकल्प लेना होगा और पूरी निष्ठा से पर्यावरण की रक्षा के लिए मिलकर प्रयास करना होगा। अब और कोई रास्ता नहीं है।"

तदनुसार बालकों द्वारा शीघ्र ही प्रार्थना-पत्र सूर्य देव को भेजा गया। परम दयालु सूर्य देव बालकों की याचना स्वीकार कर पुनः चमकते हुए गगन मण्डल में उपस्थित हो गए। सब बच्चों का मन प्रसन्न हो गया।

'भगवन्! हम आभारी हैं। आप बहुत दयावन हैं। हम शपथ लेते हैं—पर्यावरण की रक्षा करेंगे; प्रकृति की व्यवस्था के प्रति जागरूक रहेंगे।

प्रकृति के संतुलन की रक्षा अवश्य करनी चाहिए।

उत्तराणि

मौखिकम्

प्रस्तुत पद पाठ में आ चुके हैं। इनका स्पष्ट उच्चारण करें।

लिखितम्

1. प्रस्तुत प्रश्न पाठगत तथ्यों पर आधारित हैं। कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर प्रत्येक का उत्तर एक पद में दीजिए।

उत्तर– क. विद्यालये　ख. दैनिकपत्रे　ग. मानवः
घ. सूर्येण　ङ. विज्ञानस्य　च. सूर्यदेवं प्रति
छ. परमनिष्ठया

उत्तर 2. क. सञ्जीव/छात्रः　राजीवम्/छात्रम्
ख. छात्राध्यक्षः　छात्रान्
ग. सूर्यः　मानवम्
घ. बालकाः　सूर्यम्

उत्तर 3. क. दैनिकपत्रे, लिखितम् अस्ति यत् 'अद्यारभ्य सूर्यः अनिश्चित-कालं यावत् कार्यावरोधं गच्छति।' अथवा
अद्यारभ्य सूर्यः अनिश्चित-कालं यावत् कार्यावरोधं गच्छति इति स्थूलाक्षरैः दैनिकपत्रे लिखितम्।
ख. उद्योगानां वाहनानां च धूम्रेण वायुमण्डलं प्रदूषितम्।
ग. बालकाः पर्यावरणं रक्षिष्यामः, प्रकृतेः व्यवस्थां प्रति जागरिताः भविष्यामः इति प्रतिज्ञां कुर्वन्ति।

घ. आत्मना आत्मानाम् उद्धरेत् न आत्मानम् अवसादयेत् इति आकाशवाणी भवति। अथवा

आत्मनात्मानमुद्धरेत् नात्मानम्वसादयेत् इति आकाशवाणी भवति।

उत्तर 4. क. सूर्येण (सूर्य द्वारा)–शेष वाक्य का अर्थ–मानवजाति के प्रति सन्देश भेजा गया है।

ख. सूर्यस्य (सूर्य का)–शेष वाक्य का अर्थ–सन्देश लेख दैनिक पत्र में प्रकाशित हुआ है।

ग. सूर्यस्य (सूर्य के)–शेष वाक्य–कार्यावरोध से सब व्याकुल हैं।

घ. सूर्यम् (सूर्य को)–शेष वाक्य–बच्चों द्वारा–भेजा गया है।

ङ. सूर्याय (सूर्य के लिए) (प्रतिज्ञा जिससे की जाती है उसमें चतुर्थी का प्रयोग) शेष वाक्य–बालक–प्रतिज्ञा करते हैं 'हम पर्यावरण को बचाएँगे')।

च. सूर्ये (भासमाने) (सूर्य के चमकने पर)–शेष वाक्य–गगन मण्डल में..... सब प्रसन्न हैं।

छ. सूर्यात् (सूर्य से/from Sun) शेष वाक्य–हम–प्रकाश व उष्णता प्राप्त करते हैं।

उत्तर 5.

सम्बन्ध वाचक पद	विशेषण	विशेष्य पद
ख. मृत्तिकाया: स्वास्थ्यम्	ख. भासमान:	सूर्य:
ग. सूर्यस्य कार्यावरोध:	ग. महत्त्वपूर्णा	सूचना
घ. संसारस्य दुर्दशा	घ. सर्वेषाम्	प्राणिनाम्
ङ. पर्यावरणस्य संरक्षणम्	ङ. प्राकृतिकम्	सन्तुलनम्
च. नियमानाम् उल्लङ्घनम्	च. दैनिकम्	पत्रम्

उत्तर 6. क. **केन** पर्यावरणं भृशं प्रदूषितम्?

'मानवेन' के लिए 'केन'–दोनों पद समान लिंग, विभक्ति व वचन में

ख. **कस्या:** नियमा: उल्लङ्घिता:?

'प्रकृते:'–स्त्रीलिंग, षष्ठी एक वचन पद के लिए 'कस्या:'– स्त्रीलिंग षष्ठी एकवचन।

ग. छात्राध्यक्ष: **कथं** छात्रान् वदति?

'सोत्साहम्' (उत्साहपूर्वक) क्रियाविशेषण के लिए 'कथम्' (किस प्रकार)

घ. नदीनां जलम् **कीदृशं** संवृत्तम्?

'अपेयम्' (न पीने योग्य) विशेषण पद के लिए प्रश्न में 'कीदृशम्' (कैसा)–दोनों नपुंसकलिंग प्रथमा, एकवचन।

ङ. **कस्मै** याचिकापत्रम् अविलम्बेन प्रेषितम्?

सूर्यदेवाय–चतुर्थी एकवचन पुल्लिग पद के लिए प्रश्न में 'कस्मै' (किसके लिए) समान विभक्ति लिंग व वचन में।

उत्तर 7. I. क. (*i*) छात्राध्यक्षः

(*ii*) द्वितीया एकवचनम्–कर्म पद 'धृत्वा' का।

(*iii*) धृत्वा, च. (ध्यान दें क्त्वा प्रत्ययान्त पद अव्यय होते हैं।)

ख. (*i*) धृ, क्त्वा (*ii*) छात्र + अध्यक्षः

(*iii*) छात्र, द्वितीया, बहुवचनम्

II. क. (*i*) सन्देशः (*ii*) सावधानम्

ख. (*i*) दैनिकपत्रे सूर्यदेवस्य सन्देशः प्रकाशितः।

(*ii*) सन्देशः सूर्यदेवेन प्रेषितः।

ग. (*i*) सर्वे

(*ii*) अस्मिन् (इसमें–सार्वनामिक विशेषण)

(*iii*) सम्बोधनम् – बहुवचनम्

(*iv*) लोट् लकारः – प्रथमपुरुषः

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. प्रकृतेः संरक्षणम् संतुलनं च प्रत्येकं मानवस्य कर्त्तव्यं सर्वकारस्य चापि (च + अपि) अस्ति।
2. नदीनां जलं स्वच्छं रक्षितुं किञ्चिद् अपि मालिन्यं न क्षिपेत्
3. अत्र वनानां वृक्षाणाम् वा महत्त्वं प्रतिपादितम्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

आज के युग में पर्यावरण की रक्षा का महत्त्व सर्वविदित है। कक्षा में चर्चा करें कि इस दिशा में कौन क्या योगदान दे सकता है तथा देना चाहिए। 'भारतीय संस्कृति में प्रकृति का महत्त्व'–इस विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

❑❑

17 कर्मवीरः भव (गीता–श्लोकाः)

हिंदी अनुवाद (कर्मवीर बनो)

अर्थात् जीवन की रणभूमि में कर्त्तव्य–कर्म करने की वीरता दिखाओ।

प्रस्तुत श्लोक श्रीमद्भगवद्गीता से उद्धृत हैं। जब महाभारत का युद्ध शुरू होने वाला था, तो अर्जुन दोनों ओर अपने बन्धुजनों को युद्ध के लिए उद्यत खड़ा देखकर, मोहग्रस्त हो गया। इस समय श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्त्तव्य के लिए प्रेरित किया। जीवन में बहुधा ऐसे अवसर आते हैं जब हम भावुक होकर अपना विवेक खो बैठते हैं। हम भूल जाते हैं कि भावना से कर्त्तव्य ऊँचा है और निष्काम भाव से कर्त्तव्य–पालन करना ही हमारा धर्म है। उस समय गीता का यह उपदेश हमारी प्रेरणा बन सकता है।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा–

1. जहाँ से सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है, जिसके द्वारा यह सब (संसार) व्याप्त है, उसको (परमात्मा को) अपने कर्म (कर्त्तव्य–कर्म) द्वारा पूजकर मनुष्य सिद्धि प्राप्त करता है।

   अर्थात् यह सम्पूर्ण सृष्टि उस परमात्मा का विस्तार है। सब प्राणी उसी से उत्पन्न हुए हैं। वह संसार के कण–कण में विद्यमान है। उस परम शक्ति की पूजा करने की सर्वोच्च विधि है–निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन। उसकी अर्चना कर्त्तव्य–कर्म द्वारा करनी चाहिए। (मात्र वाणी अथवा फूलों आदि द्वारा नहीं) ऐसा करने से मानव का जीवन सफल हो जाएगा।

   भाव–मनुष्य की कर्त्तव्यनिष्ठा सफल जीवन का रहस्य है, यही भगवान के प्रति सच्ची भक्ति है, उसकी पूजा है।

2. अपने नियमित (नियमबद्ध) कर्म को करो; कर्म करना अकर्म (न काम करने) से श्रेष्ठ है। यदि काम न किया जाए, तो शरीर का निर्वाह भी सम्भव नहीं।

   अर्थात् कर्म–बन्धन से मुक्ति पाने के लिए लोग कभी–कभी कर्म का त्याग करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। युद्ध के अवसर पर अर्जुन की भी यही दशा थी। इसीलिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया–अपने कर्त्तव्य से विमुख मत होवो। स्वधर्मानुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करने में ही कल्याण है। कर्त्तव्य–कर्म अनिवार्य है। शरीर चलाने के लिए भी व्यक्ति

को कर्म करना पड़ता है। कर्म का त्याग नहीं हो सकता है। अतः युद्ध न करने का आग्रह मत करो।

भाव–कर्त्तव्य-कर्म करना मानव का परम धर्म है।

3. कर्म करने मात्र तक तुम्हारा अधिकार है। उसके फल पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। फलहेतुक (फल की आशा रखकर काम करने वाला) मत बन और न ही अकर्मण्यता (काम न करने) में तेरी आसक्ति होवे।

   अर्थात् हे अर्जुन! तुम्हारी आसक्ति कर्म के फल में नहीं होनी चाहिए। फल की इच्छा और आशा–दोनों को छोड़ दो, किन्तु कर्म का त्याग मत करो। फल मिलना, न मिलना अपने वश में नहीं। अतः उस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं। तुम्हारा अधिकार तुम्हारे अपने कर्त्तव्य के पालन तक सीमित है। किसकी विजय होगी, किसकी पराजय, युद्ध का क्या परिण ाम होगा–यह सब सोचना तुम्हारा काम नहीं। तुम युद्ध करो, यही तुम्हारा कर्त्तव्य है। अपने कर्त्तव्य-कर्म से पीछे नहीं हटो।

   भाव–फलाशा को छोड़कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

4. (फल के प्रति) आसक्ति अथवा लगाव को त्यागकर, सफलता और असफलता दोनों परिस्थितियों में समभाव रखकर, योग में (दृढ़तापूर्वक) स्थित रहकर कर्मों को करो। (हर स्थिति में) समभाव होना ही योग (कर्मयोग) कहलाता है।

   अर्थात् फल मिलेगा या नहीं, अनुकूल होगा अथवा प्रतिकूल–इस चिन्ता में न पड़कर, व्यक्ति को जीवन में कर्त्तव्य पर अडिग रह, आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन तो एक संग्राम है, हार हो या जीत, विचलित हुए बिना अपना काम निष्ठापूर्वक करते रहना चाहिए। समभाव होना अर्थात् परिस्थिति जैसी भी हो सम अथवा विषम अपना मानसिक संतुलन बनाए रखना ही कर्मयोग कहलाता है। इसीलिए श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम कर्मयोगी बनो, मन में समभाव रखते हुए उद्विग्न हुए बिना युद्ध करो, क्योंकि यही तुम्हारा कर्त्तव्य है। अपने कर्त्तव्य-पालन से डरो नहीं, कर्मवीर बनो।

   भाव–विचलित हुए बिना, अपने कर्त्तव्य पर डटे रहना, एक बहुत बड़ी तपस्या है यही कर्मयोग है।

5. सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय को एक समान समझकर, युद्ध के लिए तैयार हो जाओ; ऐसा करने से तुम्हें (बन्धुजनों की हत्या का) पाप नहीं लगेगा।

अर्थात् व्यक्ति जब मन में समभाव रखकर, केवल यह सोचकर अपना काम करता है कि यह उसका कर्त्तव्य है, इसलिए उसे करना चाहिए, तो वह कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। अर्जुन के मन में यह शंका उत्पन्न हुई थी कि वह बन्धुजनों की हत्या के पाप का भागी बन जाएगा और युद्ध का परिणाम क्या होगा—यह बात भी वह निश्चित रूप से नहीं जानता। ऐसी स्थिति में जब वह दुविधा में पड़ गया तो श्रीकृष्ण ने उसे समझाया—जब मनुष्य हार-जीत, सुख-दुख, लाभ-हानि को एकसमान समझकर केवल कर्त्तव्य पर ध्यान केन्द्रित कर, कर्म करता है तो, परिणाम जो भी हो, वह उससे लिप्त नहीं होता।

भाव—जीवन में कर्त्तव्य सर्वश्रेष्ठ है। अतः समभाव से अपना कर्त्तव्य-कर्म करते रहना चाहिए।

उत्तराणि

मौखिकम्

श्लोकों का वाचन-पुनर्वाचन कर लें

श्लोकों का आशय समझें और कोष्ठक से उचित पद चुनकर उत्तर दें।

1. **उदाहरण देखें—**प्रश्न में 'केन'—उत्तर 'स्वकर्मणा' अर्थात् मानवः स्वकर्मणा जगदीश्वरम् अर्चयेत्। (मनुष्य अपने कर्त्तव्य कर्म द्वारा ईश्वर को पूजे) पाठ में श्लोकांश—....'स्वकर्मणा तम् अभ्यर्च्य....(अपने कर्म द्वारा उसे पूजकर)।

उत्तर— क. कर्मणि अर्थात् कर्त्तव्ये—'कस्मिन्' के उत्तर में, श्लोकांश—'कर्मणि एव अधिकारः ते'।

ख. कर्मफलेषु—'केषु' के उत्तर में। श्लोकांश—'मा फलेषु कदाचन'।

ग. शरीरयात्रा (जीवन-यापन)—श्लोकांश—'शरीर यात्रा अपि ते न प्रसिद्ध्येत् अकर्मणः'। (काम किए बिना तो जीवन-यापन भी सम्भव नहीं।)

घ. समत्वम्—श्लोकांश—'समत्वं योगः उच्यते'।

ङ. सङ्गम्/आसक्तिम्—श्लोकांश—'योगस्थः कुरु कर्माणि सगं त्यक्त्वा धनञ्जय'। (योग में स्थित होकर, आसक्ति त्यागकर, कर्त्तव्य कर्म करो।)

लिखितम्

1. दोनों स्तम्भों में दिए गए श्लोकांशों का वाचन करें। आशय समझकर श्लोकानुसार परस्पर मेल करें। उदाहरण देखें।

उदाहरण–स्वकर्मणा तम् अभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।

उत्तर– I. ख. कर्मण्येव अधिकारः ते, मा फलेषु कदाचन।

ग. योगस्थः कुरु कर्माणि, संङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।

घ. सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा, समत्वं योगः उच्यते।

ङ. नियतं कुरु कर्म त्वम्, कर्म ज्यायः हि अकर्मणः।

II. समानार्थक पदों का मेल करें। उदाहरण देखें। उच्चारण करें।

उदाहरण– विन्दति–प्राप्नोति।

उत्तर– ख. सङ्गम् – आसक्तिम्, ग. ज्यायः–श्रेष्ठम्, घ. अभ्यर्च्य – पूजयित्वा,

ङ. सिद्ध्यसिद्ध्योः – सफलतायाम् असफलतायां च,

च. उवाच–अवदत्।

III. विपरीतार्थक पदों का मेल करें। उदाहरण देखें। उच्चारण करें।

उदाहरण– पापम्–पुण्यम्।

उत्तर– क. लाभः – अलाभः, हानिः, ख. जयः – अजयः, पराजयः,

ग. सुखम् – दुःखम् घ. कर्म – अकर्म,

घ. सिद्धिः – असिद्धिः।

उत्तर– IV. ख. (*iii*), ग. (*iv*), घ. (*vi*), ङ. (*iv*), च. (*ii*)

2. उदाहरण देखें और समझें–'कर्म'–शुद्ध रूप–क्योंकि मूल शब्द कर्मन् (नपुंसकलिंग) (प्रथमा विभक्ति–कर्म, कर्मणी, कर्माणि)।

उत्तर– क. इदम् (नपुंसकलिंग) 'जगत्' शब्द नपुंसकलिंग, अतः विशेषण–पद–नपुंसकलिंग–(इयम् स्त्रीलिंग रूप)।

ख. कर्मणि – मूल शब्द 'कर्मन्', सप्तमी एकवचन में 'कर्मणि' रूप।

ग. कुरुत – कर्त्ता 'यूयम्' (बहुवचन) अतः क्रियापद बहुवचन–(लोट्–मध्यम पुरुष–कुरु, कुरुतम्, कुरुत)।

घ. नियतम् – कर्म (नपुंसकलिंग)–द्वितीया, एकवचन, अतः विशेषण–पद भी द्वितीया, एकवचन (नपुंसकलिंग) ('नियत' शब्द–अकारान्त (नपुंसकलिंग)–'फल' की भाँति)।

3. श्लोकांश का भाव से मेल–

उत्तर– क. *(ii)* (कर्म के फल की आशा से नहीं कर्त्तव्य भावना से कर्म करना चाहिए)

ख. *(iv)* (आसक्ति का त्यागकर समभाव से कर्म करना चाहिए।)

ग. *(i)* (जीवन–यापन के लिए काम करना जरूरी है।)

घ. *(iii)* (कर्त्तव्य का पालन ही ईश्वर की पूजा है।) (Work is workship)

(भावार्थ का हिन्दी पर्याय सहायतार्थ दिया गया है।)

4. पाठगत श्लोक का वाचन कर, प्रत्येक पद का अर्थ समझ लें। श्लोक में आए सन्धियुक्त पदों को भी देख लें। श्लोक का अर्थ समझकर मञ्जूषा में दिए पदों को पढ़ें और अर्थ समझ लें। रिक्त स्थान छोड़कर वाचन करें और प्रसंगानुसार उचित पद चुनकर अन्वय पूरा करें।

उत्तर– (क) नियतम्–('कर्म' पद का विशेषण); कुरु–('त्वम्' के योग में क्रियापद); कर्म–(श्लोकांश में 'कर्तापद'; विशेषण 'ज्यायः'; का विशेष्य–पद); शरीरयात्रा–(ते (तव) से सम्बन्ध; श्लोकांश में कर्त्तापद 'प्रसिद्ध्येत् (क्रियापद) का'); अकर्मणः–(कर्म न करने के कारण) 'न प्रसिद्ध्येत्'–का हेतु द्योतक पद–(पञ्चमी विभक्ति में)।

(**ध्यान दें**–श्लोक के पूर्वार्ध में 'अकर्मणः'–तुलना होने के कारण पञ्चमी में, और उत्तरार्ध में हेतु बताने के कारण पञ्चमी प्रयोग)

उत्तर– (ख) भूतानाम्–('प्रवृत्तिः' से सम्बन्ध; इदम्–(सर्वम् के साथ), स्वकर्मणा–श्लोकांश में 'अभ्यर्च्य' (पूजकर) का साधन; सिद्धिम्–('विन्दति' का कर्मपद)।

5. उदाहरण देखें और समझें। प्रत्येक कथन को पढ़ें, आशय समझें और बताएँ कि पाठानुसार यह शुद्ध है अथवा अशुद्ध। (कोष्ठक में कथन का आशय हिन्दी में।)

उत्तर– क. शुद्धम् – (नियत कर्म अवश्य करना चाहिए।)–क्योंकि **श्लोकांश–**'नियतं कुरु कर्म'।

---

* भाव यह है कि परिस्थिति जो भी हो, समभाव से आचरण करना उचित है। सफल होने पर अत्यधिक हर्ष और असफल होने पर अत्यधिक विषाद– दोनों ही उचित नहीं।

ख. अशुद्धम्– (सिद्धि होगी या नहीं–केवल यही सोचे) क्योंकि **श्लोकांश–** 'मा फलेषु कदाचन अर्थात् फल के विषय में सोचने का अधिकार तुम्हें नहींहै।

ग. शुद्धम् – (विधाता द्वारा यह सारा संसार व्याप्त है)– **श्लोकांश–** 'येन सर्वमिदम् ततम्'।

घ. शुद्धम् – (विजय होगी या नहीं– ऐसा न सोचकर जीवन में संघर्ष करते रहना चाहिए।) **श्लोकांश–** सुख-दु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ, ततो युद्धाय युज्यस्व'।

ङ. शुद्धम् – (**देखें श्लोकांश–**'सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा' सफलता अथवा असफलता में एकसमान रहकर)*

च. अशुद्धम् – (**देखें श्लोकांश–** (*i*) सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा' तथा (*ii*) 'सुखदु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ')*

छ. अशुद्धम् – स्वकर्मणा तम् अभ्यचर्य ....)

उत्तर 6. ख. शरीरयात्राऽपि – शरीरयात्रा + अपि

ग. सर्वमिदम् – सर्वम् + इदम्

घ. प्रसिद्ध्येदकर्मणः – प्रसिद्ध्येत् + अकर्मणः

ङ. जयाजयौ – जय + अजयौ

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. अत्र कर्त्तव्य-कर्मणः महत्त्वं प्रतिपादितम्।
   (कर्त्तव्य-कर्मणः = कर्त्तव्य कर्म का)
2. शुद्ध-भावः–(*iii*) सदैव कर्त्तव्यनिष्ठः/कर्त्तव्य-परायणः भव।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. श्लोकोच्चारण–पाठ में आए तथा श्रीमद्भगवद्गीता के अन्य महत्त्वपूर्ण श्लोकों का उच्चारण कीजिए।
2. श्रीमद्भगवद्गीता प्राचीन ग्रन्थ महाभारत का अंश है, किन्तु इसका उपदेश आज के जीवन में भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जीवन की विकट परिस्थितियाँ बहुधा हमें ऐसी दुविधा में डाल देती हैं कि निर्णय लेना कठिन हो जाता है। भावना के भँवर में फँस कर मनुष्य अपना विवेक और मानसिक संतुलन खो बैठता है और अपने कर्त्तव्य से मुँह मोड़ लेता है। महाभारत के युद्ध के समय भी अर्जुन की ऐसी मनोदशा हुई थी। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें सही मार्ग दिखाया। आज भी निष्काम भाव से निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्य-पालन का और हर्ष-विषाद, लाभ-हानि, जय-पराजय की स्थिति में समभाव रखकर जीवन-यापन करने का गीता का उपदेश हमारा प्रेरणा-स्रोत बनकर सही मार्गदर्शन कर सकता है।
गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"

सार्वभौमिक और सार्वकालिक है।

3. श्रीमद्भगवद्गीता संसार की सौ (100) से भी अधिक भाषाओं में अनूदित है। इनमें प्रमुख हैं-हिन्दी, अंग्रेज़ी, भारत की प्रान्तीय भाषाएँ, चीनी, जापानी, जर्मन, रूसी, थाई, अरबी, उर्दू, नेपाली। यूरोप की अनेक भाषाओं में गीता का अनुवाद हुआ है।

❒❒

18 महिमा संस्कृत–वाङ्मयस्य

हिंदी अनुवाद (संस्कृत साहित्य की महिमा)

संस्कृत का साहित्य ज्ञान–विज्ञान से सम्पन्न है और बहुत विशाल भी। रामायण और महाभारत इसके गौरवपूर्ण महाकाव्य हैं। अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व विख्यात श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का ही अंश है। यह संसार की अनेक भाषाओं में अनूदित है अर्थात् संसार की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। केवल कर्म करने में ही तेरा अधिकार है—गीता का यह उपदेश लोगों को अपने जीवन में निष्काम–भाव से अपने कर्त्तव्य–पालन की प्रेरणा देता है। महाभारत के विषय में यह कहा जाता है कि 'जो यहाँ अर्थात् महाभारत में है वह और कहीं (उपलब्ध) नहीं' (महाभारत को विश्वकोष (encyclopedia) माना जाता है)।

है कोई ऐसा ज्ञान अथवा विज्ञान का क्षेत्र जहाँ संस्कृत सहित्य की महान उपलब्धि दिखाई न देती हो। चिकित्सा में 'चरक–संहिता' नाम की महत्त्वपूर्ण रचना भारतीयों और विदेशियों का भी सम्मान पाती है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र चिरकाल से संगीत और नाट्यकला के विशेषज्ञों का मार्गदर्शन करता आ रहा है। आर्यभट्ट का नाम कौन नहीं जानता। यह ज्योतिष् विद्या के सुप्रसिद्ध जानकार, गणितज्ञ और ग्रह–नक्षत्रों के ज्ञाता थे।

कम्प्यूटर के युग में भी विद्वान लोग मुनि पाणिनि के अष्टाध्यायी नामक व्याकरण–ग्रन्थ को अद्वितीय मानते हैं। शंकराचार्य द्वारा रचित वैदिक–गणित विद्वानों को अत्यन्त चकित कर देता है। वैदिक–गणित के सोलह सूत्र (Formulae) आज भी कुछ स्कूलों में पाठ्यक्रम में संकलित हैं। भास्कराचार्य की 'लीलावती' नामक रचना गणित के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध है।

संस्कृत साहित्य की अर्थगर्भित सूक्तियाँ किसका मन नहीं हर लेतीं। बहुत कम शब्दों में वे बहुत बड़ी बात कह जाती हैं। 'महान लोगों के लिए आदर–सम्मान ही धन–सम्पत्ति है' (महान लोग सांसारिक धन–सम्पत्ति को अधिक महत्त्व न देकर समाज में मान–प्रतिष्ठा बनी रहे—इस बात पर बल देते हैं), यह पृथ्वी तो एक छोटा–सा परिवार है। (अर्थात् इस धरातल पर रहने वाले सभी

प्राणी एक परिवार के सदस्यों की भाँति परस्पर स्नेह से रहें; सभी एक-दूसरे पर आश्रित हैं); हितकारी और मनोहर (मन को अच्छा लगने वाला) वचन दुर्लभ है (प्रायः जो हितकर होता है वह मन को अच्छा नहीं लगता) इत्यादि अच्छी-अच्छी बातें सारे संसार को मुग्ध कर देती हैं।

भारत सरकार का आदर्श वाक्य-'सत्यमेव जयते' (सदा सच की जीत होती है) संस्कृत-साहित्य से ही लिया गया है। शरीर धर्मपालन अर्थात् कर्त्तव्य-पालन का सर्वप्रथम साधन है-यह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान का ध्येय वाक्य है। सरकार के विभिन्न विभागों के ध्येय वाक्य जैसे 'अहर्निशं सेवामहे' (हम दिन-रात सेवा करते हैं) डाक तार विभाग का 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' (मैं योग और क्षेम दोनों की देखभाल करता हूँ) जीवन बीमा निगम का, 'शं नो वरुणः', (जल का देवता वरुण हमारे लिए कल्याणकारी हो), नौसेना का ध्येय वाक्य संस्कृत-साहित्य की महिमा को दर्शाता है। एक बात और, हमारे देश की सेना के प्रक्षेप-अस्त्रों (missiles) के नाम भी संस्कृत में हैं।

राजनीति, अर्थनीति, लोकनीति, धर्मनीति- सब जगह ही संस्कृत का योगदान दिखाई देता है। भर्तृहरि द्वारा रचित नीतिशतक नीतिपरक श्लोकों का अनुपम संग्रह है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र (treatise on economics) आज के समय में भी सर्वथा उपयुक्त है। ऋग्वेद का गायत्री मन्त्र आज भी जनजीवन को प्रेरित करता है। अधिक क्या कहा जाए- सच में भारत की संस्कृति संस्कृत पर निर्भर है।

उत्तराणि

संस्कृत-साहित्य की महिमा जानें और पहचानें। गणित, भौतिकी (physics), रसायन (chemistry), शिल्प, चिकित्सा, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष्, धनुर्विद्या, धातु-विज्ञान (metallurgy),- कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जो संस्कृत-साहित्य में अपना स्थान न बनाए हुए हो। यह धारणा कि संस्कृत में केवल धर्म अथवा दर्शन (philosophy), सम्बन्धी रचनाएँ; जैसे- वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता आदि हैं- सर्वथा गलत है। अध्यात्म विषयक साहित्य तो संस्कृत का एक छोटा-सा अंश है। संस्कृत-साहित्य बहुत विशाल है।

मौखिकम्

उच्चारण करें और सूक्तियाँ याद रखें। विद्वान् शब्द के रूप प्रथमा व द्वितीया में। (शेष अगली कक्षाओं में।)

लिखितम्

1. सभी प्रश्न पाठ पर आधारित हैं। अतः पाठ का पुनर्वाचन कर लें। उदाहरण देखें और समझें। प्रत्येक प्रश्न तथा कोष्ठकदत्त विकल्पों का वाचन ध्यानपूर्वक करें।

उत्तर– क. भैषज्ये; ख. अष्टाध्यायी*;

ग. शङ्कराचार्येण (शंकराचार्य द्वारा) घ. महाभारतस्य (महाभारत का);

ङ. भारत–सर्वकारस्य

च. भाषासु [भाषाओं में–(कासु (स्त्री)=किनमें]

छ. ध्येय–वाक्यानि (आदर्श–वाक्यानि)

2. प्रश्न का वाचन ध्यान से करें।

उत्तर– क. गीता उपदिशति–'कर्मणि एव अधिकारः ते'; अतः जीवने निष्काम–भावेन कर्म कर्त्तव्यम्।

अथवा

'कर्मणि एव अधिकारः ते' इति उपदेशः गीतायाः जनान् निष्काम–भावेन कर्त्तव्यम् आचरितुम् उपदिशति।

ख. संस्कृत–साहित्यस्य सूक्तयः अखिलं विश्वं सम्मोहयन्ति।

अथवा

संस्कृत–साहित्यस्य सूक्तयः स्वल्पैः पदैः एव गौरवपूर्णम् अर्थं प्रतिपादयन्ति।

ग. ज्ञानस्य विज्ञानस्य च प्रत्येकं क्षेत्रे संस्कृतस्य महती उपलब्धिः दृश्यते।

3. बाईं ओर रचनाकारों तथा दाईं ओर उनकी रचनाओं के नाम दिए गए हैं। उदाहरण देखें और यथोचित मिलान करें। कठिनाई हो तो पाठ में देखें।

उत्तर– ख. भर्तृहरिः – नीतिशतकम्; ग. भास्कराचार्यः – लीलावती;

घ. कौटिल्यः – अर्थशास्त्रम्; ङ. पाणिनिः – अष्टाध्यायी;

च. चाणक्यः – चाणक्यनीतिः।

---

* इसमें आठ अध्याय होने के कारण इसका यह नाम है।

4. रिक्त स्थान छोड़कर वाक्य का वाचन करें, कोष्ठकदत्त विकल्पों को देखें, प्रयोग के अनुसार शुद्ध पद चुनकर वाक्यपूर्ति करें।

उदाहरण देखें–शुद्ध विकल्प 'आश्रिता'–वाक्य में 'संस्कृतिः' शब्द स्त्रीलिंग होने के कारण विशेषण-पद (पूरक) भी स्त्रीलिंग में।

उत्तर– क. महत्त्वपूर्णा–'चरकसंहिता' का विशेषण होने के कारण स्त्रीलिंग रूप उचित।

ख. उपयुक्तम्–'कौटिल्यशास्त्रम्' के लिए प्रयुक्त, अतः नपुंसकलिंग में।

ग. सम्मोहयन्ति–कर्त्तापद 'सुभाषितानि'–बहुवचन होने के कारण क्रियापद में बहुवचन रूप उचित।

घ. संस्कृत-साहित्यात्–(संस्कृत-साहित्य से) पृथक्/अलग होने के अर्थ में पञ्चमी विभक्ति/अपादान कारक का प्रयोग उचित।

ङ. मनः (द्वितीया एकवचन–कर्मकारक)– **ध्यान रहे–** 'मनस्' शब्द नपुंसकलिंग है– ('मनः मनसी मनांसि'–प्रथमा तथा द्वितीया में)

5. प्रत्येक पाठांश का वाचन ध्यानपूर्वक करें, प्रत्येक पद का अर्थ व प्रयोग समझें। तत्पश्चात् प्रश्नों का उत्तर दें।

उत्तर– I. क. आचरितुम् (आचरण करने के लिए)–(करोति = आचरति, इसी प्रकार कर्तुम् = आचरितुम्)

ख. उपदेशः

ग. द्वितीया–एकवचनम्– (वाक्य में/कर्म (Object) होने के कारण)

घ. आ उपसर्गः, तुमुन् प्रत्ययः (धातु 'चर्')–

ङ. सप्तमी एकवचनम् – (जीवने = जीवन में)

उत्तर– II. क. भैषज्ये–(**नोट करें–**'भैषज्य/(नपुं०) शब्द अकारान्त और 'चिकित्सा' शब्द आकारान्त है। अतः सम विभक्ति होने पर भी शब्द–रूप में अन्तर है)

ख. रचना

ग. विदेशीयः

घ. लभते (लभ्–पाना)

ङ. ...., लभेते, लभन्ते (**ध्यान रहे–** 'लभ्' धातु आत्मनेपदी है)

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. जीवने कर्त्तव्यपालनं निष्काम-भावेन कुर्यात्।
2. महापुरुषाणाम् मानः वरणीयः, धनं न वरणीयम्।
3. अस्मिन् संसारे परस्परं स्नेहं सद्भावं च कुर्यात्, न तु वैरम्।

पाठसंगतम् परीक्षणम्

1. कुछ अन्य सूक्तियाँ–

क. अति सर्वत्र वर्जयेत्। (अति का सब जगह त्याग करना चाहिए।)
ख. का हानिः समयच्युतिः। (समय को व्यर्थ गँवाना सबसे बड़ी हानि है।)
ग. अमित्रस्य कुतो सुखम्। (यदि कोई भी मित्र नहीं तो इनसान सुखी कैसे हो सकता है।)
घ. लोभो मूलम् आपदाम्। (लोभ विपदाओं की जड़ है।)
लोभो न कर्त्तव्यः। लोभ नहीं करना चाहिए।)
ङ. साहसे श्रीः वसति। (साहस/हिम्मत में लक्ष्मी निवास करती है अर्थात् हिम्मत से ही काम बनते हैं) इत्यादि।

2. कुछ अन्य सरकारी विभागों के ध्येय वाक्य–

क. बहुजनसुखाय बहुजनहिताय – आकाशवाणी (A.I.R.)
ख. नभः स्पर्शं दीप्तम् – वायुसेना (I.A.F.)
ग. विद्यया अमृतम् अश्नुते (विद्ययामृतमश्नुते) – एन०सी०ई०आर०टी० (N.C.E.R.T)
घ. तेजस्वि नावधीतमस्तु – आई०आई०एम० बंगलूरू (I.I.M. Bengaluru)
ङ. योगः कर्मसु कौशलम् – आई०आई०टी० खडगपुर (I.I.T. Kharagpur)

❒❒

पाठाः 16–18 पुनरावृत्तिः

अभ्यास करने से पहले इन पाठों की पुनरावृत्ति कर लें। कठिनाई हो तो उत्तर पाठ्यपुस्तक में देखें।

1. प्रत्येक प्रश्न का वाचन ध्यान से करें। उत्तर लिखते समय रंगीन पद पर ध्यान दें। प्रश्न में प्रयुक्त पदों का लाभ उठाएँ। वर्तनी की ओर विशेष ध्यान दें।

उत्तर– क. प्रकृत्या अनेके पदार्थाः निःशुल्कं प्रदत्ता; तद् यथा जलं, वायुः आकाशः प्रकाशः इत्यादयः।

ख. वायुमण्डलं उद्योगानां वाहनानां च धूम्रेण प्रदूषितम्।

ग. जलप्लावः भूस्खलनम् अतिवृष्टिः अनावृष्टिः वा प्राकृतिकाः आपदः प्रतिदिनम् आगच्छन्ति।

घ. सङ्गम् (आसक्तिम्) त्यक्त्वा नरेण कर्म कर्त्तव्यम्।

ङ. संस्कृत-साहित्यं ज्ञान-विज्ञान-सम्पन्नम् सुविशालं च।

च. आर्यभट्टः प्रख्यातः गणितज्ञः, नक्षत्रज्ञः ज्योतिर्विज्ञः च आसीत्।

छ. 'सत्यमेव जयते' इति भारतशासनस्य ध्येय-वाक्यम् अस्ति।

प्रश्न तथा उत्तर दोनों का सहजरीति से वाचन करें।

उत्तर 2.

क.	श्रीकृष्णः	अर्जुनम्
ख.	छात्राध्यक्षः	छात्रान्
ग.	राजीवः/ छात्रः	सञ्जीवम्/ छात्रम्
घ.	सूर्यः	मानवम्

उत्तर 3. I.

क.	योगः	– अकारान्त पुल्लिंग शब्द, वाक्य का कर्त्ता–प्रथमा एकवचन में
ख.	कर्माणि	– कर्मन् शब्द, नपुंसकलिंग, द्वितीया बहुवचन, वाक्य का कर्मपद (पद में 'र्' होने के कारण 'न्' को 'ण्')।
ग.	छात्रान्	– 'वदति' का कर्मपद–द्वितीया बहुवचन।
घ.	संस्कृतम्	– 'आश्रिता' पद के योग में द्वितीया प्रयोग।

II. क. कार्यावरोधम् – पाठानुसार उचित विकल्प, पाठगत तथ्य के आधार पर।

ख. संयमेन – पाठानुसार उचित विकल्प।

ग. कर्म – पाठानुसार उचित (देखें श्लोकांश)।

घ. लीलावती – पाठानुसार उचित विकल्प।

4. प्रत्येक वाक्य का वाचन करें। कोष्ठक निर्देश पढ़ें और वाक्य पुनः लिखें।

I. निर्देशानुसार वचन बदल कर वाक्य लिखें। ध्यान रहे–कर्त्ता पद में परिवर्तन होने पर क्रियापद में भी रूपान्तर आएगा। और विशेष्य-पद में रूपान्तर होने पर विशेषण में भी।

उत्तर– क. यूयम् पापं न अवाप्स्यथ। ख. उपविशतु भवान्।

ग. ते पुरुषाः पापात् न त्रस्यन्ति। घ. तस्मै नराय नमः।

ङ. सूक्तयः सर्वेषां मनः हरन्ति।

II. क्रियापदों में निर्देशानुसार लकार परिवर्तन कर वाक्य लिखें।*

उत्तर– क. योगस्थः करोति कर्माणि।

ख. वयम् अपि उपविशेम।

ग. ते स्वपराक्रमेण सकलं राज्यं हरन्तु।

घ. अस्माकं बन्धुता कथं भविष्यति।

ङ. त्वं पाण्डवेभ्यः राज्यार्धं यच्छेः।⊛

उत्तर 5. क. अप्यस्ति – (इ → य्)

ख. कार्यावरोधम् – (अ + अ = आ)

ग. पुत्रोऽहम् – (अः → , अ → ऽ)

घ. स + उत्साहम् – (अ + उ = ओ)

ङ. अद्य + आरभ्य – (अ + आ = आ)

च. वसुधा + एव – (आ + ए = ऐ)

---

* पाँचों लकारों में धातु रूप की एक बार आवृत्ति कर लें।

⊛ दोनों ओर के वाक्यों का वाचन करें और नोट करें कि धातु रूप में वहाँ क्या रूपान्तर आया है।

6. **उदाहरण देखें और समझें**–दो वाक्यों को 'क्त्वा' प्रत्यय के प्रयोग द्वारा एक वाक्य में परिवर्तित किया गया है। जब वाक्य का कर्त्ता एक क्रिया करने के पश्चात् दूसरी क्रिया करता है, तो पहली क्रिया की धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगता है; यथा– 'गच्छति' में गम् धातु, उसमें 'क्त्वा' जोड़ने पर 'गत्वा' का प्रयोग हुआ है।

   ध्यान रहे–दोनों वाक्यों का कर्त्ता एक ही होना चाहिए। जैसे प्रस्तुत उदाहरण में। प्रत्येक वाक्य को ध्यान से पढ़ें, कोष्ठक में दिए प्रत्यय का प्रयोग करें और वाक्य पुनः लिखें।

उत्तर– क. पितामहः भोजनं **खादित्वा** भ्रमणाय गच्छति।

ख. ते भोजनं **खादितुम्** भोजनालयं गच्छन्ति।

(**नोट करें**– जिस क्रिया के प्रयोजन (Purpose) के लिए दूसरी क्रिया की जाती है, उस क्रिया (प्रयोजन) की धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे प्रस्तुत वाक्य में खाद् + तुमुन् = खादितुम्)

ग. छात्राः क्रिकेटं **क्रीडितुं** सज्जाः भवन्ति।

घ. अर्जुनः सङ्गं **त्यक्त्वा** युद्धं करोति।

ङ. छात्राध्यक्षः **प्रविश्य** छात्रान् सम्बोधयति। (**नोट**–उपसर्ग पूर्वक धातु में क्त्वा के स्थान पर ल्यप् का प्रयोग।)

इन सभी वाक्यों का वाचन करें।

7. **मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को पढ़ें। अर्थ समझें। तत्पश्चात् रिक्त स्थान छोड़कर संवाद का वाचन करें। आशय समझें। अब संवाद की एक-एक उक्ति पुनः पढ़ें और प्रसंग के अनुसार मञ्जूषा से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरें। उदाहरण देखें और संदर्भ समझें। माता और पुत्र बात कर रहे हैं, पुत्र उदास (खिन्नः) है। (वार्ता-बात)**

उत्तर– पुत्रः – चिन्तयामि (सोच रहा हूँ)–(कर्त्ता 'अहम्' लुप्त)–भविष्यन्ति (होंगे)–(अङ्काः (नम्बर)/कर्त्तापद के साथ उचित क्रियापद)

माता – स्वकर्त्तव्यम् (अपना कर्त्तव्य)–['कृतम्' (किया गया) के साथ उचित प्रयोग–दोनों पद नपुंसकलिंग]

पुत्रः – परिश्रमः (परिश्रम)–('कृतः' के साथ उचित–दोनों पद पुंल्लिग)

माता – चिन्ता–['परिणाम-विषये'–(परिणाम के विषय में) एवं 'वृथा' (व्यर्थ) के साथ उचित प्रयोग]

माता – उद्घाटय (खोलो)–['पृष्ठं' (पृष्ठ)–कर्म पद के योग में उचित क्रियापद]

माता – पठ (पढ़ो)–(कर्त्ता 'त्वम्' लुप्त, आदेश वाक्य में)

पुत्रः – मा, फलेषु–(श्लोक के दूसरे चरण का अंश। छात्र इससे परिचित होंगे–यह श्लोक पूर्वदत्त पाठ–'कर्मवीर:भव' में संकलित है।)

चित्रवर्णनम्

चित्र में नोट करें– कौन क्या कर रहा है अथवा क्या हो रहा है। अब मञ्जूषा में दिए शब्दों को पढ़ें। तत्पश्चात् प्रत्येक वाक्य का, रिक्त स्थान छोड़कर, वाचन करें। आशय समझें, और प्रसंगानुसार उचित पद चुनकर वाक्य पूरे करें। उदाहरण देखें। 'रेलस्थानकस्य' (रेलवे स्टेशन का) उचित प्रयोग; क्योंकि 'चित्रम्' से सम्बन्ध है।

चित्रवर्णन को सरल व रोचक बनाने के लिए अध्यापक/अध्यापिका चित्राधारित सरल प्रश्न संस्कृत में पूछें। उत्तर में मञ्जूषादत्त अथवा अन्य शब्दों का प्रयोग छात्र करें और सम्पूर्ण वाक्य में उत्तर दें।

कुछ प्रश्न–

1. एतत् कस्य चित्रम्? 2. किं यानम् अत्र आगच्छति?
3. किं सर्वे यानं प्रति गच्छन्ति? 4. किं बालाः अपि अत्र सन्ति?
5. ते किं कुर्वन्ति?
6. पुस्तक-आपणे/क्रीडनक-आपणे किं भवति? इत्यादि।

उत्तर– 1. सम्मर्दः (भीड़)– (*i*) 'जनानाम्' से सम्बन्ध।
(*ii*) क्रियापद 'अस्ति' का कर्त्ता–दोनों पद एकवचन

2. यात्रिणः (बहुवचन)–वाक्य का कर्त्ता; 'रेलयानम्'–'आरोहन्ति' क्रियापद का कर्मपद। (**ध्यान रहे–**आ + रुह धातु के योग में द्वितीया)

3. कोलाहलः–'श्रूयते' (सुनाई दे रहा है/देता है) के साथ इस संदर्भ में उचित (सार्वजनिक स्थान होने के कारण)

4. विक्रेता– (*i*) 'क्रीडकानाम्' (खिलौनों का) से सम्बन्ध।
(*ii*) 'अस्ति' क्रियापद का कर्त्ता–दोनों पद एकवचन

5. पुस्तकानि– (*i*) क्रीणन्ति* (खरीदते हैं)– क्रियापद के योग में उचित कर्मपद (द्वितीया विभक्ति में)
(*ii*) पठन्ति–(पढ़ते हैं) उचित क्रियापद–'समाचार-पत्राणि' (समाचार-पत्र) के योग में।

विशेष– रिक्त स्थान पूर्ति करते समय चित्र की ओर बीच-बीच में, ध्यान दें, जिससे वाक्यपूर्ति में कठिनाई/त्रुटि न हो। वाक्यपूर्ति के उपरान्त सहज रीति से वाचन करें।

'अवधेयम्' के अन्तर्गत दिए गए व्याकरण-बिन्दुओं से यद्यपि अब तक छात्र परिचित हो गए हैं, तथापि पुनरावृत्ति की दृष्टि से इन्हें यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ दिए गए प्रत्येक सिद्धान्त/नियम को ध्यान में रखते हुए उदाहरणों का वाचन करें, और याद रखें। विस्तार के लिए देखें–'परिशिष्टम्'।

मूल्यपरकप्रश्नाः

1. अत्र सत्यस्य महत्त्वं वर्णितम्।

2. हितं/हितकरं वचनं प्रायः मनोहारि न भवति। परं तत् (हितम्) वचनम् न अवमन्येत।

3. कर्त्तव्यपालनम् एव जीवनस्य उद्देश्यम् स्यात्।

4. भूमेः/पृथिव्याः सुरक्षा प्रत्येक-मानवस्य कर्त्तव्यम् अस्ति।

5. प्राकृतिक-संसाधनानि सर्वेषां प्राणिनां कृते सन्ति।

❐❐

---

* हिन्दी भाषा में 'क्रय' 'विक्रय' 'विक्रेता' आदि शब्दों से छात्र परिचित होंगे। इसी तरह जब कभी कोई नया शब्द सामने आए–चाहे संज्ञापद हो या क्रियापद– तब हिन्दी अथवा अपनी मातृ भाषा अथवा प्रादेशिक भाषा से उसका संभावित सम्बन्ध समझने का प्रयास करें। प्रसंगानुसार संदर्भ में अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होगी।